Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनज्ञान (मासिक)

ज्येष्ठ २०४१ जून १९८४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋचा (सुपुत्री पंडित भारतेन्द्र [illegible]) का शुभ
विवाह चि॰ राकेश (पुत्र श्री मूलचन्द भार्गव)
के साथ 22-1-1984 को आर्य समाज करोल बाग में सम्पन्न हुआ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो।

संस्थापक
स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:
सम्पादक : राकेशरानी

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग,
करौलबाग, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५६२६३६
५६४७४१
८०१२११

वार्षिक मूल्य : ३० रुपये
विदेश में : विमान से ४५ पौंड,
६५ डालर
समुद्री डाक से ४ पौंड, ६ डालर

आजीवन : ५०१ रुपए
विदेश में : १००१)
यह प्रति : तीन रुपये
वर्ष १७ : अंक २
ज्येष्ठ संवत् २०४१
जून १९८४

मैं और भगवान एक नौका पर

आ यद्रुहाव वरुणश्च नावं प्र यत् समुद्र-
मीरयाव मध्यम्।
अधि यदपां स्नुभिश्चराव प्र प्रेंख
ईंखयाव शुभे कम्॥ ऋग् ७।७५।३॥

अर्थ—(यत्) जब (वरुणः) सबका वरणीय और सबको बचाने वाला भगवान् (च) और मैं उपासक (नावं) एक नौका पर (आ रुहाव) चढ़ जाते हैं (यत्) जब उस नौका को (समुद्रं) समुद्र के (मध्यं) मध्य में (प्र-ईरयाव) छोड़ देते हैं, और तब (यत्) जो (अपां) समुद्र के जलों की (स्नुभिः) तरंगों से (अधिचराव) उन पर चढ़कर जो हम खेलते हैं, तब, (प्रेंखे) मैं खूब झूलता हूं (शुभे) संसार के भले के निमित्त (कम्) उसके सुख के लिए (प्रेंखयावहै) तब हम दोनों खूब झूलकर प्रयत्न करते हैं।

यह हमारा शरीर ही एक नौका है। नौका का शाब्दिक अर्थ है एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने वाली। नदी और समुद्र में चलने वाली नौका इसीलिए नौका है कि हमें एक किनारे से दूसरे किनारे पर ले जाती है। हमारा शरीर भी हमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है। इसलिए वह नौका ही है। नौका के द्वारा हम अनेक प्रकार की भोग्य वस्तुएं ढोकर लाते हैं। इस शरीर के द्वारा भी हम अपने आत्मा के लिए अनेक प्रकार के सुख-दुःख भोग ढोकर लाते हैं। धर्माधर्म के संस्कार भी हमारे आत्मा पर इस शरीर नौका के द्वारा ही ढोकर लादे जाते हैं। किसी भी

(शेष पृष्ठ ४ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

सम्पादकीय ३
समय की मांग : हिन्दू राष्ट्र ५
राजीव गांधी की बचकाना टिप्पणी ८
महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी अपने आपको मत भूलिए ९
रमेश जी की हत्या की निन्दा ११
पंडिता राकेशरानी : पचासवें वर्ष में प्रवेश पर श्रद्धा-सुमन —प्रो. धर्मवीर १३
श्री लालमन आर्य १५
समृद्धि का उपाय —सुधारक 'आशावादी' १७
हर्ष की मात्रा बढ़ाओ (धर्मोपदेश) —स्व० महात्मा नारायण स्वामी १८
हिन्दी : हमारे राष्ट्र की भाषा —डा० वेदप्रकाश २९
उद्‌बोधन —स्व० डॉ० भीमराव जी अम्बेडकर ३३
संविधान का २५वां अनुच्छेद : राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में —डॉ० प्रशान्त वेदालंकार ३५
सिख पन्थ की स्थापना कब हुई ? —सदाजीवतलाल चन्दूलाल ३९
धर्मनिरपेक्षता के नाम पर पृथक्ता —हरमोहनलाल ४४
हुतात्मा प्रद्योत : क्रान्ति की जोत —राकेशरानी ५५
सारा भारतवर्ष तुम्हारा —डॉ० राजेन्द्र वर्मा ५८
गुरुगोविन्द सिंह विरचित रामावतार —डॉ० महीपसिंह ६१
धर्मप्रचार और हिन्दू रक्षा अभियान यज्ञ में आहुतियां ६५
इराक-ईरान युद्ध बनाम मजहबी एकता—अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार ७१
वीर सावरकर का विचार-दर्शन —संकलनकर्ता : वेदप्रकाश अग्रवाल ७४
अस्तित्व का संकट —प्रो० बलराज मधोक ७७
संस्कृत में रुचि पैदा की जाए —स्व० रमेशचन्द्र ८१
हम स्वस्थ कैसे रहें ? —वैद्य रामरतन पोपली ८३
हिन्दू समाज को नष्ट करने की योजना —आचार्य मित्रजीवन ८७
आप ही के पत्र ९५
आदर्श मित्रता (बालजगत्) —प्रेमचन्द्र शास्त्री १००
हिन्दू राज्य कैसा होगा ? : —रामबली शर्मा 'वेदार्थी' १०४
भविष्यद्रष्टा वीर सावरकर शिवकुमार गोयल १०६
सावधान ! मुस्लिम मिशनरी धावा बोलने वाले हैं ! विनोदचन्द्र पांडेय ११०
हत्यारों का इतिहास (तृतीय अध्याय) ११३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

असिधारा व्रत के व्रती स्वर्गीय रमेशचन्द्रजी

हिन्द समाचार पत्र समूह के मुख्य सम्पादक श्री रमेशचन्द्र जी की हत्या हो गई। उनके नाम के आगे स्वर्गीय शब्द लिखते हुए लेखनी कांपती है। स्वधर्म और स्वराष्ट्र की सुरक्षा, सुदृढ़ता एवं अखंडता के लिए पूज्य लाला जगत्नारायण ने शहादत दी थी। उनके बलिदानी बेटे ने भी उसी तरह जामे शहादत का पान किया है। भारत माता को अपने जिन सुपुत्रों पर गर्व हो सकता है, जो उसके मान-सम्मान के लिए अग्निपथ के पथिक बने हैं, जिन्होंने अपने लहू की लाली से बलिदानी अध्याय लिखे हैं, सिंह सपूतों की पंक्ति में ऐसा एक और नर-पुंगव सम्मिलित हो गया है।

सत्य और न्याय का पृष्ठ पोषण करने वाला पत्रकार आज के तनाव और संकीर्णता से परिपूर्ण वायुमण्डल में असिधारा व्रत का ही पालन करता है। आज सत्य का पक्षधर होना भी आपदा को निमन्त्रण देना बन गया है। किन्तु जिन्होंने देव दयानन्द के अनुकरणीय जीवन से प्रेरणा ली है, वे आपदाओं को ही कंठहार मानते हैं। सिद्धान्तों के प्रति अडिग आस्था ही उनके जीवन का अनुपम शृंगार है। वे अंगारों भरी राह पर चलते हुए आपदाओं का मुंह मोड़कर और संकल्प संजोकर कर्तव्य मार्ग पर बढ़ते हैं। पूज्य पिता लाला जगत्नारायण जी के बलिदान के पौने तीन वर्ष बाद उनके वरेण्य सुपुत्र रमेश जी ने भी राष्ट्ररक्षार्थ आत्माहुति दी है।

उनका बलिदान जहां कर्तव्य की वेदी पर शीश चढ़ाने वाले क्रान्तिकारियों के व्रत के परिपालन की गौरवमयी गाथा है, वहीं शासन की अकर्मण्यता का भी एक उदाहरण है। पंजाब की पावन धरती पर आतंकवादी हिंसा के नग्न नृत्य के लिए धर्मस्थानों को हत्यारों की शरणस्थलियों में परिवर्तित कर दिए जाने पर भी जो सत्ता वोटों का गणित शास्त्र ही अपना ईमान-धर्म बना बैठे, उसे कुशासन की संज्ञा देना भी शायद सर्वांश में सही नहीं है। आदरणीय भाई रमेश जी की नश्वर काया वीरत्व का प्रतीक बनकर आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक प्रेरक अध्याय लिख कर गई है। वे सशरीर तो अब हमारे मध्य नहीं रहे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किन्तु जिस सैद्धान्तिक निष्ठा के लिए वे जिए और जिसके लिए उन्होंने अपने प्राण समर्पित किए, वह युवा पीढ़ी के लिए अजस्र प्रेरणा की गाथा है।

रमेश जी का बलिदान युवा पीढ़ी का आह्वान कर रहा है कि वह राष्ट्र विरोधी तत्त्वों के अपावन इरादों को धूलि धूसरित करने के लिए कर्तव्य पथ पर आरूढ़ होकर विघटनवादी तत्त्वों का दमन और विध्वंसक प्रवृत्तियों का शमन करने के लिए संकल्पबद्ध हो। निर्भीकता से अपने कर्तव्यपालन का व्रत निभाना ही उस अमर शहीद के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। उनका प्रेरक जीवन हमें सत्य कहने और अन्याय न सहने की प्रेरणा प्रदान कर रहा है। हम संकल्प लें सत्य के मार्ग पर चलने का और सत्य की रक्षार्थ अपनी प्राण वर्तिकाएं जलाने का। यही समय की पुकार है।

जिनकी स्मृति ही शेष है

प० रामचन्द्र आर्य मुसाफिर

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं० रामचन्द्र जी आर्य मुसाफिर का ८६ वर्ष की आयु में एक संक्षिप्त बीमारी के बाद स्वर्गवास हो गया।

आपने आर्य मुसाफिर विद्यालय आगरा से आर्य सिद्धान्तों की शिक्षा प्राप्त की और समाज सुधार के क्षेत्र में आ गए। आपने अपने जन्मस्थान बिजनौर को अपना प्रारम्भिक कार्यक्षेत्र बनाया। ईसाइयों और मुसलमानों के धर्म-परिवर्तन के कार्य को चुनौती दी। अछूतों को समान अधिकार दिलाए। इसके लिए सवर्णों के साथ निरन्तर संघर्ष किया।

फिर आप अजमेर आ गए। यहां आपने डी. ए.-वी. स्कूल में अध्यापन के साथ-साथ आर्यसमाज का प्रचार कार्य जारी रखा। यज्ञ में आपकी अटूट आस्था थी।

आप दयानन्द संस्थान एवं हिन्दू रक्षा समिति के प्रशंसक एवं सहयोगी थे। 'जन-ज्ञान' में आपके विद्वत्तापूर्ण लेख समय-समय पर प्रकाशित होते रहते थे। संस्थान परिवार की ओर से उनकी आत्मा हार्दिक श्रद्धांजलि।

(पृष्ठ १ का शेष)

दृष्टि से देखें हमारा शरीर हमारे लिए नौका है। इन नौका में चिरंतन यात्री हमारा आत्मा चढ़ा हुआ है। जब भगवान् का साक्षात्कार होकर हमारे हृदय में उनके दर्शन हो जाते हैं तो मानो भगवान् भी हमारी नौका पर चढ़ जाते हैं। यह शरीर नौका हमें इसलिए मिली है कि हम इसकी सहायता से संसार समुद्र को तर जाएं और मोक्ष-सुख के भागी बनें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समय की मांग : हिन्दू राष्ट्र

पंजाब जल रहा है। आये दिन हत्याओं और लूटमार का सिलसिला अविराम गति से चल रहा है। छत्रपति शिवाजी जयन्ती के उपलक्ष्य में निकाले जाने वाले जलूसों पर हमलों की घटनाएं भी अनजानी नहीं। सिखों का एक वर्ग खुद को हिन्दुत्व की धारा से अलग करने की बोली बोल रहा है। अल्पसंख्यकों के अधिकारों के नाम पर राष्ट्र में साम्प्रदायिकता का विष घोलने वाले तत्त्व भी पूरे जोर-शोर से मैदान में उतर चुके हैं।

विचित्र बात यह है कि राष्ट्र की मुख्य धारा से कटने के हर प्रयास पर देश के राजनैतिक दल मौन ही नहीं हैं, अपितु उन्हें बढ़ावा देने में अपने राजनैतिक कौशल की सफलता मान रहे हैं। अल्पसंख्यकों के वोटों का लालच "हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन रग-रग हिन्दू मेरा परिचय" की भाषा बोलने वालों को भी अपनी नीति छोड़ने को प्रेरित कर रहा है। यों भी कहा जा सकता है कि स्वयं को अटल बताने वाले भी सिद्धान्तों पर अटल नहीं रहे।

निजी वार्तालाप में देश की वर्तमान समस्याओं के उन्मूलन की रामबाण औषधि देश के हिन्दू राष्ट्र और हिन्दू गणराज्य घोषित करना ही मानने वाले नेता भी राजनैतिक मंच पर "हिन्दू के नाम पर राजनीति" की बात कहने वालों की जबान पर प्रतिबन्ध लगाने की बात करते हैं।

उर्दू को विभाजन की भाषा बताने वालों पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगाने वाले 'मनस्वी' भी अपने देश में कम नहीं हैं। वे भारत के प्रथम अंतरिक्ष-यात्री राकेश शर्मा द्वारा अंतरिक्षयान से भारत के लिए किये गये इस उद्घोष को भी कि "सारे जहां से अच्छा" बड़े जोश से उर्दू की देन बता रहे हैं। हालांकि इस तराने का श्रेय वे इकबाल की जिस नज्म को दे रहे हैं, उसी इकबाल की ये पंक्तियां कि "मुस्लिम हैं हम वतन है सारा जहां हमारा" पाकिस्तान की स्थापना का मूल कही जा सकती हैं, जहां तक देश के कुछ प्रमुख समाचारपत्रों का सम्बन्ध है, पिछले कुछ मास में तथाकथित सिख दृष्टिकोण पर बहुत कुछ लिखा देखा है। मुसलमानों के रोजगार मिलने में आने वाली कठिनाइयां, साम्प्रदायिक दंगों के दौरान होने वाली उनकी हानि और उनके धर्मस्थानों के मामले भी अखबारों में प्रायः प्रमुख स्थान पाते हैं। लेकिन कोई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी हिन्दू जनता के मानस की पीड़ा को जानने और अभिव्यक्त करने का प्रयत्न नहीं करता। हिन्दुओं की चर्चा तभी होती है, जब देश के दूसरे सम्प्रदायों के कुछ तथाकथित नेता अपनी हर आपदा के लिए उन्हें दोषी करार देते हैं। जिस सिख समुदाय को हिन्दू अपना अविभाज्य अंग मानता है, जिसका जीवन-मरण हिन्दू समाज के साथ साझा है, जिसके पर्व-त्योहार सांझे हैं, जिसका इतिहास एक है, राम-कृष्ण-अर्जुन-भीम तथा दस सिख गुरुओं के प्रतिनिष्ठा सांझी है, परमात्मा का ओंकार नाम ही सांझा नहीं, अपितु जिन्होंने पाकिस्तान की स्थापना के समय विरोधियों के आघात भी मिलकर झेले हैं, जिनके रक्त की धारा इकट्ठी बही है उन्हीं सिखों के नेता जब अलगाव की बोली बोलते हैं तो हिन्दू को कैसी मर्मान्तिक वेदना होती है, इस पर विचार करने का भी आज देश के मनीषियों के पास समय नहीं है। आज वह समय स्मरण आता है, जब सन् १९४६ में पाकिस्तान की स्थापना से पूर्व हुए दंगों में अकाली नेता मास्टर तारासिंह और कांग्रेसी नेता श्री भीमसेन सच्चर ने लाहौर में सांझा मोर्चा बनाया था।

पंजाब के घटनाचक्र के अलावा यह बात भी प्रायः उछलती रहती है कि अल्पसंख्यकों से न्याय नहीं हो पा रहा और यह अनुभव कराया जाता है कि बहुसंख्यक समाज ही उनकी इस हालत के लिए जिम्मेदार है। इस प्रकार के निराधारआरोपों पर भी सहनशील हिन्दू समाज प्रतिक्रिया को निरखने की फुर्सत कभी किसी को नहीं हुई। प्रत्येक बुराई और प्रत्येक समस्या के लिए हिन्दुओं को दोषी ठहराना आज अधिकतर नेताओं की दृष्टि में धर्म-निरपेक्षता का पर्याय बन गया है। ये नेता इस तथ्य को भी मानने को तैयार नहीं कि जब मजहबी आधार पर भारत का विभाजन हुआ, जिस भारत को माता कहकर राष्ट्र भक्तों ने पूजा था, जिसके अखण्ड रूप की आराधना में ऋषि बंकिम ने वन्देमातरम्' राष्ट्रीय गीत लिखा था, जिसकी एकता का सपना अपने नेत्रों में सजाये अमर हुतात्मा मदनलाल ढींगरा, सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव और ऊधमसिंह ने फांसी का फंदा गले में लटकाया था जिसकी स्वतन्त्रता का आह्वान वीर सावरकर और भाई परमानन्द ने अण्डमान के कारागार में गुंजाया था, जिसकी मुक्ति के लिए रासबिहारी वसु और देश के गौरवसु भाषचन्द्र वसु ने आजाद हिन्द फौज को संगठित किया था, वही अपने ही नेताओं के साम्प्रदायिकता के पोषकों के सामने समर्पण के कारण विभाजित हो गई थी। उस समय जब पाकिस्तान विशुद्ध इस्लामी राज्य बना तो भी हिन्दू जनता ने इस शेष देश के अर्थात् खंडित भारत को भी धर्मनिरपेक्षता भारत की छवि देने की अपने नेताओं के निश्चय को "मौन स्वीकृति लक्षणम्" की ही रीति निभाई थी। हिंदू समाज ने मुसलमानों का अलग होना लैंड (पाकिस्तान) बन जाने के बाद भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कभी भारत में रहने वाले मुसलमानों के प्रति घृणा की भावनाओं को अपने मन स्थान नहीं दिया उनके धर्म स्थान, उनकी शिक्षा संस्थाएं उनके व्यक्तिगत कानून सभी कुछ अक्षुण्ण रहे। यह हिन्दुओं की उदारता का ही परिणाम है। किन्तु विडम्बना यह है कि भारत के मुस्लिम बहुल राज्य कश्मीर में आज पाकिस्तान समर्थक तत्त्वों की सरगर्मियां जारी हैं। वहां आज भी पाकिस्तान का जय-जयकार करने वालों की कमी नहीं। ऐसे तत्त्वों की गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए जब संविधान की धारा ३७० की समाप्ति की आवाज उठाई जाती है, तो स्वयं को धर्म-निरपेक्षता का ध्वजवाहक बताने वालों को इसमें भी संकीर्णता की गंध आती है।

हिन्दू विवाह अधिनियम, सम्पत्ति अधिनियम आदि बनाने वाले शासन के कर्णधार भारतीय संविधान में निर्देशित भारतीय नागरिक संहिता बनाने को तैयार नहीं हैं। उन्हें अल्पसंख्यक देवियों की दयनीय हालत पर दया नहीं आती। जब समान नागरिक संहिता की मांग की जाती है तो उसमें भी धर्म-निरपेक्षता का नारा लगाने वालों को साम्प्रदायिकता की गंध आती है।

पुरातत्त्व विभाग द्वारा संरक्षित पुराने धर्मस्थानों में मुस्लिम बन्धुओं को नमाज अदा करने की सुविधा देना जहां धर्म-निरपेक्षता है, वहीं प्राचीन हिन्दू धर्म स्थानों में ऐसी सुविधा देने की मांग करना साम्प्रदायिकता मान लिया जाता है। अल्पसंख्यक वर्ग के शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ेपन के लिए भी नजला हिन्दुओं पर गिराया जाता है। नौकरियों में साम्प्रदायिक आधार पर आरक्षण की मांग करने वालों को गले लगाया जाता है, लेकिन मजहबी आधार पर सरकारी सेवाओं में आरक्षण समाप्ति की मांग करने वालों के साम्प्रदायिक बताया जाता है। कैसी विचित्र स्थिति है कि हिन्दुस्थान में हिन्दू मान बिन्दुओं की अवहेलना करने वालों पर उंगली उठाना अपराध समझा जाता है, किन्तु संविधान को जलाने वालों पर से (सदाशयता प्रदर्शित करने के नाम पर) अभियोग वापस लेने की बात होती है। भारत की गरिमा, अखंडता और सुदृढ़ता की विशुद्ध भावना से प्रेरित होकर संदिग्ध तत्त्वों की खोज-खबर लिए जाने के आह्वान को अपराध माना जाता है।

क्या यह समय की मांग नहीं कि अपने घर में संकटग्रस्त होने से पहले ही हिन्दू समाज जागरूक होकर अपनी मातृभूमि आर्यावर्त (हिन्दुस्थान) की रक्षा के लिए हिन्दू संगठन को गतिमान् करे। हमारे विचार में हिन्दू समाज के समक्ष प्रस्तुत आसन्न संकटों का एक ही निदान है। समाज की कुरीतियों तथा कुप्रथाओं का निवारण कर सबल हिन्दू राष्ट्र का संगठन शांति के आंदोलन को गतिमान कर सकेगा और राजनीति का हिन्दूकरण। इस समय देशभक्त जनता को एक ही नारा गुंजाना चाहिए— हिन्दू राष्ट्र बनायेंगे।

हिन्दू राष्ट्र व सशक्त भारत ही विश्व। ▭

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजीव गांधी की बचकाना टिप्पणी

अखिल भारतीय कांग्रेस (इं.) महासमिति के महामन्त्री और लोकसभा के सदस्य श्री राजीव गांधी ने कहा है कि "प्रधानमन्त्रीं श्रीमती इन्दिरा गांधी शीघ्र ही पंजाब की समस्या को ऐसे ढंग से हल करेंगी कि लोग मान जायेंगे कि वे इस बारे में हम सबसे अधिक जानती हैं।" इस टिप्पणी को प्रकाशित करते हुए दो सप्ताह से अधिक बीत चुके हैं, लेकिन इस बीच समस्या का न केवल हल नहीं हुआ, अपितु वह और भी जटिल हो गई है। यहां तक कि स्वयं इन्दिरा जी ने माना है कि उग्रवादियों ने जिस-जिसकी हत्या करनी चाही, कर डाली। अंग-रक्षकों को ही उनसे पहले गोली का निशाना बनाया गया, जिनकी रक्षा के लिए वे तैनात किए गए थे। रमेशचन्द्र जी की हत्या ने तो शब्दश: सारे देश को हिला दिया है। ऐसी स्थिति में राजीव गांधी की टिप्पणी का क्या अर्थ है? आखिर जनता कब तक प्रतीक्षा करती रहे? पंजाब पुलिस के इन्स्पैक्टर जनरल प्रीतमसिंह भिंडर हैं, जिनकी पत्नी को लोकसभा का सदस्य निर्वाचित करवाने के लिए स्वयं सन्त जरनैलसिंह भिंडरांवाला उनके पक्ष में प्रचार करने गए थे। इन्हीं भिंडरांवाला को राजीव गांधी ने सन्त और धार्मिक नेता होने का प्रमाणपत्र दिया है। कुछ लोग जो भिंडरांवाला से मिलकर मांफी मांग लेते हैं, उनके नाम भिंडरांवाला की 'हिट लिस्ट' में से निकाल दिया जाता है। यह भी बताया जाता है कि आज तक भिंडरांवाला अमृतसर जिला कांग्रेस (इं.) कमेटी की कार्यसमिति के सदस्य हैं। इस सबके बावजूद राजीव गांधी ऐसी बात कहें, तो इसे बचकाना टिप्पणी न कहा जाए, तो और क्या कहा जाए? ताजा समाचार यह है कि उग्रवादी सी. आर. पी. एफ. चौकियों को अपने हमलों का विशेष रूप से निशाना बना रहे हैं। अकाली दल ने आन्दोलन को और तेज करने की धमकी दी है। सरकार झुकती जा रही है। मोगा में गुरुद्वारों पर से घेरा उठा लिया गया, लेकिन इस समाचार को इस ढंग से गलत तौर पर पेश किया गया, मानो सरकार वहां उग्रवादियों को पकड़ने में सफल रही है। पंजाब के प्राय: सभी बड़े शहरों में कर्फ्यू लागू है। व्यापार ठप्प है। सरकारी दावे झूठे हैं। प्रतिदिन हत्यायें हो रही हैं। जनता को आशा थी कि कुछ दिन बाद अकाली दल का 'धर्म युद्ध' ठंडा पड़ जाएग, लेकिन सन्त लौंगवाल इसे लम्बे समय तक चालू रखने की बात कह रहे हैं। उनका कहना है कि गुरुद्वारों को महन्तों के चंगुल से छुड़ाने का आन्दोलन पांच वर्ष तक चला था। (मतलब यह कि यह 'धर्मयुद्ध' भी लम्बे समय तक चल सकता है। राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री हत्या पर शोक समवेदना का सन्देश भेज देते हैं—शांति और एकता की अपील कर देते हैं, लेकिन स्थिति न केवल सुधर नहीं रही, अपितु विषम से विषमतर होती जा रही है। ▭

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने आपको मत भूलिए

"स्व" को भूलकर हम भी भटके, उद्देश्य और लक्ष्य भी गया और रह गया केवल एक छोटे-से भूखंड में हमारा नाम। आश्चर्य यह कि हम अपने नाम को घोषित करने में भी संकोच करने लगे।

१९वीं शताब्दी में नवयुग प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने हमें फिर से जगाकर अपने प्राचीन गौरव से परिचित कराया। हमने जाना कि हम संसार में सबसे महान् हैं क्योंकि सत्य-ज्ञान-शांति-प्रेम और विश्वबंधुत्व के उदात्त स्वर हमारी शक्ति के स्रोत हैं। हम महान् हैं इसलिए कि हमने कभी किसी को सताने के लिए शक्ति का प्रयोग नहीं किया। हम महान् हैं इसलिए कि शांति हमारा लक्ष्य और धर्म है।

शांति हमारा धर्म है, इसलिए अशान्ति को समाप्त करना हमारा कर्तव्य है। हमारा काम सभी को शान्तिवादी बनाना है। तभी तो हमारी घोषणा है कि सबको "आर्य" बनाओ। आर्य का अर्थ है प्रभु का पुत्र अर्थात् ईश्वरीय गुणों से युक्त—परमात्मा के बताए शान्ति मार्ग पर चलने वाला। आर्य शब्द जातिवाचक नहीं, गुणवाचक है। जो अच्छा है—शान्तिकारक है, वह "आर्य" है। आर्य जहां श्रेष्ठ है वहां वह आसुरी वृत्तियों और शक्तियों को समाप्त करने में भी सक्षम है। जो सक्षम नहीं वह "आर्य" नहीं। आर्य शब्द केवल आर्यसमाज का नहीं। आर्य-समाज एक संगठन था, मत नहीं। वह प्राचीन सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रसारक था, किन्तु दुर्भाग्य से आज वह एक मत बनकर रह गया है। एक छोटा-सा सम्प्रदाय, जो नाम ऋषि दयानन्द का लेता है किन्तु कर्म उनकी मान्यताओं के विपरीत करता है।

आज की आवश्यकता है कि हम नाम के विवाद से बचें। जो अपने को हिन्दू कहता है, जो राम-कृष्ण-वेद-शास्त्र-गंगा-गायत्री-गौ और भारतीय परम्पराओं का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भक्त है, वह एक है। उसे जीना है तो एक बनना होगा। ये छोटे-छोटे विवाद तब तय कर लेंगे, जब हम बाहरी संकट से मुक्त होंगे। आज तो हम समर भूमि में खड़े हैं। शत्रुओं की सेनाओं ने हमें चारों दिशाओं से घेर लिया है। मुसलमान-ईसाई-कम्युनिस्ट हमें मिटाना चाहते हैं। पश्चिम की भोगवादी जहरीली विचार-धारा ने हमारी जड़ें हिला दी हैं। मम्मी-डैडी-हाय-पैंट-टाई और खाओ, पियो, मौज करो की भावना ने हमारे पवित्र आंगन में बारूद बिखेर दिया है।

झूठ आज जीत रहा है। सत्य भूखों मर रहा है। त्याग ढोंग बन गया है और सेवा मेवा खाने का साधन। चारों ओर देखता हूं तो एक ऐसी आग लगी पाता हूं जिसमें सब कुछ जल रहा दीखता है। जब हमारा अस्तित्व ही दांव पर हो तब क्या हमें छोटी-छोटी बातों में उलझना शोभा देता है ?

हमारे शत्रु हैं—समाजवाद, सैक्युलरवाद (धर्मनिरपेक्षता), संप्रदायवाद, भोगवाद और अहंवाद।

इन पांचों से लड़ने के लिए हिन्दुओं को एक झंडे के नीचे एकत्र होना ही होगा। मरने की इच्छा नहीं है तो युद्ध स्तर पर संघर्ष करना ही होगा। यह संघर्ष घर-बाहर सर्वत्र अवश्यम्भावी है।

मैं चाहता हूं कि हिन्दू सोचे और जागे! आज नहीं तो कल मृत्यु तो निश्चित है। फिर क्यों हम भावी पीढ़ी के लिए कांटे बोने का प्रयास सफल होने दें ?

"वेदोद्धारिणी" पत्रिका का विमोचन

(हमारे कार्यालय संवाददाता से)

नई दिल्ली। ६ मई को आर्यसमाज मन्दिर मार्ग में पंडित अभिविनयभारथी द्वारा सम्पादित नई पत्रिका वेदोद्धारिणी का विमोचन संसद् सदस्य डॉक्टर कर्णसिंह के हाथों सम्पन्न हुआ। शुरू से आखिर तक कार्यक्रम उल्लाहपूर्ण वातावरण में चला। भाषण संक्षिप्त थे, किन्तु अमिट प्रभाव छोड़ने वाले। पत्रिका की सफलता के लिए शुभ कामना प्रकट करने वाले विद्वानों और संन्यासियों की पंक्ति लगी हुई थी। इनमें परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द, स्वामी सत्यप्रकाश, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, स्वामी जगदीश्वरानन्द, डॉ० गोस्वामी गिरधारीलाल, दैनिक मिलाप के जनरल मैनेजर श्री पूनम सूरी, दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष और जन-ज्ञान की सम्पादक पंडिता राकेशरानी, आर्य जगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार और संसद् सदस्य आचार्य भगवान् देव के नाम उल्लेखनीय हैं। अपने संक्षिप्त भाषण में राकेशरानी जी ने कहा कि "मैं अपने भाई के इस नवीन उद्योग की सफलता चाहती हूं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रमेश जी की हत्या की निन्दा

नई दिल्ली, १४ मई। कल यहां अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की बैठक में हिन्द समाचार ग्रुप आॅफ न्युजपेपर्स के प्रधान सम्पादक और अमर शहीद लाला जगत्नारायण के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री रमेशचन्द्र जी की नृशंस और अमानवीय हत्या पर गहरा दुःख और क्षोभ प्रकट किया गया।

रमेश जी को श्रद्धांजलि भेंट करते हुए दयानन्द संस्थान की अध्यक्षा पंडिता राकेशरानी जी ने कहा कि रमेश जी पंजाब के पीड़ित हिन्दुओं के प्रवक्ता और आश्रय थे। उनकी हत्या समस्त हिन्दू समाज के लिए चुनौती है।

राकेशरानी जी ने कहा कि पंजाब में शासन नाम की कोई चीज रह ही नहीं गई। रक्षक ही भक्षक बने बैठे हैं। सुरक्षा गार्डों तक की हत्या कर दी जाती है। राकेशरानी जी ने पूछा कि सरकार की आंखें खोलने के लिए अभी और कितने बलिदानों की आवश्यकता पड़ेगी ?

अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति के प्रधानमंत्री प्रो० धर्मवीर ने कहा कि जब तक हिन्दू समाज सशक्त और संगठित नहीं होगा, हत्याओं का सिलसिला बन्द नहीं होगा।

समिति की ओर से शोक समवेदना का एक पत्र भी रमेश जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री अश्विनीकुमार को भेजा गया।

जयप्रकाशजी आर्य के सुपुत्र का निधन

आर्यसमाज गांधीनगर के भूतपूर्व प्रधान श्री जयप्रकाश आर्य के सुपुत्र स्व० हरिप्रकाश आर्य ने सन् १९७५ में १७०० रुपये की पूंजी से आर्य टी० वी० केबिनेट वर्क्स प्रारम्भ किया। आज उनकी कार्य-कुशलता तथा सूझ-बूझ से उसमें २०० कर्मचारी कार्यरत हैं। वे सामाजिक कार्यों में भी सदैव आर्यसमाज के सहयोगी रहे। ऐसा होनहार नवयुवक गत १५ अप्रैल को प्रातः ९ बजे दो अबोध पुत्रों, युवा पत्नी, माता-पिता एवं समस्त परिवार को बिलखता छोड़कर प्रभु को प्यारा हो गया।

स्व. हरिप्रकाश आर्य (२८ वर्ष)

जन-ज्ञान तथा सभी आर्य-हिन्दू बन्धुओं की ओर से परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके शोकसन्तप्त परिवार को यह दारुण दुःख सहने की शक्ति धैर्य प्रदान करे। ▭

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरी मां : मेरी मार्ग दर्शक

—कुमारी दिव्या

मेरी मां पंडिता राकेश रानी एक उभरता हुआ नाम है, जो देश द्रोहियों का दुश्मन और वीरों का मार्गदर्शक है, होगा गर्व था। हमेशा संकटों से जूझना ही उनका जीवन है। कदापि संकटों से हार न मानना तो शायमें उनका लक्ष्य ही है। जो कहा या दूसरों को उपदेश दिया, पहले स्वयं उस पर दे चुकी है। वह इनाम है ३० मुकदमे। भारत के इतिहास में आज तक किसी भी मुलजिम इतने मुकद्दमे नहीं चले, अब भारत के इतिहास के पृष्टों पर स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाएगा कि एक महिला को असहाय समझ ३० मुकद्दमे भेंट किए गये।

शायद भारत सरकार भूल चुकी है कि दु जिसे असहाय समझ रहें उनके साथ दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त है। वह है ईश्वर। ईश्वर ने सदैव धर्म का साथ दिया और देगा भी।

स्वयं मेरी मां के शब्दों में—"यदि मेरे ऊपर १०० मुकद्दमे भी हो जाएँ तो भी मैं नही झुकूंगी चाहे मुझे कितने भी संकटों में से गुजरना पड़े।

जनता की प्रबल मांग पर

दयानन्द संस्थान के दो नये प्रकाशन

पिछले वर्ष महात्मा वेदभिक्षु जी की प्रेरणा से—अंग्रेजी की दो पुस्तकें "दि हिस्ट्री आफ असैसिन्स" और "इन-साइड दि कांग्रेस"—प्रकाशित की गई थीं। अब "हत्यारों का इतिहास" और 'कांग्रेस के अन्दर" नाम से इन दोनों पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किए जा रहे हैं। "हत्यारों का इतिहास" पुस्तक का धारावाहिक प्रकाशन तो "जनज्ञान" में हो ही रहा है, 'कांग्रेस के अन्दर" पुस्तक का धारावाहिक प्रकाशन से भी अगले महिने से "जनज्ञान" के पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया जाएगा।

इन दोनों पुस्तकों का सम्मिलित मूल्य रु० ८०) होगा, लेकिन ३० जून १९८४ तक पेशगी मूल्य भेजने वालों को यह दोनों पुस्तकें केवल रु० ५०) में मिलेंगी।

जैसा आप जानते हैं, "हत्यारों का इतिहास" मुसलमानों की आपसी मार-काट का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है। 'कांग्रेस के अन्दर" पुस्तक में अमर शहीद स्व० श्रद्धानन्दजी की लेखनी से कांग्रेस की अन्दरूरी बातें प्रकाश में लाई हैं। कांग्रेस के शताब्दी वर्ष में कांग्रेस सम्बन्धी यह दस्तावेज सामयिक, रोचक व उपयोगी सिद्ध होगी।

अध्यक्ष

दयानन्द संस्थान, १५९७, हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली—५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंडिता राकेशरानी : जन्मदिवस पर श्रद्धा-सुमन

—प्रो० धर्मवीर

दयानन्द संस्थान एक रथ है, जो अपने धार्मिक विचारों के प्रचार एवं राष्ट्रवाद की साधना में लीन बड़ी तीव्रगति से भारत और भारत से बाहर अपने उद्देश्य के विस्तार में संलग्न था। इसकी गतिशीलता, अनोखेपन तथा तीव्रता के जोभी सम्पर्क में आया इसने उसको प्रभावित किया--अनुकूलता से आकर्षित हुआ तो प्रतिकूल समझ कर त्रस्त। सहमति-असहमति को छोड़ दें क्योंकि यह तो गतिशीलता की एक सहज प्रतिक्रिया है, लेकिन इसके लक्ष्यों से कोई असहमत न हो सका। जिन बातों का कहना-सुनना आज के फैशन से बाहर समझा जाता था, उन्हीं बातों के लिए खड़े होना, लड़ना और उन्हें प्राप्त करना सिखलाया था इन्हीं प्रयासों ने। जब यह माना जाता था कि धार्मिक साहित्य पढ़ना-पढ़ाना आज के समाज की परम्परा नहीं, प्रकाशक इसके प्रकाशन से इसलिए दूर भागते जा रहे थे कि इसका कोई लेने वाला नहीं मिलेगा, वहां संस्थानने प्रकाशन में नए कीर्तिमान स्थापित किए और समाज की आध्यात्मिक भूख को जगाया तथा उसे पूर्ण करने में योगदान दिया। आज आर्य साहित्य के प्रकाशन और प्रसार में एक जाना-पहचाना नाम है—दयानन्द संस्थान।

पता नहीं कब, कैसे और क्यों कुछ लोगों ने धर्म को राष्ट्रीय समस्याओं से अलग करने की चेष्टा की, क्योंकि धार्मिकता भी उसी समाज के लिए है जिसकी राजनीतिक समस्याएं हैं। जब तक दोनों पक्ष समन्वित नहीं किए जा सकते किसी की प्रगति संभव नहीं होगी। भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारे समाज में एक सुषुप्ति काल आ गया, जब राष्ट्रीयता से जुड़े प्रश्नों पर विचार की परम्परा ही छूट गई थी। लगता था जैसे सभी समस्याओं का अन्त हो गया है, परन्तु जागरूक लोग इस प्रश्न का मन्थन कर रहे थे। भारत के लिए यहां के ईसाई और मुसल-किस प्रकार खतरा साबित हो सकते हैं, इस बात को आर्यसमाज ने समझाने की चेष्टा की परन्तु उसके भी प्रयास सीमित थे; उतने व्यापक न थे। ऐसे समय में महात्मा वेदभिक्षु: जी ने आर्यसमाज को गतिशील बनाने और देश को जागृत करने का बीड़ा उठाया। एकाकी लक्ष्य के लिए चल पड़े—समाज को जगाने के लिए। समाज के कर्णधारों को चेताया, संगठनों को स्थिति से अवगत कराया, सरकार को समझाने का प्रयास किया, जागरूक सज्जनों की बैठकें बुलायीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समस्या ज्वलन्त थी, तत्काल उपाय करने की आवश्यकता थी। कोई चलने को तैयार नहीं था। परन्तु चलने वाले को कौन रोक सका है ? उन्होंने हिन्दू रक्षा समिति का गठन किया तथा कार्य प्रारम्भ कर दिया। देशभक्ति की भावना से युक्त भावी खतरे की आशंका से व्यथित कुछ मन साथ चले। समाज में अलख जगाई गई। समाज ने अंगड़ाई ली। नेता लोग चौंके। संगठनों ने अपने को तैयार किया और थोड़े से समय में महात्मा वेदभिक्षु: की आवाज, हिन्दू रक्षा समिति की आवाज भारत की जनता की आवाज बन गई। परन्तु इसके लिए बलिदान देना पड़ता है और बलिदान देना पड़ा। राष्ट्रीय कार्य इतना ही सहज होता तो कभी का हो चुका होता। यह तो संकट का कार्य है, अभाव और दुःखों का मार्ग है। इस पर चलना आसान नहीं और अधिक लोगों के साथ-साथ चलने की कोई संभावना नहीं। ऐसे दयानन्द संस्थान के रथ को दो पहिए बड़ी तेजी से ले जा रहे थे। उनमें एक थे महात्मा वेदभिक्षु: और दूसरी हैं पण्डिता राकेशरानी। परन्तु रथ-गति लड़खड़ाई। एक पहिया टूट गया और समाप्त हो गया। २१ दिसम्बर, १९८३ के दिन महात्मा वेदभिक्षु: जी के स्वर्ग-वास के साथ लगा कि रथ अब नहीं चल पाएगा। कहीं एक पहिये का रथ भी चला ! घोर विपत्ति का समय—परन्तु महात्मा जी की भावना तो जैसे आत्मसात् हो चुकी थी, रुकना संभव न था। इस सारे क्रिया-कलाप में, प्रकाशन में, प्रसार में राष्ट्रीयता के आन्दोलन को निरन्तर प्रेरणा का स्रोत थीं अम्मा जी (पण्डिता राकेशरानी) महात्मा जी के लिए तो अम्मा के संदर्भ में कालिदास के ये शब्द खरे उतरते थे—

गृहिणी सचिवः सखी मिथः प्रिय शिष्या ललिते कला विधौ।

उन्होंने अपने प्राण और अपने प्रण अम्मा को सौंप दिए थे। जनता के सम्बल ने उन्हें प्रभूत सद्भाव दिया। महात्मा जी के वियोग का दुःख, एक पत्नी का दुःख, एक पिता का दुःख न होकर समाज का दुःख बन गया और समाज के सम्बल तथा ईश्वर की कृपा से वह रथ फिर समाज और राष्ट्र में चेतना का संचार करने के लिए अपने पथ पर अग्रसर है। उस रथ का जिसमें एक ही पहिया है, दूसरा सहयोगी है समाज की राष्ट्रवादी सद्भावना।

८ जून को इस रथ की संवाहिका पंडिता राकेशरानी का जन्मदिन है। ईश्वर उन्हें दीर्घ जीवन तथा स्वास्थ्य प्रदान करे।

हमारी शुभ कामनाएं उनके साथ हैं।

भूयश्च शरदः शतात्।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२० जून को पहली बरसी पर

श्री लालमन आर्य

वे लोग जो स्वयं बने, परिवार को बनाया, तब समाज को बनाने की बात की ऐसे लोगों में थे श्री लालमन आर्य। व्यक्ति का निर्माण करने वाली एक ही वस्तु है श्रद्धा जो श्रद्धावान् बना वही स्वयं बन सका और दूसरों को बनाने में समर्थ हो सका। श्रद्धावान् एक आस्तिक व्यक्ति ही बन सकता है। इस आस्तिकता का उदय श्री आर्यजी में आर्यसमाज के सम्पर्क से आया। स्वाध्याय ने उनकी भावनाओं को संस्कृत किया, विचारों को परिपुष्ट किया। अपने निश्चित विचारों के प्रचार ने उनकी आत्मा को संतुष्टि प्रदान की जो धन और केवल ज्ञान से प्राप्त नहीं हो सकती। श्रद्धावान् अपनीही भांति अपने आत्मीयों का भी निर्माण करना चाहता है। वह उन्हें इस अलौकिक सम्पत्ति से पूर्ण करना चाहताहै। श्री आर्यजी ने अपने परिवार को न केवल समृद्धि के सोपान पर चढ़ना ही सिखाया अपितु उन्हें आध्यात्मिक संस्कारों से सम्पन्न भी बनाया। परिवार के बच्चों में छोटे प्रश्नोत्तर द्वारा विचार सम्पन्न करना, उनकी जिज्ञासा को जागृत करना, उसका उचित उत्तर से शमन करना, प्रत्येक परिवार-जन के लिए शुद्ध भावना से संध्योपासना हवन करना उनकी परिवार निर्माण की साधना का व्यावहारिक दृष्टान्त है। हम अपने परिवारों में आर्यत्व जब कभी लाना चाहेंगे इन उपायों का अवलम्बन करना ही होगा। श्री आर्य जी ने स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों को आत्मा से स्वीकार किया और जीवन को तदनुरूप बनाने का जीवन-भर प्रयत्न किया। महर्षि दयानन्द की कृपा से उन्होंने समाज सुधार के कार्यों का सम्पादन किया जातिवादी संकीर्ण मनोवृत्ति का उन्मूलन करने के लिए अपने को उस बन्धन से मुक्त किया। आर्य बने। व्यापार में सिद्धान्तों का सफलतापूर्वक निर्वाह करके उन लोगों के सामने आदर्श प्रस्तुत किया जो यह मानते हैं कि व्यवसाय और सत्यता विरोधी बातें हैं। यही बात उन्होंने अपनी सन्तति में डालने की चेष्टा की।

श्री लालमन जी के जीवन में आर्य व्यक्तियों, आर्य संस्थाओं से प्रति सहज स्नेह था, विद्वानों के प्रति आदर की भावना और साधु-संन्यासियों के प्रति श्रद्धा जीवन-भर तन मन धन से सबकी सेवा करते रहे। समाज की प्रगति और राष्ट्र की उन्नति के लिए किए जाने वाले कार्यों में उनके मन में कोई भेदभाव नहीं था। उनका श्रद्धासम्पन्न जीवन जहां परिवार के लिए प्रेरणाप्रद मार्ग दर्शन करेगा, वह समाज के लिए भी आदर्श स्मारक होगा। ▭

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चुटकियां

☼ इन्दिरा गांधी हिन्दू हैं। संजय गांधी भी हिन्दू थे।

—न्यायालय का फैसला

× यह बात उन्हें जरा जोर से बोलकर सुनाइए।

☼ मेरे सब्र का प्याला भर गया है। मैं अपने पवित्र मंदिर को इस तरह अपराधों के लिए प्रयुक्त होना नहीं देख सकता।

—अकाली नेता उमरानंगल

× चलो हिट लिस्ट में एक नाम और बढ़ा।

☼ संत भिण्डरांवाला एक धार्मिक व्यक्ति हैं। —राजीव गांधी

× संत जी ! अब तो मेहरबानी कर हिट लिस्ट से नाम हटा दीजिए न !

☼ अनुच्छेद २५ जलाने के पीछे इन अकाली नेताओं की संविधान का अपमान करने की मंशा नहीं थी। —न्यायालय में सरकारी वकील

× मुकद्दमा चलाने के पीछे सजा दिलाने की सरकार की भी मंशा नहीं थी।

☼ भारत को घेराबन्दी का अमेरिकी इरादा नहीं।

—अमेरिकी उपराष्ट्रपति बुश

× पाकिस्तान को वे हथियार तो खेलने-कूदने के लिए दिए जा रहे हैं।

☼ देश पंजाब के बारे में सोचना बंद कर दे। प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के पास पंजाब की समस्या का हल है। वे बंगलादेश की समस्या की तरह सही समय पर कार्रवाई करेंगी। —राजीव गांधी

× और सही समय तब आयेगा जब चुनाव करीब होंगे।

☼ भिण्डरांवाला का विरोध करने वालों को नहीं बख्शेंगे।

—दशमेश रेजिमेंट के कथित प्रवक्ता की धमकी

× जुल्म पर जुल्म है, और ताकीद है सैयाद की।
काट डालूंगा जुबां अगर जो फरियाद की।। —अनिल

मुद्रक—प्रकाशक—संपादक पंडिता राकेश रानी द्वारा जन-ज्ञान मुद्रणालय वेद मन्दिर दिल्ली -- ३६ में छपा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समृद्धि का उपाय

—सुधारक 'आशावादी'

देश में गणतन्त्र की स्थापना हुई ही थी कि देश की स्थिति संवारने की वार्ताएं जोर-शोर से की जाने लगी। एक पत्रकार ने भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू से पूछा—आपके विचार में देश की समृद्धि किस प्रकार हो सकती है ?

पं० नेहरू ने उत्तर दिया—देश में बड़े-बड़े उद्योग-धन्धे स्थापित किए जाने व देश की बनी वस्तुओं का निर्यात बढ़ाए जाने से ही देश की समृद्धि सम्भव है।

पत्रकार इस उत्तर से पूरी तरह संतुष्ट नहीं हुआ। अतः वह देश के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद से मिला और उसने उनसे भी वही प्रश्न दोहराया कि देश की समृद्धि किस प्रकार हो सकती है ?

डा० राजेन्द्रप्रसाद विचारमग्न हो गए। तब थोड़ी देर बाद बोले—मैं देश में सोना ही सोना देखना चाहता हूं।

पत्रकार असमंजस में पड़ गया, उसने पुनः प्रश्न किया—तो क्या देश में सोने की खा[illegible]ोजने हेतु कार्य किया जाएगा ?

'नहीं…।' [illegible]ष्ट्रपति महोदय का उत्तर था।

'तो…फिर [illegible] कैसे सम्भव है ?' पत्रकार ने पूछा।

डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने शांत भाव से उत्तर दिया—मैं चाहता हूं कि यहां का हर नागरिक सोना बन जाय और वह सोना तभी बन सकता है जब वह चरित्र की कसौटी पर खरा उतरे, यदि भारत का हर नागरिक चरित्र-वान् बन जाएगा, तो समृद्धि स्वयं ही हमारे कदम चूमेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्मोपदेश

हर्ष की मात्रा बढ़ाओ

—स्व० महात्मा नारायणस्वामी

मनुष्य का कर्तव्य है कि संसार के हर्ष-समुदाय में वृद्धि का कारण बने। उसका प्रत्येक कार्य इसी उद्देश्य की पूर्ति का साधक होना चाहिए। हंसमुख चेहरा प्रसन्नता की किरणों को सब ओर फैलाता है। मधुर वाणी से दुःखी से भी दुःखी पुरुष के हृदय की कली खिल जाती है।

प्रसन्न रहने का अभ्यास बना लो, दुःख तुम्हारे पास फटक नहीं सकेगा—निराशा तुमसे कोसों दूर रहेगी। एक सार्वत्रिक और बिना लिखा हुआ नियम है कि मनुष्य दुःखों, कष्टों और रोग की वेदनाओं तथा प्रत्येक प्रकार की आपत्तियों को प्रसन्नता से सहन करे। जो इन्हें प्रसन्नता के साथ सह लेते हैं वे तपस्वी, चरित्रवान् और सफल-जीवन हुआ करते हैं। परन्तु जो इन्हें वीरता के साथ नहीं सहते वे चरित्र-हीन, निर्बल, कायर और दुःख-मय जीवन वाले होते हैं। प्रथम श्रेणी के नर-नारियों के साथ जनता प्रेम-प्रदर्शन करती है और उन्हें अपनी सहानुभूति का पात्र समझती है। परन्तु द्वितीय श्रेणी के स्त्री-पुरुष लोगों की हंसी का पात्र बना करते हैं।

उपनिषद् में भी एक जगह लिखा है कि 'एतद्वै परमं तपः यद्व्याधितस्तप्यत' अर्थात् व्याधि-ग्रस्त होकर कष्टों को सहन करना परम तप है। जो नर-नारी रोगी होकर प्रसन्न रहते हैं उनका रोग शीघ्र दूर हो जाता है।

प्रसन्नता के साथ भोजन करने से वह जल्द पच जाता है। अप्रसन्नता के साथ भोजन करो वह कभी नहीं पचेगा। इसालिए यह नियम है कि भोजन करने के बाद कुछ हंसना चाहिए। इससे पाचन-क्रिया में सहायता मिलती है।

स्वस्थता की इच्छा रखने वालों के लिए आवश्यक है कि प्रातः-सायं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी सुविधानुसार कुछ समय खेल-कूद में लगाया करें। छोटे बच्चों के साथ खेलने से मनुष्य को बहुत हंसना पड़ता है। इसीलिए अनेक गृहस्थ भोजन के पश्चात् कुछ देर बच्चों के साथ खेला करते हैं। इंग्लैण्ड का प्रसिद्ध राजनैतिक 'ग्लेडस्टन' नियम से प्रतिदिन अपने छोटे बच्चों के साथ खेला करता था। एक दिन उसे धनवानों की सभा (House of Lords) के एक सदस्य से, जिससे उसे उसी के खेल के समय मिलना आवश्यक था, एक बच्चे के साथ खेलते समय मिलना पड़ा। वह घोड़ा बना हुआ था और बच्चा उस पर सवार होकर हांक रहा था। इस प्रकार दोनों खिलखिला कर हंस रहे थे। उसी खेल में ही उसने उन लार्ड महोदय से बातचीत कर उन्हें रुखसत कर दिया, परन्तु ऐसी जरूरत होने पर भी उसने अपना खेलना बन्द नहीं किया। उसका एक यह भी नियम था कि जो समय जिस काम के लिए उसके समय विभाग में होता था, उस समय में वह उस काम को अवश्य करता था। अस्तु, मनुष्य के लिए सदैव प्रसन्न रहना आवश्यक है। क्यों प्रसन्न रहना चाहिए? इसका वैज्ञानिक समाधान यह है कि प्रसन्नता से मनुष्य की इच्छा विकसित और पुष्ट होती है। इच्छा-शक्ति के विकसित और पुष्ट होने से मनुष्य सभी प्रकार की सफलता प्राप्त किया करता है। इस प्रकार प्रत्येक नर-नारी प्रसन्न रह कर संसार में हर्ष की मात्रा को बढ़ा सकता है—यही मनुष्य-जीवन का उद्देश्य है।

सत्य बराबर तप नहीं

पहला साधन

उपनिषद् में कहा गया है कि मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन का एक उद्देश्य निर्धारित करे। जिस मनुष्य का कोई एक लक्ष्य नहीं उसकी स्थिति बहुत शोचनीय हो जाती है। उद्देश्य-पूर्ति के कई साधन हैं। उनमें सबसे प्रधान साधन तप है। हाथों को सुखा देना तप नहीं। वे तो हमें दीन-दुःखियों और अनाथों की सहायता के लिए मिले हैं। तप नाम है मनुष्य की उस शक्ति का, जिससे वह कठिन से कठिन यातना को भी वीरता से सह ले, जिससे रण-क्षेत्र में आई हुई चोटों की चिन्ता न करे। नैपोलियन भी तपस्वी था। ऐसे तपस्वियों से हमारे भारत का इतिहास भरा पड़ा है। भीष्म की भयानक प्रतिज्ञा का हाल पढ़िए। तप इसका नाम है।

किन्तु मैं वर्तमान काल के एक तपस्वी का चरित्र सुनाना चाहता हूं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब्राहम लिंकन, जो अमेरिका राज्य का राष्ट्रपति (President) था, कुली के परिवार में उत्पन्न हुआ था। जब वह दस वर्ष का हुआ, उसे स्कूल में भेजा गया। स्कूल घर से दस मील के फासले पर था। प्रतिदिन उसे २० मील की यात्रा करनी पड़ती थी। जब वह उच्च श्रेणी में पढ़ने लगा तो उसे एक पुस्तक की आवश्यकता हुई। उसे मालूम हुआ कि घर से २५ मील की दूरी पर एक दानवीर से यह किताब मिल सकेगी। वह झट वहां गया और किताब प्राप्त की। वह अग्नि के प्रकाश में किताबें पढ़ा करता था। शिक्षा समाप्त करने पर उसके दिल में नौकरी करने का विचार पैदा हुआ। विद्यार्थी जीवन में उसे सदा ही ख्याल आता था कि मैं क्या अमेरिका का राष्ट्रपति नहीं बन सकता। इन विचारों की बदौलत उसका भविष्य अच्छा हुआ। वह अमेरिका का राष्ट्रपति बन गया। मनुष्य के विचार ऊंचे होने चाहिए।

दूसरा साधन

दूसरा साधन है धर्म—अपने आप पर अधिकार प्राप्त करना। चाणक्य ने एक अर्थ-शास्त्र लिखा है। जब इसे योरुप वालों ने देखा तो उनके आश्चर्य की कोई सीमा न रही। चाणक्य चन्द्रगुप्त का प्रधान सचिव था। उसने यूनानी राजा सैल्यूकस को पराजित किया था। चाणक्य के कुछ अन्तिम श्लोकों का अर्थ यह है—

धर्म सुख का मूल है। आशा से धन की प्राप्ति होती है। स्वराज्य का मूल इन्द्रियों पर अधिकार पाना है। जिस मनुष्य का अपनी इन्द्रियों पर ही अधिकार नहीं है वह दूसरों पर कैसे अधिकार कर सकता है—आदि।

तीसरा साधन

तीसरा साधन कर्म है। इसके सम्बन्ध में दो बातों का जानना आवश्यक है। पहली—कर्म का फल अटल है; मनुष्य जैसा करता है वैसा फल पाता है। दूसरी बात है—मनुष्य जो भी कर्म करे वह स्वार्थ से रहित हो। आर्य-समाज के नवें नियम में यही बात बताई गई है—मनुष्य को केवल अपनी उन्नति से ही सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए बल्कि साथ ही दूसरों की भी उन्नति करनी चाहिए। पोप लूई दशम ने रुपया जमा करने के उद्देश्य से पापों से मुक्ति दिलाने के लिए कई क्षमा-पत्र बंटवाए। लोगों ने उन्हें बड़े चाव से आगे बढ़कर खरीदा। डाकुओं ने, जो रुपये इनसे प्राप्त हुए, वे लूट लिए। पादरियों ने उनसे कहा कि यह ईश्वर का रुपया है, तुम नरक में डाले जाओगे। उनमें से एक ने अपनी जेब से मुआफीनामा निकाल कर आगे रख

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिया और कहा, इसके बल से हमारे संचित और क्रियमाण सब पाप क्षमा कर दिये गये।"

कर्म केवल दूसरों की भलाई के उद्देश्य से होना चाहिए। जब मनुष्य तप, धर्म और कर्म को काम में लाता है, तभी उन्नति की ओर पग बढ़ाता है।

वेद-वेदांगों में इन तीन साधनों का वर्णन किया गया है। वेद सत्य से ओत-प्रोत हैं। मनुष्य में सत्य-बल होना चाहिए। वेदों और उपनिषदों में सत्य की भारी महिमा है। सत्य को प्राप्त कीजिये, इससे ईश्वर को भी प्राप्त कर सकोगे।

प्रचार की सच्ची लगन

आर्यसमाज के किसी विभाग का काम करो—शुद्धि का प्रचार करो, संगठन की आवश्यकता जताओ, चरित्र की महिमा का गान करो, वेद की शिक्षा को फैला दो, सत्यार्थप्रकाश को घर-घर में पहुंचा दो—इन सब कामों के लिए प्रचार की लगन की जरूरत है। आर्यसमाज के प्रचार-युग में यह लगन एक-एक आर्यसमाजी के हृदय में दीख पड़ती थी। उस समय कोई व्यक्ति आराम नहीं लेता था, जब तक कि वह दिन-रात में कुछ न कुछ प्रचार न कर ले। यह अवस्था केवल पढ़े-लिखे आर्यों की ही नहीं थी बल्कि निपट निरक्षर आर्य भी अपना यह उद्देश्य समझता था।

मुझे एक निरक्षर आर्य के उद्योग का वर्णन करते खुशी होती है। ये सज्जन पहरा देने वाले एक चौकीदार थे। ये रात को पहरा देते थे। इनका रोज का काम था—रात को आवाज देकर आदमियों को जगाना। आवाज मीठी थी और भाव बहुत ऊंचे। "पांच हजार वर्ष से सोने वालो! अब जागो, उठो"। जब दिन के समय लोग इसका मतलब पूछते तो उत्तर मिलता —वह सब कुछ तुम्हें 'सत्यार्थप्रकाश' पढ़ने से मालूम होगा। इस वीर ने लोगों को सत्यार्थप्रकाश की हजारों प्रतियां मंगा कर दीं। लोग उसे पढ़कर अपने में आर्योपयोगी भाव भरते। जब उसे मालूम होता कि यहां अब दस बारह आर्य बन गये हैं तो वहां एक उपदेशक को बुला कर प्रचार कराता। इस तरह जहां-जहां वह गया वहां-वहां ही उसने आर्यसमाज की स्थापना की। प्रचार-युग में ऐसी लगन वीर आर्यों में हुआ करती थी। इससे आर्यसमाज के प्रत्येक विभाग की उन्नति हुई। आजकल इसका अभाव खटकता है। यही

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दी : हमारे राष्ट्र की भाषा

—डा० वेदप्रकाश
(प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ)

किसी भी देश की राष्ट्रभाषा उस देश की संस्कृति का प्राण होती है। यदि कोई व्यक्ति अपनी राष्ट्रभाषा की उपेक्षा करता है तो इसका अर्थ है कि वह अपनी संस्कृति की उपेक्षा करता है, और जो अपनी संस्कृति की उपेक्षा करता है वह अपनी राष्ट्र की उपेक्षा करता है। इसे हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि जिसे अपनी राष्ट्रभाषा से प्रेम नहीं, उसे अपने राष्ट्र व संस्कृति से भी प्रेम नहीं। यदि अपनी राष्ट्रभाषा और संस्कृति की उपेक्षा करने वाला व्यक्ति यह कहे कि उसे अपने देश से प्रेम है, तो वह असत्य कहता है।

राष्ट्र के नागरिकों द्वारा अपनी राष्ट्रभाषा और संस्कृति की उपेक्षा करने का परिणाम यह होता है कि उनका राष्ट्र उनसे छिन जाता है। "मिस्र, बेबीलोन, असुर (असीरिया), हित्ती, मितन्नी, मिनोअन (क्रीट का प्राचीन साम्राज्य) आदि विश्व के बीसियों गौरवशाली राष्ट्र इतिहास के पृष्ठों पर आज नामशेष होकर रह गए हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी संस्कृतियों की अवहेलना की।"

आज हिन्दुस्तान के नागरिक भी संसार की सर्वाधिक प्राचीन एवं महान् अपनी संस्कृति तथा अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा कर रहे हैं, जिसके कारण आज भारत के सामने अस्तित्व का संकट आ गया है।

राष्ट्रभाषा की उपेक्षा भारत के किसी एक प्रदेश या क्षेत्रविशेष में नहीं वरन् सम्पूर्ण देश में, देश के शासन व जनता दोनों द्वारा हो रही है। आइये, इस उपेक्षा पर थोड़ा गम्भीरतापूर्वक विचार करें—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(अ) शासन द्वारा उपेक्षा

देश का शासन राष्ट्रभाषा की उपेक्षा दो प्रकार से कर रहा है—

(१) १४ सितम्बर १९४९ को भारतीय संविधान निर्माताओं ने १२ के विरुद्ध ३१२ मतों से देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को भारतवर्ष की राजभाषा स्वीकार किया था। साथ ही यह आश्वासन भी दिया गया था कि जिस प्रकार हम अंग्रेजी शासन से स्वाधीन हो गए, उसी प्रकार अंग्रेजी भाषा से भी स्वाधीन हो जाएंगे। पर हम भारतीयों का यह दुर्भाग्य है कि हम आज तक अंग्रेजी की दासता से मुक्त नहीं हो पाये तथा देश के शासकों ने संविधान के आश्वासन को आज तक पूरा नहीं किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के सैंतीस वर्षों के बाद भी हम अपनी एक सम्पर्क भाषा तक विकसित नहीं कर पाये।

आज भी देश के शासन का सम्पूर्ण कार्य अंग्रेजी में होता है। हिन्दी में कार्य करते तो शासकीय कर्मचारियों व अधिकारियों को लज्जा आती है उनके कोमल हाथ दुखते हैं, क्योंकि ये लोग हिन्दी को तो गधों-गवारों की भाषा मानते हैं तथा अंग्रेजी पढ़ना, लिखना व बोलना ही पढ़े-लिखे और ऊंचे जीवन-स्तर का प्रमाण मानते हैं। अंग्रेज तो यहां से चले गये पर स्वाधीन भारतवर्ष के शासकों ने अंग्रेजों की भाषा अंग्रेजी को बड़े प्रेम से अपने गले लगा रखा है।

आज भी अधिकतर राजकीय सेवा-परीक्षाएं तथा उनके लिए साक्षात्कार प्रायः अंग्रेजी में ही होते हैं, जिसका दुष्परिणाम यह होता है कि धनवानों के अथवा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा-प्राप्त बच्चे ही इन सेवाओं में आते हैं, निर्धन अथवा हिन्दी माध्यम से शिक्षा पानेवाले बच्चे अधिकतर बेरोजगार भटकते फिरते हैं। जब हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है, तो परीक्षाएं अंग्रजी में क्यों ली जाती हैं?

अनेक राजनेता आज भी अपने राज्यों में हिन्दी का खुला विरोध कर रहे हैं। इन्हें कोई रोकनेवाला नहीं।

इस प्रकार देश के संविधान का पालन करने वाले ही उसका खुला उल्लंघन कर रहे हैं। निश्चय ही यह अत्यन्त लज्जा की बात है।

(२) हिन्दी-भाषी राज्यों की सरकारें उर्दू को द्वितीय राजभाषा घोषित कर देश से हिन्दी को मिटाने का षड्यन्त्र रच रही हैं। बिहार के १५ जिलों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में तो उर्दू को द्वितीय राजभाषा बना ही दिया गया है, उत्तर प्रदेश में शीघ्र ही बनाये जाने की पूरी सम्भावना है। उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि राज्य सरकारें उर्दू से प्रेम करती हैं। वे तो इस कार्य से केवल मुसलमानों से मत प्राप्त करना चाहती हैं। उन्हें उर्दू से कुछ लेना-देना नहीं। यहां उर्दू के सम्बन्ध में कुछ बातें द्रष्टव्य हैं :—

(अ) उर्दू कोई भाषा ही नहीं है। वह तो हिन्दी की—अवधी, ब्रजबोली, खड़ीबोली, मैथिली, भोजपुरी आदि बोलियों को भांति ही एक बोली है।

(आ) उर्दू में ८५ प्रतिशत शब्द हिन्दी के हैं।

(इ) गांव और नगर के सभी मुसलमान सरल हिन्दी को भली प्रकार समझते और बोलते हैं। गांव के हिन्दुओं और मुसलमानों की बोली में कोई अन्तर नहीं है। एक क्षेत्र के सभी व्यक्ति (हिन्दू, मुसलमान) एक ही बोली बोलते हैं। उनकी बोली में कोई भी यह निर्णय नहीं कर सकता कि वे हिन्दू हैं या मुसलमान ?

(ई) मुसलमान विद्यार्थी प्रेम से हिन्दी पढ़ते-लिखते हैं। वे उर्दू व अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य सभी विषय हिन्दी माध्यम से ही पढ़ते-लिखते हैं, उर्दू से नहीं।

(उ) कोई भी मुसलमान उर्दू में नमाज नहीं पढ़ता।

उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने के अनेक दुष्परिणाम होंगे, जो इस प्रकार हैं—

(१) जिस राज्य में भी उर्दू को द्वितीय राजभाषा घोषित किया जाएगा उस राज्य में वहां के शासन को उर्दू विश्वविद्यालय बनाना पड़ेगा। उत्तर-प्रदेश के अकेले मुरादाबाद नगर में उसके दोनों ओर दो मुस्लिम विश्वविद्यालय बनाये जा रहे हैं, जबकि अभी तो उत्तर-प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाया भी नहीं गया।

(२) सभी विद्यालयों में उर्दू के अध्यापक रखने होंगे। उत्तर-प्रदेश के अनेक प्राथमिक विद्यालयों में उर्दू के हजारों अध्यापक नियुक्त किये गये हैं, जबकि गांव के अनेक विद्यालयों मे तो उर्दू पढ़ने वाला एक भी विद्यार्थी नहीं है। पर सरकार इन अध्यापकों को खाली बैठाकर व्यर्थ में ही वेतन दे रही है।

(३) सरकार को प्रत्येक विषय का माध्यम उर्दू बनाना पड़ेगा तथा सभी पाठ्य पुस्तकें उर्दू में भी प्रकाशित करनी पड़ेंगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(४) प्रत्येक विभाग में उर्दू का लिपिक व निर्देशक रखने होंगे

(५) सभी प्रकार की शासकीय पाठ्य सामग्री (पत्र-प्रपत्र आदि) उर्दू में प्रकाशित करनी होगी।

(६) रेलगाड़ियों व मोटरों के टिकट तक उर्दू में प्रकाशित करने पड़ेंगे।

(७) प्रत्येक राजकीय कर्मचारी को न चाहने पर भी उर्दू सीखनी पड़ेगी।

(८) शासन को प्रत्येक सूचना उर्दू में भी निकालनी पड़ेगी।

(९) शासन का व्यय दुगुना हो जायेगा।

(१०) सभी अध्यापकों को अनिवार्य रूप से उर्दू सीखनी होगी, अन्यथा वे उर्दू माध्यम में लिखी उत्तर-पुस्तिकाओं की जांच नहीं कर सकेंगे।

(११) सभी परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र उर्दू में प्रकाशित करने पड़ेगे।

(१२) सभी विद्यालयों में प्रथम कक्षा से ही उर्दू पढ़ना व फारसी लिपि सीखना अनिवार्य कर दिया जायेगा।

(१३) विधान-सभा तथा विधान-परिषद् में प्रश्न भी उर्दू में किये जाएँगे तथा मन्त्रियों को उनके उत्तर उर्दू में ही देने पड़ेंगे। साथ ही इन सभाओं की कार्रवाही उर्दू में लिखनी व प्रकाशित करनी पड़ेगी।

(१४) उर्दू में प्रश्नोत्तर होने से हिन्दी-भाषी विधायकों को उर्दू समझने व उर्दू-भाषियों को अपनी बात समझाने में बहुत कठिनाई होगी। शासन को ऐसा प्रबन्ध करना पड़ेगा जिससे हिन्दी में कहा गया उर्दू मे तथा उर्दू मे कहा गया हिन्दी मे सुनाई दे सके। क्या उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने वाली राज्य सरकारों के पास इतना व्ययभार उठाने योग्य वित्तीय साधन हैं ?

(१५) समस्त शासकीय विज्ञप्तियां, बजट, रिपोर्ट, आदेश, राज्यपाल का भाषण आदि का प्रकाशन उर्दू भाषा तथा फारसी लिपि में भी करना होगा।

(१६) विधान-सभा के अध्यक्ष को भी अपना भाषण उर्दू में देना होगा तथा उसके अनुवाद की तत्कालीन व्यवस्था करानी पड़ेगी।

(१७) देश के ९६ प्रतिशत हिन्दीभाषियों के बालकों को विवश होकर उर्दू पढ़नी तथा विदेशी फारसी लिपि सीखनी होगी। क्या हिन्दी-भाषी माता-पिता इसके लिए तैयार होंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(१८) राज्य-भर में हिन्दी से उर्दू में तथा उर्दू से हिन्दी में अनुवाद करने वाले बहुत बड़ी संख्या में रखने होंगे।

(१९) सरकार वर्तमान व्यय को तो वहन कर नहीं पा रही, फिर उर्दू के कारण होने वाले करोड़ों रुपये के अतिरिक्त व्यय को कैसे वहन करेगी?

(२०) फारसी लिपि के अक्षर ढाले नहीं जा सकते, उसका टाइप राइटर भी नहीं बनाया जा सकता। अतः उर्दू में कुछ भी टंकित (टाइप) नहीं कराया जा सकता।

(२१) उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने के पश्चात् मुसलमानों द्वारा अपनी जनसंख्या के आधार पर मुस्लिम जिलों और इसके बाद उर्दू राज्य की मांग की जाएगी। इसके लिए आन्दोलन और दंगे होंगे, जिनके फलस्वरूप मुसलमानों को प्रसन्न कर मत खरीदने वाली सरकार को पृथक् उर्दू-राज्य बनाना पड़ेगा।

(२२) हिन्दुस्तान के विभाजन का कारण उर्दू ही थी। इसी प्रकार पाकिस्तान के विभाजन का कारण उर्दू ही थी। आज विभिन्न प्रदेशों में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाकर देश के पुर्नविभाजन को कोई रोक नहीं पाएगा।

इस प्रकार राज्य सरकारों द्वारा उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का कार्य निन्दनीय तथा देश के लिए घातक है। तुष्टीकरण की यह नीति इस पवित्र हिन्दुस्तान के पुनः टुकड़े करवा देगी। अतः सभी देशप्रेमियों को उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का घोर विरोध करना चाहिये। इसके लिए हमें शक्तिशाली जन-आन्दोलन आरम्भ कर देना चाहिये।

उर्दू-हिन्दी के विरोध को समाप्त करने का एक बड़ा ही सरल उपाय है। जैसा पीछे कहा गया है कि उर्दू हिन्दी की ही एक बोली है। अतः जिस प्रकार हिन्दी की अन्य बोलियां देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं, उसी प्रकार उर्दू को भी देवनागरी लिपि में लिखा जाना चाहिये। इससे हिन्दी व उर्दू का झगड़ा ही समाप्त हो जाएगा, क्योंकि मूल झगड़ा लिपि का है।

(आ) जनता द्वारा उपेक्षा

शासन द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा के बाद अब ध्यान से यह देखना है कि हम अपने दैनिक जीवन में जान-बूझकर किस प्रकार हिन्दी का अपमान करते हैं—

(१) आज प्रत्येक नगर व कस्बे में अंग्रेजी माध्यम के अनेक विद्यालय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खुल चुके हैं। अनेक केन्द्रीय विद्यालयों तथा ईसाई विद्यालयों में तो पूर्णतः अंग्रेजी में शिक्षा दी ही जाती है, पर अब तो नगरों व कस्बों की गली-गली में भी अंग्रेजी विद्यालय खुल गए हैं। आज सभी माता-पिता अपने बालकों में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों और विशेषतः ईसाई विद्यालयों में पढ़वाने को गौरव मानते हैं तथा स्वयं को समाज में ऊंचा समझते हैं। यह उनकी बड़ी भारी भूल है, क्योंकि ये ईसाई-अंग्रेजी विद्यालय हमारे बच्चों को नष्ट कर रहे हैं—इन विद्यालयों का वातावरण पूर्णतः विदेशी होता है, जबकि हमारा घरेलू वातावरण पूर्णतः भारतीय होता है। हम बच्चों से घर में तो हिन्दी में वार्तालाप करते हैं, पर इन विद्यालयों में हमारे बच्चों से पूर्णतः अंग्रेजी में ही वार्तालाप किया जाता है। इस प्रकार बच्चा दो परस्पर विरोधी वातावरणों में फंस जाता है।

इन विद्यालयों में सभी विषय अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाये जाते हैं। हमारे बच्चे उन्हें भली प्रकार समझ नहीं पाते, क्योंकि अंग्रेजी उनकी मातृभाषा नहीं है। छोटे-छोटे बच्चे जो हिन्दी भी अच्छी प्रकार नहीं समझते, वे विशुद्ध अंग्रेजी को (अंग्रेजी में) कैसे समझ सकते हैं? बच्चे अंग्रेजी व अन्य सभी विषयों को अंग्रेजी में केवल रट लेते हैं, समझ नहीं पाते। बच्चा अपनी भाषा में किसी विषय को जितनी भली प्रकार समझ सकता है, दूसरी भाषा में नहीं समझ सकता। अंग्रेजी मातृभाषा में ही विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चे हिंदी में २० तक गिनती भी नहीं गिन सकते—पहाड़ों का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

इन विद्यालयों में बच्चों को हिन्दी का नाममात्र का ही ज्ञान कराया जाता है। इस प्रकार बच्चे न तो हिन्दी सीख पाते हैं और न ही अंग्रेजी। वास्तव में वे कहीं के भी नहीं रहते।

इन विद्यालयों में एक कार्य तो वास्तव में सिखाया जाता है और वह है अंग्रेजी ढंग की वेशभूषा में खूब सज-संवरकर रहना। बच्चे को कुछ पढ़ना-लिखना आता हो या न आता हो, पर उसकी विद्यालयी वेशभूषा का विशेष ध्यान रखा जाता है। इन विद्यालयों में बच्चों को बचपन से ही फांसी का फंदा (टाई) बांधना अनिवार्य है। इसके बिना बच्चा विद्यालय में घुस नहीं सकता। यह फांसी का फंदा विदेशी तथा ईसाईपन का चिह्न है। हम तो आर्य हैं, हिन्दू हैं, भारतीय हैं। अतः हमारे लिए इसका कोई महत्त्व नहीं।

इन अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में (ईसाइयों के विद्यालयों में तो विशेष रूप से) लड़कियों की वेशभूषा स्कर्ट (घुटनों से ऊपर तक की अंग्रेजी घघरिया) है। जब इस घघरिया को पहनकर किशोरियां साइकिल चलाती हुई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

या रिक्शा में बैठकर भरे बाजारों में से जाती हैं, तो वे जंघाओं तक नंगी दिखाई देती हैं, जिससे युवकों पर दुष्प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। यदि कोई छात्रा अधनंगी रखने वाली इस अंग्रेजी घघरिया को न पहनना चाहे तो वह विद्यालय में पढ़ नहीं सकती। विदेशों में अंग्रेज महिलाएं ही घुटनों तक नंगी रहती हैं, लज्जाशील भारतीय नारियां तो सदैव अपने सम्पूर्ण शरीर को ढकने वाली वेशभूषा साड़ी-चोली या कुर्ता-सलवार पहनती हैं। इन विद्यालयों को, हमारी बहन-बेटियों को इस प्रकार अर्द्धनग्न रखने का कोई अधिकार नहीं है। यह भौंडा वेश तुरन्त बन्द होना चाहिए। इसके लिए सभी माता-पिताओं को विद्यालयों एवं स्थानीय अधिकारियों को लिखना चाहिए तथा इस स्कर्ट के स्थान पर कुर्ता-सलवार की वेशभूषा अनिवार्य करवानी चाहिए, अन्यथा अपनी बेटियों को इन विद्यालयों से हटा लेना चाहिए।

वास्तव में विदेशी सभ्यता के समर्थक ये अंग्रेजी विद्यालय अंग्रेजी शिक्षा का लालच देकर हमारी महती भारतीय संस्कृति को मूलतः नष्ट कर रहे हैं तथा भोगपरक व विनाश की ओर ले जाने वाली अंग्रेजी सभ्यता में हमारे बच्चों को रंग रहे हैं।

(२) आजकल सभी घरों में माता-पिता को मम्मी-पापा, मॉम-पॉप या मम्मी-डैडी तथा चाचा-चाची, ताऊ-ताई, मामा-मामी, फूफा-बुआ, मौसा-मौसी आदि को केवल अंकल-आंटी कहने की परम्परा बन गई है जिससे बच्चे अपने सगे सम्बन्धियों से वास्तविक सम्बन्ध को भी नहीं जान पाते। ये अंग्रेजी शब्द पारस्परिक सम्बन्धों का प्रेम और माधुर्य नष्ट कर रहे हैं।

(३) हम वार्तालाप करते समय अपने प्रत्येक वाक्य में एक-दो शब्द अंग्रेजी के मिलाकर बोलने में अपनी बड़ाई समझते हैं, जब कि हम अंग्रेजी के चार वाक्य भी शुद्ध रूप में नहीं बोल सकते।

(४) हम अपने पत्र, निमन्त्रण-पत्र, शुभकामना-पत्र, दूकान की धन-प्राप्ति-पुस्तिका (रसीद बही), तिथि-पत्रक तथा दूकान का बिका सामान रखने के लिए बने कागज के थैले तक अंग्रेजी में छपवाते हैं।

(५) हम अपने नामपट्ट, दूकानों के नामपट्ट, कार-स्कूटर-मोटर आदि के नामपट्ट तथा कार्यालयों के नामपट्ट अंग्रेजी में तथा आधे-अधूरे लिखवाते हैं।

(६) हम बच्चों से नमस्ते न कहलवाकर टाटा या बाय-बाय कहलवाते हैं।

(७) हम पूरा पत्र तो हिन्दी में लिखते हैं, पर पता अंग्रेजी में।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(८) हम अपने हस्ताक्षर, दिनांक तथा अन्य अंक तक अंग्रेजी में लिखते हैं।

(९) अध्यापक अंग्रेजी में ही उपस्थिति लेते हैं तथा विद्यार्थियों से अंग्रेजी में ही उपस्थिति बुलवाते हैं।

(१०) विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के सभी पत्र-प्रपत्र अंग्रेजी में छपते हैं। इनकी सभी सूचनाएं अंग्रेजी में ही प्रसारित होती हैं। अंग्रेजी न जानने वाले विद्यार्थियों तथा अभिभावकों को इससे बड़ी कठिनाई होती है।

(११) बच्चों की आरम्भिक कक्षाओं के नाम तक अंग्रेजी में रखे जाते हैं, जैसे नरसरी, के०जी०, अपर के० जी०, लोअर के०जी० आदि।

(१२) हमने अपनी गलियों, मार्गों, चौराहों, द्वारों, भवनों तक के नाम अंग्रेजी में रख रखे हैं, जैसे इण्डियागेट, कश्मीरीगेट, दिल्लीगेट, सोहराबगेट, पी०एल० शर्मा रोड, नेहरू रोड, जे०के० टैम्पल, विक्टोरिया पार्क, सिविल लाइन्स, आसफअली रोड, नेहरू स्टेडियम आदि।

(१३) हम हिन्दी में भी अपने नाम अंग्रेजी ढंग से लिखते हैं, जैसे—चन्द्र का चन्द्रा, गुप्त का गुप्ता, मिश्र का मिश्रा आदि।

(१४) हम अपनी सभी उत्पादित वस्तुओं (कार, मोटर, टायर, शर्बत, बिस्कुट, कलम, कागज, औषधियों, जूते, वस्त्र आदि सभी कुछ) के नाम अंग्रेजी में ही प्रकाशित कराते हैं।

(१५) सभी व्यावसायिक संस्थाएं अपने नाम अंग्रेजी में रखती व लिखती हैं।

(१६) हिन्दी के चलचित्रों के नाम भी अंग्रेजी में रखे जाते हैं। उनका विज्ञापन भी अंग्रेजी में होता है तथा चलचित्र से सम्बन्धित व्यक्तियों के नाम भी अंग्रेजी में ही दिखाये जाते हैं।

(१७) दूरदर्शन पर हिन्दी के कार्यक्रमों के सम्बन्ध में भी अंग्रेजी में ही बताया जाता है, जिससे ऐसा लगता है मानो हिन्दी अंग्रेजी के सहारे चल रही हो। दूरदर्शन जिस भाषा का प्रयोग धड़ल्ले से कर रहा है वह घोर असांस्कृतिक और लज्जाजनक है। ऐसी भ्रष्ट भाषा का प्रयोग संसार के शायद ही किसी देश में होता हो। यह भाषा न हिन्दी है, न उर्दू, न अंग्रेजी बल्कि पंचमेल खिचड़ी है जो घर-घर में प्रचारित होकर सारे राष्ट्र का अहित कर रही है। भाषा का शुद्ध प्रयोग संस्कृति का पहला लक्षण है। अतः प्रत्येक हिन्दीभाषी का यह पुनीत कर्तव्य है कि वह इस प्रकार की असांस्कृतिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाषा का घोर विरोध करके हिन्दी के शुद्ध रूप को दूरदर्शन में स्थान दिलवाए।

(१८) चलचित्र तो हिन्दी का होता है, पर उसके गीत उर्दू व अंग्रेजी में होते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आज शासन और जनता दोनों ही राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपमान या उपेक्षा कर रहे हैं। यदि हमें अपनी संस्कृति और अपने राष्ट्र की रक्षा करनी है तो हमें अपनी भाषा की यह उपेक्षा बन्द करनी और करानी होगी, अन्यथा हम पुनः अशान्ति की दलदल में फंसकर अपनी संस्कृति तथा अपने राष्ट्र को खो बैठेंगे—

धर्म छुटा भाषा छुटी, छूटा अपना वेश।
एक-एक के छूटते, छूट चलेगा देश॥

अब प्रश्न यह उठता है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी का सम्मान या इसकी रक्षा कैसे करें? इसके लिए—

(१) हमारे देश व सभी प्रदेशों की सरकारों को अपने राजकाज की भाषा हिन्दी बना देनी चाहिए तथा उर्दू को भूलकर भी द्वितीय राजभाषा नहीं बनाया जाना चाहिए। जहां बना दी गई है वहां से उसे तुरन्त हटा देना चाहिए।

(२) हिन्दी-प्रदेश के सभी विद्यालयों में हिन्दी माध्यम से ही शिक्षा दी जानी चाहिए। अंग्रेजी को कक्षा छह से ऐच्छिक विषय के रूप में ही पढ़ाया जाए।

(३) सम्पूर्ण देश में पहली कक्षा से बारहवीं कक्षा तक हिन्दी व संस्कृत अनिवार्य विषयों के रूप में पढ़ाई जानी चाहिए।

(४) विज्ञान, वाणिज्य आदि की शिक्षा भी हिन्दी में ही दी जानी चाहिए। इन विषयों के विद्वान् परिश्रमपूर्वक सरल हिन्दी में इनकी पाठ्य-पुस्तकें तैयार कर सकते हैं।

(५) हिन्दी में वार्तालाप करते समय हमें अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

) अखिल भारतीय परीक्षाएं तथा साक्षात्कार हिन्दी में ही होने च

७) हमें अपने निमन्त्रण-पत्र, शुभकामना-पत्र, तिथि-पत्रक, धन-प्राप्ति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुस्तिका (सीद बही,) परिचय-पत्र, वस्तुओं के नाम व उनके विवरण हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही प्रकाशित कराने चाहिए।

(८) हमें अपनी दूकानों, कार, मोटर, स्कूटर, मोटर साइकिल आदि तथा अपने नामपट्ट हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखवाने चाहिए।

(९) हमें अपना नाम सदैव पूरा व शुद्ध हिन्दी में ही लिखना चाहिए, आधा-अधूरा नहीं।

(१०) हमें अपने हस्ताक्षर, दिनांक, संख्या, पता आदि सभी कुछ हिन्दी (देवनागरी लिपि में) लिखने चाहिए।

(११) अध्यापकों की उपस्थिति हिन्दी में लेनी चाहिए तथा विद्यार्थियों से भी हिन्दी में ही बुलवानी चाहिए।

(१२) हमें अपने नगरों, भवनों, मार्गों, चौराहों, बाजारों, स्मारकों आदि के नाम शुद्ध हिन्दी में ही रखने व लिखने चाहिए।

(१३) शिलान्यास के समय लगायी जाने वाली शिला पर सब कुछ शुद्ध हिन्दी में ही लिखा या खुदा होना चाहिए।

(१४) विद्यालयों तथा विश्वविद्यालय के सभी कार्य हिन्दी में होने चाहिए।

(१५) हमें बच्चों से मम्मी-पापा के स्थान पर माताजी-पिताजी तथा अंकल-आंटी के स्थान पर चाचा-चाची, ताऊ-ताई, मामा-मामी, फूफ-बुआ आदि ही कहलवाना चाहिए।

(१६) बच्चों से भूलकर भी टाटा व बाय-बाय न कहलवाएं और न स्वयं कहें। मिलते-बिछुड़ते समय उनसे सदैव हाथ जोड़कर नमस्ते या प्रणाम ही कहलवाएं तथा कहें।

(१७) हिन्दी के चलचित्रों के नाम, विज्ञापन आदि हिन्दी में ही होने चाहिए, अंग्रेजी में नहीं। साथ ही इनके गीत हिन्दी में होने चाहिए—उर्दू-अंग्रेजी में नहीं।

(१८) दूरदर्शन पर हिन्दी के कार्यक्रमों की सूचना शुद्ध हिन्दी में ही दी जानी चाहिए, अंग्रेजी की खिचड़ी में नहीं।

(१९) हिन्दी के समाचार-पत्र-पत्रिकाओं की भाषा शुद्ध हिन्दी होनी चाहिए।

(२०) हिन्दी के व्यवहार एवं प्रचार-प्रसार के लिए सभी नगरों में समि-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तियों या हिन्दीसेवी संस्थाओं का गठन, हिन्दी की उपेक्षा के विरोध में जन-सभाओं का आयोजन तथा प्रदर्शन होने चाहिए।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि हम सभी मिलकर उपयुंक्त ढंग से हिन्दी का प्रयोग तथा उसके प्रति उपेक्षा को रोकने का कार्य करें तो हमारी राष्ट्र-भाषा हिन्दी, हमारी भारतीय संस्कृति और हिन्दुस्थान तीनों समृद्ध होंगे तथा संसार में हम अपना खोया हुआ महान् गौरव पुनः शीघ्र ही प्राप्त कर लेंगे। अपने देश व प्रदेशों की सभी सरकारों तथा सभी हिन्दुस्थानियों से विनम्र निवेदन है कि हम सभी आज से ही अपना प्रत्येक कार्य हिन्दी में करने का प्रण करें तथा अपनी संस्कृति और राष्ट्र के उत्थान व रक्षा के पुनीत कर्तव्य में लग जाएं। यह महान् कार्य हम सभी देशवासियों के करने से ही पूरा होगा, एक-दो के करने से नहीं, क्योंकि राष्ट्रभाषा हिन्दी हम सभी भारत-वासियों की है। ★

(पृष्ठ २१ का शेष)

कारण है कि आर्यसमाज की यथेष्ट उन्नति नहीं हो रही, शुद्धि का काम भी इतना नहीं हो रहा, जितना आजकल होना चाहिये।

इसी लगन की कमी का कारण है कि हर एक काम मुट्ठी भर उपदेशकों पर निर्भर हो रहा है। यदि वे ही शुद्धि करें तो वेद-प्रचार हो। यदि वे काम करना छोड़ दें तो कुछ भी न हो सके। जहां देखो वहां से शिकायत मिलती है कि यहां उपदेशक नहीं पहुंचते, इसलिये काम बहुत थोड़ा होता है। आर्य-सभासदों को चाहिये कि वे जरा सोचें कि निर्धन आर्यसमाज कैसे इतने उपदेशक रख सकता है जो हर समय जगह-जगह पर प्रचार कर सकें। हजार यत्न करने पर भी एक भी उपदेशक योरुप, अमेरिका और जापान नहीं भेजा जा सका। सारी शक्ति सिद्धान्तों के प्रचार कार्य में लग रही है। हर तरफ से उसका विरोध हो रहा है। इस समय यदि जरूरत है तो इस बात की, कि प्रत्येक आर्य सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करके स्वयं प्रचार का काम करे। जहां वह रहता है, वहीं उसे यह भी काम करना चाहिए। यह काम केवल पुरुषों पर ही लागू नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे देवियों को भी खूब उत्साह से करना चाहिए। यदि दोनों साथ-साथ इस मंगल-कार्य में लग जायें, तो आज ही आर्यसमाज का बोलबाला हो सकता है। आर्यसमाज की आवश्य-कता को प्रत्येक मनुष्य जानता है। सारे देश में उसके सिद्धांतों को फैला देना आर्यों का कर्त्तव्य है। आशा की जाती है कि प्रत्येक आर्य भाई अपने इस अमूल्य कर्तव्य को समझते हुए उसे पूरा करने का प्रयत्न करेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उद्‌बोधन

—स्व. डॉ० भीमरावजी अम्बेडकर

"भारत शताब्दियों के बाद स्वाधीन हुआ है। अब इस स्वराज की रक्षा करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। अपने समाज में किसी प्रकार की फूट पुनः हमसे स्वराज छीन लेगी। शताब्दियों की गुलामी के परिणाम स्वरूप हममें कुछ विकृतियां, ऊंच-नीच का भेद' विषमता, पिछड़ापन, जातिवाद आदि भेदभाव उत्पन्न होंगे परन्तु इन्हें अपना हथियार बनाकर कोई विदेशी हमारे स्वत्वों का अपहरण करना चाहेंगे तो हम इसे सहन नहीं करेंगे। हम इनकी यह आकांक्षा मिट्टी में मिला देंगे। यह हमारा घरेलू मामला है इसलिए इसे हम आपस में निपटेंगे। अपने लाभ या सामाजिक दृष्टि से अवनत स्थिति से निकलने की इच्छा से हम किन्हीं विदेशियों के हस्तक नहीं बनेंगे। हमें अपने में पैदा होने वाले जयचन्दों से सावधान रहना होगा।"

इस्लाम या ईसाई मत स्वीकार करने से भारतीयता में अंतर

"हम लोग ईसाई या इस्लाम धर्म स्वीकार करेंगे तो हमारी भारतीयता में अन्तर आ जायेगा। हमारे सिर योरोशलम और मक्का-मदीना की ओर झुकने लगेंगे। यदि हम इस्लाम कबूल करते हैं तो मुसलमानों की संख्या दूनी हो जायेगी और देश के लिए मुस्लिम राष्ट्र बनने का खतरा पैदा हो जायगा। ईसाई धर्म ग्रहण करने से भारत में विदेशियों की सत्ता मजबूत होगी। सिख धर्म अवश्य भारतीय संत धर्म है। इसे ग्रहण करने से हमारी संस्कृति में अन्तर नहीं आता। सिख धर्म में सिद्धांत रूप से वर्णभेद नहीं है, परन्तु खेद है कि सिखों में भी जाति भेद घुसा हुआ है। जाट, अहलूवालिया, खाती, रमदसिया और मजहबी सिखों का भेदभाव है। बौद्ध धर्म ही इन सबकी अपेक्षा हमारे लिए अधिक उपयोगी और ग्रहणीय प्रतीत होता है। इसे ग्रहण करने में हमारी प्राचीन भारतीयता सुरक्षित रहेगी, इसमें जाति भेद नहीं है। इसमें न ईश्वर का झंझट है और न ईश्वरीय पुस्तक का आतंक। इसका विशाल साहित्य है। इसके समस्त विश्व में व्याप्त होने से विश्व बिरादरी के साथ हमारा भ्रातृभाव स्थापित होता है। इसकी भारतीय जलवायु में भारतीय परिस्थितियों के अनुसार उत्पत्ति हुई। इसके भारत में अनेक तीर्थ और स्मारक हैं। ब्राह्मणी पाखण्डवाद का इसमें बहुत सुन्दर रीति से सुन्दर शब्दों में खण्डन है। इसका आधार बुद्धिवाद है। आदि"

जाति-पांति तोड़ने के नाम पर हिन्दू धर्म के शाश्वत जीवन मूल्यों का विनाश नहीं, वरन् धर्म का रूप लेने वाली रूढ़ियों को तोड़ना ही उनका अभीष्ट था। उनका ध्येय था आत्म गौरव से परिपूर्ण हिन्दू समाज जीवन।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म परिवर्तन का अर्थ अपनी परम्पराओं का परित्याग नहीं

"हिन्दू धर्म लोगों में भेद करने वाला व विभाजन करने वाला कहा जाता है। इस्लाम लोगों को एक साथ बांधने वाला कहा जाता है। यह केवल अर्द्ध-सत्य है क्योंकि इस्लाम जैसे बांधता है वैसे ही निर्दयता से विभाजित भी कर देता है। इस्लाम एक बन्द संघ है और मुसलमानों तथा गैर-मुसलमानों में यह जो भेद करता है वह अत्यन्त और वास्तविक, पक्का और अलगाने वाला भेद है। इस्लाम का भ्रातृत्व विश्वव्यापी मानव समाज का भ्रातृत्व नहीं है। मुसलमानों का मुसलमानों के लिए भ्रातृत्व है। इसमें बन्धुत्व है, किन्तु उसका लाभ उन्हीं तक सीमित है जो इस संघ में हैं। जो इस संघ के बाहर हैं उनके लिए इसमें घृणा और शत्रुता को छोड़कर और कुछ नहीं है।

"इस्लाम का दूसरा दोष यह है कि वह सामाजिक स्वशासन की पद्धति और स्थानीय स्वराज्य से मेल नहीं खाता क्योंकि मुसलमानों की भक्ति किसी देश में, जो उसका है, उसमें स्थायी निवास करने पर नहीं, किन्तु मजहब पर आधारित होती है जिसे वह मानता है।"

निजाम हैदराबाद की विशाल धनराशि ठुकराते हुए डा० अम्बेडकर ने बड़े स्वाभिमान से कहा था—

"यदि सारी दुनिया की दौलत भी दे दी जाए तो भी मैं इस्लाम या ईसाई मजहब कभी स्वीकार नहीं करूंगा।" ▭

गोमहिमा

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ठ॥

ऋग्वेद में गौ को रुद्रों की माता और वसुओं की पुत्री कहकर सम्मानित किया गया है और उसे अघ्न्या कहकर उसकी रक्षा करने का उपदेश दिया गया है।

× × ×

भगवान् श्री कृष्ण जी ने कहा—

गावो मे अग्रतः सन्तु गावो में सन्तु पृष्ठतः।
गावो में हृदय सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

गाय आगे हों गाय हमारे पीछे हों, गाय हमारे हृदय में हों और गायों के मध्य में हमारा निवास हो।

× × ×

महात्मा गांधी ने गोहत्या को मनुष्य हत्या के समान बताया और गो रक्षा को स्वराज्य से अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न माना।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संविधान का २५वां अनुच्छेद : राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में

– डॉ० प्रशान्त वेदालंकार

२७ फरवरी १९८४ से अकाली दल भारतीय संविधान के २५वें अनुच्छेद को फाड़ रहा है। फाड़ने वाले जत्थों की गिरफ्तारियां भी हुई। पर ३१ मार्च १९८४ को अकस्मात् गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने यह घोषणा कर दी कि सरकार अनुच्छेद २५ में संशोधन को तैयार है। सारे देश में सरकार का इस बात के लिए विरोध हुआ। और यह माना गया कि "पंथ आजाद सप्ताह" के भय से सरकार ने घुटने टेक दिए हैं और संविधान का अपमान करने वाले लोगों को दण्डित करने के स्थान पर वह तुष्टीकरण की दब्बू नीति अपना रही है। अकाली दल ने भी इसका अर्थ यही लिया कि सरकार झुक गयी है। श्री लोंगोवाल ने तुरन्त कहा कि अब सरकार सिखों का पर्सनल लॉ भी बना दे। उन्होंने अखिल भारतीय सिख छात्र फैडरेशन से प्रतिबन्ध उठाने की मांग भी की। सबसे विचित्र बात यह है कि श्री सेठी के झुकते ही उग्रवादियों की गतिविधियां बढ़ गयीं और उन्होंने अमृतसर में भाजपा के हरबंस खन्ना तथा चण्डीगढ़ में नामजद संसद सदस्य प्रो० विश्वनाथ तिवारी की हत्या कर दी।

विरोधी दलों ने संसद में श्री सेठी को आड़े हाथों लिया, श्री सेठी से जवाब देते नहीं बना। उन्होंने बात थोड़ी बदली और कहा कि संविधान के २५ वें अनुच्छेद पर अभी कोई वायदा नहीं किया गया।

पृथक्ता की नींव

प्रश्न यह है कि यदि देश में मुसलमानों व ईसाइयों को संविधान द्वारा व्यक्तिगत कानून (पर्सनल लॉ) बनाने का अधिकार प्राप्त है और उससे वे लाभान्वित भी होते हैं, तो सिख उस प्रकार के लाभ को उठाने की बात क्यों नहीं सोच सकते ? जो संविधान धर्म निरपेक्षता, समाजवाद व समानता को अपना आधार मानता हो, वहां किसी भी धर्म अथवा सम्प्रदाय के व्यक्तिगत कानून का क्या औचित्य है ? यदि आज मुसलमानों व ईसाइयों के व्यक्तिगत कानून न होते तो अकाली दल भी इस प्रकार की मांग कभी न करता। देश को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यदि सिखों के हिन्दुओं से अलग होने की बात पृथकतावादी प्रवृत्ति प्रतीत होती है तो मुसलमानों व ईसाइयों के पृथक् रहने से भी विघटन की संभावना है, अतः उनके व्यक्तिगत कानून पर भी प्रश्नवाचक चिह्न लगना चाहिए। यदि अकाली दल संविधान के २५ वें अनुच्छेद से हिन्दुओं के साथ अपने नाम को हटाने व अपने व्यक्तिगत कानून की मांग के स्थान पर मुसलमानों व ईसाइयों के व्यक्तिगत कानून का विरोध करता तो उनका आन्दोलन देश में बल पकड़ता। पहले ही इस्लाम ईसाई या अन्य मजहब या पंथ के अनुयायियों के पृथक् कानून (पर्सनल ला) बना हम उन्हें राष्ट्र से अलग होने की खुली छूट दे चुके हैं। अब अकालियों को ऐसा कैसे करने देंगे ?

जब अन्य मुस्लिम राष्ट्र, यहां तक कि पाकिस्तान में भी मुसलमान एक ही पत्नी रखते हैं तो भारत में व्यक्तिगत कानून के नाम पर मुसलमान अनेक पत्नियां किस प्रकार रख रहे हैं ? २५वें अनुच्छेद के खण्ड-२ के अन्तर्गत व्यक्तिगत एवं सामाजिक मामलों में (यथा विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, सती प्रथा, बहुपत्नी विवाह, अस्पृश्यता, बहुपति विवाह जैसे मामलों में) अपनी धार्मिक मान्यताओं को पालन करने का कानून बनाने की पूरी आजादी या अनुमति है। पर सामाजिक प्रश्नों को धार्मिक बनाना कहां तक उचित है ?

उक्त अनुच्छेद के उपखण्ड-२ (ख) के अनुसार कृपाण धारण करना और लेकर चलना सिख धर्म का अंग माना गया है। हिन्दुओं को यह अधिकार प्राप्त नहीं है। मैंने एक बार श्री लोंगोवाल से कृपाण लेकर चलने के औचित्य पर प्रश्न पूछा तो वे बोले राम और कृष्ण के देश में हिन्दुओं को भी हथियार लेकर चलने का अधिकार होना चाहिए। वस्तुतः हथियार का सम्बन्ध किसी भी संप्रदाय की धार्मिक भावना नहीं हो सकता। जहांगीर ने मुसलमानों के अतिरिक्त किसी को भी तलवार रखने व घुड़सवारी पर रोक लगाई तो सिखों के छठे गुरु ने बगावत के लिए कृपाण धारण की थी और कुछ घुड़सवार रखे थे। तब यह उनकी आत्म-सुरक्षा के लिए अनिवार्य था। आज जबकि सारा देश एक है, किसी एक वर्ग के हथियार धारण करके चलने का कुछ भी औचित्य नहीं है। और यदि है तो यह सभी वर्गों व सम्प्रदायों के लोगों के लिए होना चाहिए।

अंग्रेज शासकों ने मुस्लिमों एवं सिखों को राष्ट्रीय धारा से अलग रखने का सदैव प्रयत्न किया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त हमारे संविधान व व्यवहार में उपसे भी अधिक वोट की राजनीति के कारण ईसाई, सिख व मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति रही है। इससे देश में साम्प्रदायिक तनाव व विघटन की प्रवृत्ति बढ़ी है। सिखों में अलगाव की वृत्ति भी उक्त रीति-नीति की नकल है। यदि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अकाली आन्दोलन के कारण राष्ट्र की भावात्मक एकता पर विचार करना है तो उक्त सभी अलगाववादी प्रवृत्तियों पर पुनर्विचार करना होगा।

मैं श्री लोंगोवाल तथा अन्य अनेक अकाली नेताओं से मिला हूं। वे अपने को हिन्दुओं से पृथक् रखने के जो कारण बताते हैं, उनमें से एक है कन्या के पिता की सम्पत्ति में उत्तराधिकारी होना। यह व्यवस्था केवल हिन्दुओं के लिए है। जब हिन्दू कोड बिल बना था, तब सारे हिन्दू समाज में उसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई थी। आर्यसमाजी, सनातन धर्मी सभी यह आवाज उठा रहे थे कि हिन्दू कोड बिल न लाया जाए। लड़की को पिता की संपत्ति में अधिकार का प्रावधान नितान्त अव्यावहारिक सिद्ध हुआ। आज भी हिन्दू लड़की अपने भाई के पक्ष में अपना अधिकार लिखकर दे देती है। जो नहीं देती वहां कोर्ट केस बन जाते हैं और भाई-भाई के वैमनस्य की तरह अब भाई-बहनों का वैमनस्य भी बढ़ा है।

सिख हिन्दुओं से अलग होकर हिन्दू कोड बिल की बुराइयों से बचना चाहते हैं। यदि हिन्दू कोड बिल विधवाओं के संरक्षण की व्यवस्था करता है तो बिना हिन्दू कोड बिल के प्रत्येक वर्ग की विधवाओं के स्वत्व की सुरक्षा का कानून बनाया जा सकता है।

हिन्दुओं से अलग होने का दूसरा कारण अकाली स्पष्ट नहीं बताते हैं। पर मजहबी सिखों ने उनकी नीयत का पर्दाफाश किया है। मजहबी सिखों के प्रतिष्ठित नेता और बाबा जीवनसिंह मजहबी दल के प्रधान सरदार हजारासिंह मजीठा ने सरकार को धमकी दी है कि यदि अनुच्छेद-२५ बदला गया तो वे आत्मदाह कर लेंगे। अर्थात् अकाली नेता अपने को हिन्दुओं से पृथक् करके मजहबी सिखों के आरक्षण को समाप्त करना चाहते हैं। पर मजहबी सिखों का स्पष्ट कथन है कि उक्त अनुच्छेद के समाप्त होने से पंजाब में सिख-जाट राज्य बन जाएगा।

नकारात्मक दिशा

वस्तुतः अकाली दल ने संविधान के २५वें अनुच्छेद की अवमानना करके कई विचारणीय प्रश्न हमारे सामने प्रस्तुत किए हैं। संसद् में व बाहर उन पर विचार होना चाहिए। यदि संविधान के २५वें अनुच्छेद को फाड़ने से अकाली आन्दोलन बदनाम हुआ है तो उसका कारण है उनका अपने को हिन्दुओं से पृथक् घोषित करना। इससे हिन्दुओं की भावना को आघात लगा है।

दूसरे उन्होंने अपनी मांग के लिए जिस असंवैधानिक तौर-तरीके को अपनाया है, उसका तो व्यापक विरोध होना ही चाहिए। राष्ट्रीय सम्मान कानून १९७१ के अनुसार संविधान या उसके किसी भाग को जलाना, उसमें हेर-फेर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करना, उसे विकृत करना, संविधान को फाड़ना आदि (चाहे वह हाथ से किया जाए या उसके बारे में मौखिक रूप से कहा जाए।) पुलिस के हस्तक्षेप योग्य अपराध है।

श्री प्रकाशसिंह बादल का कहना है कि उन्होंने केवल अपने अध्यक्ष की अनुमति का पालन करने के लिए ऐसा किया है। सरकार को अब तक अकाली दल के अध्यक्ष व उसके अन्य पदाधिकारियों को गिरफ्तार कर लेना चाहिए था। पर उनके गुरुद्वारों में बैठे होने के कारण सरकार ऐसा नहीं कर पा रही। इस दृष्टि से सिखों को विशेषाधिकार प्राप्त है कि उनके गुरुद्वारों में पुलिस प्रवेश नहीं करती। हिन्दू इस भेदभाव की आलोचना भी करते रहे हैं। यों लोंगोवाल शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के कार्यालय में रहते हैं। नानक निवास तथा यह कार्यालय स्वर्ण मंदिर से पृथक् है। यदि पुलिस चाहे तो वहां जा सकती है।

मैं अकाली दल से निवेदन करना चाहता हूं कि वे हिन्दू कोड बिल के दोषों को दूर करने के लिए विशाल हिन्दू समाज का भी सहयोग लें। सिख हिन्दुओं के ही अभिन्न अंग हैं, इस ऐतिहासिक मान्यता पर अनावश्यक रूप से प्रश्नवाचक चिह्न न लगाएं। अपने व्यक्तिगत कानून की मांग के स्थान पर मुसलमानों व ईसाइयों के व्यक्तिगत कानून का विरोध करें।

हिन्दू धर्म की विशेषताओं के मुख्य बिन्दु

—स्वामी सत्यदेव परिव्राजक

हिन्दू धर्म आशावादी है, निराशावादी नहीं
हिन्दू धर्म ज्ञानवादी है, अन्धभक्तिवादी नहीं
हिन्दू धर्म विकासवादी है, सम्प्रदायवादी नहीं
हिन्दू धर्म कर्मवादी है, भाग्यवादी नहीं
हिन्दू धर्म बुद्धिवादी है, विश्वासवादी नहीं
हिन्दू धर्म त्यागवादी है, भाग्यवादी नहीं
हिन्दू धर्म प्रजातंत्रवादी है, एकाधिपत्यवादी नहीं
हिन्दू धर्म ईश्वरवादी है, पैगम्बरवादी नहीं
हिन्दू धर्म अहिंसावादी है, हिंसावादी नहीं
हिन्दू धर्म अध्यात्मवादी है, प्रकृतिवादी नहीं
हिन्दू धर्म समाजवादी है, बोल्शेविकवादी नहीं
हिन्दू धर्म श्रद्धावादी है, दासतावादी नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिख पन्थ की स्थापना क्यों हुई ?

—सदाजीवतलाल चन्द्रलाल

यह केवल मात्र एक संयोग ही नहीं है कि हमारा देश आज वैसी ही विपत्तियों से घिरा है, जो उस काल में भी मौजूद थीं, जब गुरु तेगबहादुर ने 'कहु नानक इस विपद में टेक एक रघुनाथ' कहकर हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपना शीश कटवा दिया था तथा गुरु गोविन्दसिंह ने अपने शिष्यों को 'सकल मलेछ करो रण घात' तथा 'राम कथा जुग-जुग अटल सबको भाखन त्रेता, सुरगबास रघुबर किया, सगली पुरी समेत' का आवाहन देकर उन्हें हिन्दू धर्म के घोर शत्रु औरंगजेब से संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने अपने अनुयायियों में राष्ट्रीयता के भाव भरे, ताकि वे धर्म, सभ्यता, संस्कृति व गोमाता की रक्षा करने में समर्थ हो सकें।

हमारे देश की जितनी भी विशेषताएं हैं, वे सब हिन्दू राष्ट्र के नाते हैं। ऊपर से दिखायी देने वाले अनेक भेद यहां पर अवश्य हैं, किन्तु 'अनेकता में एकता' भी हमारे देश की एक प्रमुख विशेषता रही है।

यह एक अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण और शोचनीय बात है कि आज देश में राष्ट्र का भाव क्रमशः लुप्त होता जा रहा है। राष्ट्र की धारणा के अभाव में, हमारे शासक भी स्वार्थी, संकीर्ण मनोवृत्ति और दृष्टिकोण वाले हो गए हैं। सीमाएं शत्रुओं से त्रस्त हैं, और देश के अन्दर भी पंचमांगियों और पृथक्तावादियों का जाल बिछा हुआ है, किन्तु पारस्परिक कलहों तथा अपना घर भरने की प्रवृत्ति में ग्रस्त हमारे शासकों को न उनका पता है और न इस बात का कि उनकी अकर्मण्यता के कारण आये-दिन जो उपद्रव हो रहे हैं, वे हमारे राष्ट्र को उद्ध्वस्त करने के लिए पर्याप्त हैं। अन्य राष्ट्रों की दृष्टि में शांति के स्वयंभू दूत बनने की लालसा में हमारे शासनाधिरूढ़ नेताओं ने अहिंसा की ऐसी रामनामी ओढ़ ली है कि भांति-भांति के अपमान तथा भारी हानियां सहन कर भी वे अपनी इस तथाकथित छवि को अक्षुण्ण रखना चाहते हैं कि वे शान्ति और अहिंसा के पुजारी हैं। उन्हें अपने तथाकथित आदर्शवादी सिद्धांतों तथा मिथ्या मान्यताओं की रक्षा की चिन्ता राष्ट्र की रक्षा से कहीं ज्यादा है। वे बार-बार राष्ट्र की अखंडता को अक्षुण्ण रखने के अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं, क्योंकि उनके मस्तिष्क में न तो राष्ट्र का चित्र ही स्पष्ट है और न उसके प्रति अपने कर्तव्य का। इसी कारण वे ऐसे अनेक राष्ट्रघाती कार्य करते रहते हैं या कुछ भ्रान्त देशवासियों को करने देते हैं, जिनसे राष्ट्र दुर्बल होता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सच तो यह है कि हमारे बहुत-से अज्ञानी शासनाधिरूढ़ नेताओं को यह भी पता नहीं है कि "राष्ट्र" होता है ? वे लोगों की भीड़ को ही राष्ट्र मानते हैं। कभी-कभी दंभवश वे यह हास्यास्पद घोषणा भी करते हैं कि "हम एक नये राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं, जैसे उनसे पहले "राष्ट्र" था ही नहीं, या था भी, तो बड़ा अशक्त और अधूरा था।

अंग्रेजों ने जब तक हमारे देश पर शासन किया, वे एक सुनियोजित प्रचार से हमारे राष्ट्र को नष्ट करने में लगे रहे। इसी उद्देश्य से उन्होंने हमारे अन्तरतम में सदियों से जाग्रत राष्ट्र-भावना को भी नष्ट करने का सतत प्रयास किया और इस प्रयास में आंशिक रूप से सफल भी रहे। उनकी शिक्षा पद्धति तथा रहन-सहन के ढंग से प्रभावित होकर हम यह भूल गये कि हिन्दू राष्ट्र की ऐतिहासिक परम्परा वैदिक काल से चली आ रही है और हमारे पूर्वजों ने रक्त-बिन्दु से उस अविच्छिन्न शक्ति-धारा को सींचा है, जो सहस्रों वर्षों से वैदिक ऋषियों से आरम्भ होकर भगवान् श्री राम, भगवान् श्रीकृष्ण, बुद्ध, महावीर, विक्रमादित्य, शंकराचार्य, पृथ्वीराज, प्रताप, शिवाजी, गुरु नानक, गुरु गोविन्दसिंह, दयानन्द, विवेकानन्द, तिलक, गांधी आदि राष्ट्रीय पुरुषों के रूप में इस राष्ट्र के अन्तराल में अनवरत बह रही है।

वेदों ने "सहस्रशीर्षा पुरुषःसहस्राक्षः सहस्रपात्" कहकर जिस विराट् पुरुष का वर्णन किया है, वह हमारे राष्ट्र में कभी गुरु नानक तथा संत रामदास जैसे संतों के रूप में और कभी गुरु गोविन्दसिंह और शिवाजी जैसे वीर योद्धा के रूप में अवतरित होता है और हिन्दू राष्ट्र में नवजीवन का संचार करता रहा है। इन विराट् पुरुषों को यह अनुभूति थी कि गंगा, गाय, वेद, ब्राह्मण तथा अनेक तीर्थस्थल इस राष्ट्र के आस्था-बिन्दु हैं और देववाणी संस्कृत उसकी प्रिय भाषा है। उनके सामने राष्ट्र की यह धारणा एकदम सुस्पष्ट थी कि राष्ट्र एक ऐसे मानव-समूह को कहते हैं, जिसकी अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परम्परा हो, अपना एक निश्चित, सीमांकित भू-प्रदेश हो, जहां उसके पूर्वज वर्षों से रहते आये हों और जिस भू-प्रदेश को वह मानव-समूह 'मातृभू पितृभू' (मातृभूमि, पितृभूमि) समझता हो।

उनके मस्तिष्कों में हिन्दू राष्ट्र का यह स्पष्ट चित्र तो अंकित था ही, इस राष्ट्र के प्रति, राष्ट्रीय सन्दर्भ में, उन्हें अपने कर्तव्य का ज्ञान भी था।

ये विराट् पुरुष हमारे वर्तमान नेताओं के समान राष्ट्र में एकता स्थापित करने के उपाय राष्ट्रीय एकता परिषद् की सभाओं में नहीं खोजते थे, क्योंकि वे धर्मसत्ता (भावात्मक राष्ट्रीयता) को राजसत्ता से सौ गुना अधिक महत्त्वपूर्ण समझते थे। उनकी दृष्टि में एक संत का महत्त्व एक सम्राट् की अपेक्षा कहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिक था। राष्ट्र उनके लिए अधिक महत्वपूर्ण था, राज्य नहीं। [illegible] है।
'वाले ऋषियों के चरणों में नतमस्तक होने में गौरव अनुभव करते थे और उन्हीं से इन विराट् पुरुषों को प्रेरणा तथा आदेश-निर्देश मिलते थे।

लेकिन, आज हमारा राष्ट्र दुर्बल हो रहा है। इसके लिए मुख्य रूप से वही लोग जिम्मेदार हैं, जिनके हाथों में राष्ट्र की बागडोर है। उन्होंने राष्ट्र को भुला दिया है, और भ्रष्ट राजनीति की ओर बढ़ते जा रहे हैं।

राष्ट्रीय संस्कार न होने के कारण आज गुरु नानक तथा गुरु गोविन्दसिंह जैसे महान् राष्ट्रीय हस्तियों के वंशज भी भ्रांतियों के जाल में फंसकर अपनी सम्पूर्ण शक्ति राष्ट्र को खंडों में विभक्त करने में लगा रहे हैं।

आज अपनी राष्ट्रविरोधी राजनीति के कारण सिखों ने जिनके गुरुओं ने हिन्दू धर्म और हिन्दू राष्ट्र को बलशाली बनाने के लिए अपने प्राणों की बलि देने में भी कोई संकोच नहीं दिखाया था, पंजाब की राजनीति को, जिसमें बारूद की गंध तेजी से घुलती जा रही है, एक खतरनाक मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है। जो कुछ आज पंजाब में घट रहा है, उसके लिए अकाली दलों की दिशाहीन तथा विकृत राजनीति, जिसे अमरीका, कनाडा और पाकिस्तान का प्रच्छन्न आर्थिक तथा राजनैतिक समर्थन प्राप्त है, तो जिम्मेदार है ही, सत्तारूढ़ दल का अंतर्संघर्ष और सिख राजनीति से लाभ उठाने की प्रवृत्ति भी कम दोषी नहीं है।

सच तो यह है कि जमाते इस्लामी, उत्तर-पूर्व भारत में धर्म तथा समाज-सेवा के नाम पर ईसाई मिशनरियों की भारत-विरोधी भूमिका तथा अकालियों के उग्रपंथी नेता, ये सभी पृथक्तावादिता के अलग-अलग चेहरे-भर हैं। इनकी बुनियादी भूमिका एक जैसी है। १९७१ की इन्दिरा गांधी और १९८२ के प्रकाशसिंह बादल तथा अन्य दलों के नेताओं में यह एक बात सामान्य है कि ये सभी राष्ट्र-हित को भूलकर अपने-अपने लाभों के लिए पंजाब में संकीर्ण मनोवृत्ति की राजनीति को हवा देते रहे हैं और अकाली राजनीति के अक्षम्य अपराधों को अपनी सुविधा के लिए नजरअंदाज करते रहे हैं।

हमारे राष्ट्र का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी देश पर विदेशी आक्रमणकारियों ने आक्रमण किया, हमारे संतों ने जनता को जाग्रत करने तथा उसमें एकात्मता स्थापित कर, उसे आक्रमणकारियों का सामना करने की प्रेरणा प्रदान कर, अपने राष्ट्रीय कर्तव्य की पूर्ति की थी।

सिख गुरुओं की परम्परा विश्वामित्र, वसिष्ठ, शंकराचार्य, चैतन्य, तुलसी, सूरदास, ज्ञानेश्वर, नरसी, तुकाराम, रामदास प्रभृति की राष्ट्र को एकात्मता और धार्मिक परम्पराओं में बांधने की संत-परम्रा ही तो थी। इसी परम्परा ने स्वयं को गुरु नानक से लेकर गुरु गोविन्दसिंह तक दस गुरुओं के रूप में प्रकट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया। जब विधर्मी हिन्दू धर्म को नष्ट करने पर तुले थे, तब गुरुओं ने ही भारतीय संस्कृति तथा हिन्दू जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए अपना बलिदान किया था।

इसी कारण कवि दिनकर ने 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक अपनी पुस्तक में लिखा है, "सिखों का सारा इतिहास हिन्दुत्व के लिए तड़प, सहानुभूति और दर्द से परिपूर्ण है।"

राममय गुरु ग्रन्थ साहिब

'सखों को 'पृथक् राष्ट्र' कहने का दावा करने वाले अकाली नेताओं को क्या यह याद दिलाना पड़ेगा कि गुरु ग्रंथ साहिब के प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर 'राम' नाम पढ़ने को मिलता है ? क्या उन्हें गुरु नानक की इस उक्ति की याद दिलाने की आवश्यकता है, जिसमें उन्होंने कहा है कि हर मानव को इन तीन मार्गों पर चलना चाहिए : पहला : 'सच कह।' दूसरा : वंड चख' (औरों के साथ बांटकर खा, भौतिक सुविधाएं को अकेले मत भोग) तीसरा : राम जप।"

वस्तुतः सिख पंथ हिन्दू धर्म की निर्गुण भक्ति-धारा की ही सशक्त अभिव्यक्ति है। हिन्दू धर्म की मूर्छित चेतना गुरु नानक तथा अन्य गुरुओं की निर्गुण भक्ति साधना से जीवंत होकर मुस्करा उठी थी। हिन्दी के प्रसिद्ध इतिहास-लेखक डाक्टर पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल के अनुसार "नानक हिन्दू धर्म के उद्धारक और सुधारक होकर अवतरित हुए थे।"

'सिखों के उत्थान और पतन' के लेखक नन्दकुमार शर्मा का भी मत है कि "हिन्दुओं की रक्षा के लिए ही सिख मत का जन्म हुआ था।" एक सिख लेखक डा० हरभजनसिंह ने भी स्वीकार किया है कि "नानक मार्ग का उद्देश्य पंजाब की सम्पूर्ण हिन्दू जाति को संगठित करना और उनकी आधिभौतिक और आध्यात्मिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करना रहा है।"

अकाली नेता प्रायः यह मिथ्या प्रचार करते रहे हैं कि अंग्रेज इतिहास लेखकों ने सिखों को हिन्दू नहीं माना है। उनके इस मिथ्या प्रचार के खंडन में हम ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित 'हिन्दुत्व का इतिहास' नामक ग्रंथ के पृष्ठ ३६६ की ओर उनका ध्यान दिलाना चाहेंगे। उस में स्पष्ट लिखा है, "सिख सुधारवादी हिन्दुओं का एक पंथ था, जिसकी स्थापना गुरु नानक ने की थी। तथा उनके बाद आने वाले नौ गुरुओं ने उसे सुदृढ़ बनाया।"

अकाली नेता यह भी गलत प्रचार करते रहते हैं कि अंग्रेजों ने विभाजन के समय उन्हें स्वतन्त्र सिख राज्य देना स्वीकार कर लिया था, लेकिन सरदार पटेल जैसे हिन्दू नेताओं के कारण यह स्वतन्त्र सिख राज्य नहीं बन पाया। हाल ही में ट्रांसफर आफ पावर (सरकारी प्रकाशन) नाम की जो पुस्तक विभाजन-काल के सम्बन्ध में प्रकाशित हुई है, उसमें इस मिथ्या प्रचार का स्पष्ट शब्दों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में पर्दाफास किया गया है और बताया गया है कि स्वयं सिख नेता इसके विरुद्ध थे।

'जगे धर्म हिन्दू, सकल भण्ड भागे'

गुरु गोविन्दसिंह ने जब 'जगे धर्म हिन्दू, सकल भण्ड भागे' (हिन्दू धर्म को जाग्रत होना चाहिए, तब सब झूठे धर्म स्वयं भाग जायेंगे) का घोष किया था, तब वे एक ऐसे हिन्दू नेता के रूप में ही बोल रहे थे, जिसके मन में हिन्दू धर्म का ऊंचा डंका बजे, यह कामना थी। यदि वे स्वयं को हिन्दू धर्म से पृथक् मानते, तो ऐसी कामना क्यों करते ?

और जब उन्होंने 'धर्म चलावन, संत उबारन, दुष्ट सभन को मूल उपारन' की घोषणा की थी, तब भी उनके मन में यही बात थी कि हिन्दू धर्म की रक्षा हो, उसका उत्थान और प्रचार हो।

अपने पिता गुरु तेगबहादुर के बलिदान का वर्णन गुरु गोविन्दसिंह ने इन शब्दों में किया था—

'तिलक जंजू राखा प्रभु ताका,
कीनो बड़ो कलू महि साका।'

(अर्थात्, मेरे पिता का बलिदान हिन्दू सभ्यता और धर्म के प्रतीक तिलक और यज्ञोपवीत की रक्षा के निमित्त हुआ। उन्होंने कलियुग में भारी संग्राम किया और अपने देह रूपी मिट्टी के बर्तन को औरंगजेब के सिर पर फोड़कर प्रभु-लोक को प्रस्थान किया।)

'ठीकरि फोरि दिल्ली सिर प्रभु पुरि किया प्रयान।
तेगबहादुर सी क्रिया, करी न किन्हू आन।'

जिनके गुरुओं ने कभी हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी, वे आज अपने को हिन्दू तक कहलाने को तैयार नहीं हैं, इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है ?

गुरुओं का बलिदान व्यर्थ न जाये और हिन्दू राष्ट्र अक्षुण्ण रहे, इसके लिए हमें समय रहते, कुछ करना होगा।

हमें पुनः उस पथ पर अग्रसर होना होगा, जिस पर हजारों वर्ष चलकर हिन्दू राष्ट्र एक अमर और मृत्युंजयी राष्ट्र बना था। हमें स्वयं को तथा अपने बच्चों को अदम्य राष्ट्र-प्रेम का पाठ सिखाना होगा तथा अपने और अपने बच्चों के मस्तिष्कों में भावात्मक राष्ट्रीयता भरनी होगी, ताकि हमारी और उनकी सब भ्रांतियां दूर हो सकें और वे राष्ट्र-प्रेम के निश्चित लक्ष्य की ओर चलने के लिए प्रेरणा पा सकें। हम उस लक्ष्य को भूल गए हैं, तथा उसका पुनः स्मरण तथा उसके अवलम्बन का मार्ग पकड़कर ही हम अपने राष्ट्र को पुनः अमर राष्ट्र बना सकेंगे। ०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म-निरपेक्षता के नाम पर पृथक्ता

—हरमोहनलाल

असम के मुख्यमन्त्री श्री हितेश्वर सेकिया ने कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में खुले रूप में घोषणा की कि सरकार की अल्पसंख्यकों को संरक्षण देने की नीति के अधीन उनकी सरकार ने राज्य में मुस्लिम जनसंख्या के अनुपात में उनके लिए सेवाओं में २४ प्रतिशत स्थानों को आरक्षित करने का निश्चय किया है। जिस 'कम्युनल अवार्ड' के विरुद्ध गांधी जी ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी, उन्हीं के अनुयायी उसे लागू करें यह कैसी विडम्बना है।

जाति-धर्म के आधार से ऊपर उठकर धर्मनिरपेक्षता पर चलने का दावा करने वाली कांग्रेस (इं.) के अधिवेशन में ऐसी घोषणा आश्चर्यजनक है ही लेकिन किसी भी धर्मनिरपेक्षतावादी द्वारा इसका विरोध न किया जाना और भी अधिक आश्चर्यजनक है। १९६१-७१ की जनगणना के दशक में असम में मुस्लिम जनसंख्या में वृद्धि ३४.७० प्रतिशत की दर से हुई जबकि हिन्दुओं की वृद्धि दर, बंगला देश से हिन्दुओं के भी बड़ी संख्या में आने के बावजूद, २३ प्रतिशत ही। १९८१ में असम में हिन्दू-मुस्लिम जनसंख्या के भी आंकड़े सरकार ने किसी कारण से प्रकाशित नहीं किये, क्या मुस्लिम जनसंख्या में वृद्धि के साथ उनके लिए आरक्षण प्रतिशत भी बढ़ता जायेगा ? इस प्रकार आरक्षण निश्चत रूप से देश के विभाजन में सहायक होगा, मिलाने में नहीं। श्री सेकिया की इस घोषणा ने इस देश के बहुप्रचारित धर्मनिरपेक्षतावाद को एक नई दिशा दी है। इसे धर्म-निरपेक्षता की उल्टी गंगा बहाने की संज्ञा ही दी जा सकती है।

यह कैसी धर्मनिरपेक्षता ?

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद नया भारतीय संविधान २६ जनवरी १९५० से लागू किया गया। इसके बाद भारतीय राजनेताओं द्वारा देश की उन्नति, प्रगति और समृद्धि के लिए दिए गए भाषणों और आह्वानों में भारत की धर्मनिरपेक्षता की नीति पर सदा बल दिया गया। यद्यपि संविधान में सभी नागरिकों को धर्म, जाति, लिंग आदि के भेदभाव के बिना मूलभूत अधिकार एवं समान अवसर प्रदान किए गए हैं तथापि सम्भवत: इस धर्मनिरपेक्षता की नीति में कहीं कोई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कमी समझी गई जिसके कारण १९७५-७६ में आपातकाल में संविधान में एक विशेष संशोधन कर संविधान की उद्देशिका में 'सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" वाक्य में गणराज्य से पूर्व 'धर्मनिरपेक्ष' जोड़कर उसे "सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न लोकतन्त्रात्मक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य" किया गया।

इस संशोधन के बाद यह आशा बंधी कि अब सरकार दृढ़ता से धर्मनिरपेक्षता की नीति पर चलेगी क्योंकि इससे पूर्व जहां हिन्दू सरकार पर मुस्लिम तुष्टीकरण का आरोप लगाते थे वहां मुसलमान सरकार पर उत्पीड़न और मुस्लिम विरोधी होने का आरोप लगाते थे।

परन्तु स्थिति का सप्रमाण विश्लेषण किया जाये तो अनेक ऐसी बातें सामने आती हैं जिनसे पता चलता है कि सरकार ही, जिस पर धर्मनिरपेक्षता की व्यवस्था को बनाये रखने का उत्तरदायित्व है, इसका सर्वाधिक उल्लंघन करती रही है। लोकतन्त्रात्मक आम मतदान प्रणाली के अधीन सभी राजनीतिक दलों ने मत बटोरने के लिए जातीयता और साम्प्रदायिकता बढ़ाने में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की ही कोशिश की है।

विभाजक इतिहास की पुनरावृत्ति

पाकिस्तान की स्थापना का इतिहास साक्षी है कि मुस्लिम नेताओं ने सर्वप्रथम अपने लिए कुछ विशेष अधिकारों की, पृथक् मतदान और विधायिका में अलग सीटों की मांग की थी। यह प्रयास अपने को विभिन्न, विशिष्ट एवं पृथक् करने का ही एक उपाय था। इसी उपाय को और व्यापक रूप देकर मुसलमानों ने अपने को अलग राष्ट्र के रूप में रखा और दुःखद परिस्थितियों के बाद देश का साम्प्रदायिक आधार पर विभाजन हो गया।

अब इसी इतिहास की पुनरावृत्ति हो रही है। ५ नवम्बर, १९८१ को सभी दलों के मुस्लिम सांसदों ने, जिनमें कांग्रेस (इं.) के सांसदों तथा जनता पार्टी के महामन्त्री श्री सैयद शहाबुद्दीन ने प्रमुख भूमिका निभाई, प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को ज्ञापन देकर विश्व हिन्दू परिषद् और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे हिन्दू संगठनों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की मांग के साथ समाचार-पत्रों पर अंकुश लगाने, पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन करने और पुलिस व सेना में मुस्लिम प्रतिनिधित्व बढ़ाने की मांग की। श्री शहाबुद्दीन एण्ड कम्पनी ने विधान सभाओं, मन्त्रिमण्डलों और उच्च पदों पर भी अधिक मुस्लिम प्रतिनिधित्व की जोर-शोर से मांग शुरू कर दी है। यह एक भयंकर विघातक और विभाजक भूमिका है।

दुर्भाग्य से सरकार ने गत इतिहास को भुलाकर पुनः मुस्लिम सांसदों की मांगों के आगे घुटने टेक दिए और एकदम इतिहास की पुस्तकों में संशोधन करने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का आदेश जारी कर दिया। इतिहास की पुस्तकों में संशोधन के लिए जो समिति बनी, उसमें १५ में से इतिहासज्ञ केवल तीन ही थे। इसी प्रकार पुलिस व केन्द्रीय सुरक्षा पुलिस बल में भी मुस्लिमों की (योग्यता नहीं अपितु साम्प्रदायिक आधार पर) भर्ती की गई। २३ फरवरी, १९८३ को श्री सेठी ने लोकसभा में बड़े गर्व से घोषणा की कि इस प्रकार की ५ सी० आर० पी० बटालियन गठित की गई हैं जिनके सदस्य मिश्रित (कम्पोजिट) अर्थात् हिन्दू और मुसलमान, दोनों हैं।

इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय है कि जमायते उलमाये हिन्द ने, जिसे राष्ट्रवादी मुस्लिम संगठन समझा जाता है, श्री शाहनवाज खां के नेतृत्व में 'मुल्क ओ मिल्लत बचाओ तहरीक' छेड़ने की धमकी दी थी। इसने प्रधानमंत्री को जो ज्ञापन दिया था उसकी कुछ मांगें उल्लेखनीय हैं। इससे पता चल जाएगा कि तथाकथित राष्ट्रवादी मुसलमान का भी क्या दृष्टिकोण है। जो कठमुल्ला (फण्डामेंटलिस्ट) मुसलम न हैं उनका तो कहना ही क्या ? इसमें एक मांग यह थी कि पी. ए. सी. और सी. आर. पी० एफ में मुसलमानों के लिए ३० प्रतिशत स्थान निर्धारित किये जाएं, सरकारी नौकरियों में से संघ के सदस्यों को चुन-चुन कर निकाला जाए और संविधान में समान सिविल कोड लागू करने की व्यवस्था को समाप्त किया जाये। यह मांग भी मुसलमानों को पृथक् करने की दिशा में ही एक कदम है।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमन्त्री से ९ मई को जमीयत का एक प्रतिनिधिमंडल मिला था जिसमें उन्होंने आरक्षण की मांग की थी। ३ दिन बाद ही प्रधानमन्त्री ने १२ मई को एक विशेष निर्देश देकर राज्यों से सरकारी सेवाओं और सरकारी स्वशासी प्रतिष्ठानों में मुसलमानों की भर्ती में विशेष ध्यान (कंसिडरेशन) देने को कहा था। श्री सेठी ने २१ मई को इन्दौर में कहा कि सरकार मुसलमानों के लिए सेवा में आरक्षण पर विचार कर रही है। विश्व हिन्दू परिषद् ने इसका विरोध करते हुए श्री सेठी को पत्र लिखा था पर श्री सेठी ने इसका कोई खण्डन नहीं किया, न पत्र का कोई उत्तर ही दिया।

अब श्री सेकिया की यह घोषणा इस धर्मनिरपेक्षता की नीति के पालन में एक नया अध्याय है। इससे सभी सम्प्रदायों के लिए आरक्षण की मांग के द्वार खुल गए हैं। इससे देश एक नहीं अनेक क्षेत्रों, धर्मों और भाषाओं में विभक्त हो जाएगा

घातक घोषणा

विश्व हिन्दू परिषद् ने जो हिन्दुओं की शीर्ष संस्था है तथा जो यह सम-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भती है कि हिन्दुओं की उदारता व सहिष्णुता के कारण ही यह देश धर्मनिरपेक्षता को अपना रहा है, जातीय आधार पर इस प्रकार के आरक्षण का पुनः तीव्र विरोध किया है और उसने इस सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री को पत्र लिखा है।

निश्चित रूप से इस प्रकार की घोषणाओं की हिन्दुओं पर तीव्र प्रतिक्रिया होगी और सरकार के साम्प्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के उद्देश्य को धक्का पहुंचेगा। सरकार के इस प्रकार के प्रयास हिन्दुओं के मानस को विक्षुब्ध करने वाले हैं तथा यह विक्षोभ सरकार को अपनी नीति ठीक करने के लिए एक चेतावनी है।

सही चिन्तन की जरूरत

धर्मनिरपेक्षता की नीति में मुख्य भूल हिन्दुओं को एक धार्मिक समूह मान लेना है। "हिन्दू" की मुसलमान या ईसाई की व्याख्या से तुलना नहीं की जा सकती। 'हिन्दू' शब्द से किसी एक ही धर्म या पूजा-पद्धति मानने वालों की व्याख्या नहीं की जा सकती; यह तो एक ही इतिहास और संस्कृति में बंधे इस देश के राष्ट्रिकों की ओर संकेत करता है। इस बारे में ११ सितम्बर १९८२ को रामकृष्ण मिशन युवक सम्मेलन में प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा दिए गये भाषण का यह अंश उल्लेखनीय है—

"स्वामी जी (विवेकानन्द जी) ने यह ठीक ही कहा है कि 'हिन्दू' शब्द का मूल अर्थ भारतीय से था। यह ठीक है कि उस समय भारत वह भारत नहीं था जिसे हम वर्तमान रूप में जानते हैं। उस समय जैसी भी स्थिति थी 'हिन्दू' शब्द प्रत्येक भारतीय के लिए था। यूरोप में भी एक दीर्घ समय तक 'हिन्दू' शब्द से इस देश के सभी धर्मों को मानने वाले आ जाते थे। मुझे स्मरण है, जब मैं १९३५ में यूरोप गई थी, तब भी वहां के लोग मुसलमानों को भी हिन्दू कहते थे। वे पूछते थे, आप हिन्दू हैं? बतलाइये कौन-से हिन्दू हैं, मुसलमान हिन्दू हैं या वेदान्ती हिन्दू या कोई और ?

हिन्दू कोड कानून में बौद्ध, जैन, सिख आदि सभी को हिन्दू माना गया है; पर अल्पसंख्यकों के रूप में इन सबको अल्पसंख्यक माना गया है। इससे भी स्पष्ट है कि हिन्दू एक ऐसी बड़ी इकाई का नाम है जिसमें अन्य कई छोटी इकाइयां मिल कर एक बड़ा रूप धारण कर लेती हैं।

यदि इन इकाइयों के लिए आरक्षण शुरू कर दिया गया तो इतनी इकाइयां उभरेंगी कि आरक्षण एक जंजाल हो जायेगा और इस जंजाल से जो अराजकता, अविश्वास, ईर्ष्या व द्वेष की लहर उठेगी वह सारे देश को अपना ग्रास बना लेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

द्विराष्ट्रवाद के सिद्धांत से १९४७ में देश का विभाजन हुआ। क्या पुनः अल्पसंख्यकों का आरक्षण वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुराष्ट्रवाद को जन्म देकर भया-वह परिणामकारी नहीं होगा ?

गांधी जी का दृष्टिकोण

इस सम्बन्ध में गांधी जी के अनुयायियों के लिए यदि उनकी दृष्टि से गांधी जी की प्रासंगिकता आज भी उपयोगी है, तो उनके निम्न विचार का पुनः स्मरण सम्भवतः उनकी आत्मा को कुछ मार्ग-दर्शन दे सकता है।

"जहां तक सरकारी विभागों में नौकरियों का प्रश्न है, मेरे विचार में यदि हम उसमें साम्प्रदायिक भावना का समावेश करते हैं तो वह किसी अच्छी सर-कार के लिए बहुत घातक होगा। कार्यकुशल प्रशासन के लिए उसका योग्य हाथों में होना आवश्यक है। इसमें निश्चत रूप से कोई पक्षपात नहीं होना चाहिये। यदि हमें पांच इन्जीनियर चाहिए तो हमें प्रत्येक सम्प्रदाय से एक-एक नहीं लेना चाहिये अपितु योग्यतम पांच व्यक्तियों को लेना चाहिए—चाहे वे सबके सब मुसलमान हों या पारसी।...पदों का वितरण कभी भी प्रत्येक सम्प्रदाय की जनसंख्या के अनुपात में नहीं होना चाहिये।.. वे लोग जो इस देश की सरकार के उत्तरदायी पूर्ण पदों की आकांक्षा रखते हैं, वे तभी इन्हें प्राप्त कर सकते हैं यदि वे आवश्यक कसौटी पर खरे उतरें।"

(देखें डी० जी० तेन्दुलकर द्वारा सम्पादित 'महात्मा' खण्ड-२)

गांधी जी के इतने स्पष्ट निर्देश के बाद भी सरकार द्वारा साम्प्रदायिक आधार पर किये जाने वाले आरक्षण को क्या कहा जाये ? क्या गांधी जी हमारे आदर्श नहीं रहे ? क्या जिन्ना आदर्श हो गये हैं ?

श्रीमती राकेशरानी जी,

श्री महात्मा वेदभिक्षु जी के असामयिक निधन का शोकपत्र पढ़कर अति दुःख हुआ। सृष्टि के कर्ता धर्ता उस भगवान् की लीला अगम्य व अपरम्पार है। उसमें स्वल्पशक्ति जीव का दखल नहीं। परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि उनके पारिवारिक जनों को इस दारुण दुःख के सहने की शक्ति दे तथा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके कार्य को अबाध गति से चालू रखा जायें।

गरीबदासी साधु आश्रम, हरिद्वार — भगवद्दत्त वेदालंकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य ५००)
२.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	५०)
३.	वेद ज्योति	१५)
४.	वेदांजलि : ३६५ मंत्रों की प्रेरक व्याख्या	३०)
५.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या— पं० चमूपति)	१५)
६.	ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में : क्षितीश वेदालंकार	१५)
७.	संस्कारविधि: [सजिल्द]	१५)
८.	सरस्वतीन्द्र जीवन चरित्र (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	३०)
९.	अग्निहोत्र दर्पण (डा० रामनाथ वेदालंकार)	२०)
१०.	सत्यार्थ-प्रकाश (१० —१५ इंच) स्थूलाक्षर	१५१)
	,, ,, आर्ट पेपर पर	२५१)
११.	ज्योति स्तम्भ :	१०)
१२.	वैदिक सम्पत्ति	८१)
१३.	योगासन :	२)
१४.	योग और ब्रह्मचर्य :	३)
१५.	Concept of God	५०)
१६.	श्रीमद्दयानन्दप्रकाश :	२५)
१७.	LIGHT OF TRUTH	५०)
१८.	प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर शास्त्री	६)
१९.	अथर्ववेद परिचय :	६)

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं।

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, पो० ऑ० अलीपुर, दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हुतात्मा प्रद्योत : क्रांति की जोत

मेदिनीपुर में जगह-जगह दीवारों पर एक पर्चा चिपका हुआ था। इसमें कहा गया था "सुखलिया क्षेत्र में कांग्रेसी कैदियों पर भारी अत्याचार किए जा रहे हैं। डगलस, क्या यह सब तुम्हारे हुक्म से हो रहा है ? क्या इस बात की तुम्हें जानकारी नहीं है ? अब हम इस जुल्म से निपटने के लिए खुद ही कदम उठाना चाहते हैं। डगलस, यदि तुमने कोई ठोस स्पष्टीकरण नहीं दिया तो फिर……। हम कुछ दिन तक इंतजार करेंगे कि पुलिस द्वारा किया जा रहा जुल्म बंद होता है या नहीं। यदि पुलिस के रवैये में सुधार नहीं हुआ तो फिर हमें कार्रवाई करनी ही पड़ेगी। और डगलिस, तुम याद रखो कि नतीजा तुम्हें भी भुगतना पड़ेगा।"

यह पर्चा प्रकाशित हुआ था मेदिनीपुर की ब्रिटिश विरोधी समिति की ओर से। पर्चा स्थान-स्थान पर चिपकाया ही नहीं गया था—अपित डगलस को भी भिजवा दिया गया था। जिलाधीश था डगलस—गोरा चिट्टा अंग्रेज

यह पर्चा मिलते ही डगलस की नींद हराम हो गई। उसने पुलिस और गुप्तचर विभाग को आदेश दिया कि पता लगाओ कि ब्रिटिश विरोधी समिति के सूत्रधार कौन हैं और कहां हैं। गिरफ्तारियों का दौर और तेज हुआ। समिति का तो कोई सदस्य हाथ नहीं आ पाया लेकिन कुछ नौजवानों को पुलिस ने पकड़ ही लिया।

पुलिस वालों द्वारा दिखायी गई सतर्कता का भी खास कारण था। क्योंकि उसे यह पता था कि इस पर्चे में जो धमकी दी गई है वह कोरी धमकी नहीं थी बल्कि धमकी देने वालों के दृढ़ निश्चय का प्रतीक थी। क्योंकि डगलस से पहले के जिलाधीश जे० पेडी को क्रांतिकारियों की टोली अप्रैल १९३१ में मुल्के अदम का रास्ता दिखा चुकी थी।

इस चुनौती भरे पर्चे ने डगलस की नींद हराम कर दी। जिलाधीश के रूप में प्रशासन का भार संभालने के तीन-चार महीने बाद अर्थात् अगस्त १९३१ में ही उसने अपने भाई को एक पत्र में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिखा था "मेरा जीवन सचमुच ही संकट में है।"

डगलस का भाई राजमहेन्द्री क्कालेज का प्राचार्य (प्रिन्सिपल) था।

बंगाल का वातावरण क्षोभ और रोष से भरा हुआ था। वहां शांति स्थापना के सभी प्रयास निरर्थक साबित होते जा रहे थे। जिस प्रकार पुजारी अपने देवता के प्रति अनुराग रखता है, उसी तरह बंगाल के युवा क्रांतिकारी आजादी की रूठी रमणी को रिझाने के लिए रक्त का फाग खेलने को प्रतिपल, प्रतिक्षण तैयार रहते थे। आजादी के लिए मरण या मौत रूपी वधू का वरण उन्हें उतना ही सुहाता था जितना किसी वर को नव-यौवना वधू का मुखड़ा भाता है।

हिजली में एक नजरबन्दी शिविर था, जिसमें अनेक विचाराधीन बंदियों को रखा गया था। यहां छोटे-मोटे झगड़ों और विवाद को बहाना बनाकर १६ सितम्बर १९३१ को अधिकारियों के आदेश पर गोली चलाई गयी थी। इस गोली वर्षा के फलस्वरूप कलकत्ता निवासी संतोष और बारीसाल के रहने वाले तारकेश्वर सेन को अपने प्राण गंवाने पड़े थे। अनेक बंदी घायल भी हो गए थे।

हिंसा-अहिंसा के वाद-विवाद से क्रांतिकारी कभी के ऊपर उठ चुके थे। निरपराध शस्त्रहीन लोगों पर बंदीगृह में जो अत्याचार किया गया था, उसका बदला लेने का संकल्प तीन क्रांतिकारी नवयुवकों के हृदय में धधक रहा था।

हिजली कारागार में हुए गोली-कांड की जांच डगलस ने की थी और उसने जो निष्कर्ष पेश किया वह यह था—

"पुलिस द्वारा चलाई गई गोलियों का विचाराधीन बंदियों ने जो असहाय थे, विरोध किया। इस प्रतिरोध के बाद इन बंदियों पर पुलिस ने जिस तरह अंधाधुंध गोली वर्षा की उसका तो किसी प्रकार भी समर्थन नहीं किया जा सकता। गोली वर्षा के फलस्वरूप दो विचाराधीन बंदी मारे गए और कई घायल हो गए।

कुछ पुलिसकर्मी कारागार के भीतर तक भी पहुंचे, जबकि ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने लाठियों और संगीनों से जो प्रहार किए उनका कदापि समर्थन नहीं किया जा सकता। पुलिस द्वारा गोली चलाए जाने की भी कोई आवश्यकता नहीं थी।"

किन्तु डगलस द्वारा पेश की गई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह जांच रिपोर्ट भी एक ढोंग ही तो थी—यही मत था क्रांतिकारियों का। अपने इस मत के समर्थन में उन्होंने तर्क यह दिया था कि इस रिपोर्ट के बाद भी तो पुलिस द्वारा किए जाने वाले अत्याचार बंद होना तो दूर उनमें कमी तक नहीं आई है।

दूसरी ओर पुलिस ने भी क्रांतिकारियों द्वारा दी गई चुनौती को मंजूर कर लिया। डगलस की सुरक्षा के लिए और अधिक सतर्कता बरती गई। लेकिन पुलिस सतर्कता बरत रही थी तो क्रांतिकारी भी अपने शिकार को निशाना बनाने की टोह में और अधिक सक्रिय हो गए थे।

डगलस जिला परिषद् का सभापति भी था। परिषद् की कई बैठकें होती थीं। उनमें डगलस को भाग लेना ही पड़ता था।

ऐसी ही एक बैठक ३० अप्रैल, १९३२ को हुई थी। इस बैठक में काफी संख्या में सदस्य उपस्थित हुए थे। विषय सूची में दिए गए विषयों पर क्रमानुसार विचार किया जा रहा था। किसी-किसी विषय को लेकर सदस्यों में अच्छी-खासी बहस भी छिड़ जाती थी तो कई मामलों पर सदस्यों की एक-सी ही राय थी। परिषद् की बैठक की कार्रवाई पूर्णतः सुचारु और व्यवस्थित रूप से चल रही थी। डगलस ही इस बैठक की अध्यक्षता कर रहा था।

सूर्यदेव धीरे-धीरे अस्ताचल की ओर जा रहे थे। सांझ होने को थी। लगभग साढ़े पांच बजे थे। विषय सूची में उल्लिखित नौवें विचारणीय विषय पर चर्चा चल रही थी।

पश्चिम द्वार से बीच वाले मार्ग से होते हुए दो नवयुवक सभागृह के भीतर आ गए थे। उन्हें अब वहां आए काफी समय बीत चुका था। लेकिन सदस्यों में से किसी का भी ध्यान इन नवयुवकों की ओर नहीं जा पाया था। ज्योंही घड़ी की सुई ने साढ़े पांच बजाए, ये दोनों नौजवान डगलस के बहुत समीप जा पहुंचे। उनमें से एक डगलस के दाईं ओर था और दूसरा बाईं ओर खड़ा हो गया था। पूरी तरह सतर्क थे दोनों ही। उन्होंने अपनी-अपनी पिस्तौलें बड़ी तत्परता के साथ बाहर निकालीं।

बारह से पन्द्रह फुट तक की दूरी थी। दोनों ने निशाना साधकर एक ही साथ गोलियां चलायीं। कुल छः गोलियां उन्होंने दागी थीं।

डगलस के सीने, पेट और दोनों बाजुओं में गोलियां लगी थीं। उसे अस्पताल पहुंचाया गया था। खड्गपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से विशेष चिकित्सक बुलाए गए। पर रात को पौने दस बजे डगलस के प्राण पखेरू उड़ गए।

× × ×

डगलस को अपनी गोलियों से भून देने वाले दो नवयुवकों में से एक था प्रद्योतकुमार भट्टाचार्य। वे दोनों युवक उत्तरी द्वार से बाहर निकले थे। एक अधिकारी पिस्तौल लिए उनका पीछा कर रहा था।

अमर लॉज तक ये दोनों नवयुवक साथ-साथ भागते देखे गए थे। आगे चौराहा आया तो प्रद्योत एक रास्ते से होकर भागा। अभी भी पुलिस उसका पीछा कर रही थी। वह पास की ही एक झुग्गी-झोंपड़ी बस्ती में घुस गया।

तीन पुलिस वाले उसका पीछा कर रहे थे। उन्होंने एक स्थान को घेर लिया, जहां प्रद्योत ने शरण ली थी। पुलिस वालों ने उस झोंपड़ी के अंदर गोलियां दागनी शुरू कर दीं। प्रद्योत वहां से भी भाग निकला। लेकिन दुर्भाग्य से वह आगे जाकर घिर गया।

पुलिस वालों ने प्रद्योत को पकड़कर उसे बाहर खींच लिया। उसकी तलाशी ली गई। प्रद्योत के पास से एक चिट्ठी बरामद हुई।

उस पत्र में अंकित थे ये शब्द—हिजली में हुए अत्याचारों का यह छोटा-सा प्रतिशोध। उसके हुतात्माओं को इंग्लैंड भूल न पाए और हमारे बलिदान से हिन्दुस्तान जाग पड़े।"

प्रद्योत की जेब में एक छह गोलियों वाली पिस्तौल थी। उसके पांच खाने भरे थे। एक खाना खाली था।

जांच में यह सिद्ध हुआ कि उस गोली से डगलस पर प्रहार नहीं हुआ था। अतः यह अनुमान लगाया गया कि दूसरे युवक की गोली से ही डगलस की मृत्यु हुई है।

× × ×

दूसरे युवक का कहीं भी अता-पता नहीं मिल पाया। प्रद्योत को पुलिस ने काफी सताया। यातनाएं दीं—उसकी चमड़ी भी उधेड़ दी गयी थी। जब वेदना सहना उसके वश के बाहर हो गया तो वह अचानक ही कह गया—उसका (दूसरे साथी का) नाम था सीतांशु बोस।

पुलिस वाले उस बोस की खोज में निकल पड़े। प्रद्योत ने जिस स्थान का पता दिया था वहां तो कोई सीतांशु था ही नहीं। एक युवक को सन्देह में पकड़ा भी गया परन्तु पूरी तरह जांच-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पड़ताल के बाद पता लगा कि वह तो कोई और ही युवक था।

× × ×

प्रद्योत को फिर सताया जाने लगा। लेकिन पुलिस उससे कुछ भी ठोस जानकारी प्राप्त कर पाने में असफल रही।

इसलिए पुलिस विभाग की ओर से २१ मई, १९३२ को घोषणा की गई कि प्रद्योत के साथी का पता बताने वालों को पांच हजार रुपए का पुरस्कार दिया जाएगा।

८ जून, १९३२ को प्रद्योत के खिलाफ अभियोग प्रारम्भ हुआ। दूसरे युवक का पता लग ही नहीं पाया।

२२ जून को पैरवी समाप्त होने के बाद २५ जून को न्यायालय ने अपना फैसला सुना दिया। और वह था "फांसी"।

× × ×

लगभग छह महीने बाद अर्थात् १२ जनवरी १९३३ को प्रद्योत मेदिनीपुर बंदीगृह में फांसी के फंदे पर लटका दिया गया।

प्रद्योत मुस्कान बिखेरता हुआ फांसी की रेशमी डोर को चूमकर हमेशा के लिए अमर हो गया। आश्चर्य चकित रह गए अधिकारी भी यह देखकर कि उसके शव का वजन बढ़ गया था।

और उधर भारत माता अपनी स्वतन्त्रता के लिए एक और अधखिली कली समर्पित होने पर गौरवान्वित थी।

– राकेशरानी

Inside Congress

During the last year of his life Swami Shraddhanandji conducted an English weekly called "The Liberator".

This book contains 26 articles written by Swamiji in that weekly.

An absorbing book, commended by late Deshbandhu Gupta in his foreword, "to all those who esteem the late Swamiji, his name, his sterling sincerity and his mission."

Just out. Price : Rs. 30

Dayanand Sansthan,
1597 Hardhyan Singh Road, New Delhi-110005

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हत्याओं का दौर

दशमेश रेजिमेंट हो या खालिस्तान राष्ट्रीय परिषद्, बब्बर खालसा हो या दल खालसा, कीर्तनी जत्था हो या युवा अकाली दल, अकाल फेडरेशन हो या सिख फेडरेशन—ये सारे के सारे खूनी भेड़िये लोगों का खून बहा रहे हैं। फरवरी १९८४ तक के १९ महीनों में पंजाब में २२० हत्याएं इन नर-पिशाचों ने की हैं, जिनमें राष्ट्र की उन्नति और विकास में योगदान देने वाले निम्नलिखित महान् व्यक्ति गिनाये जा सकते हैं—

१. २४ अप्रैल १९८०—निरंकारी मत के सर्वोच्च गुरु बाबा गुरुबचन सिंह।

२. ९ सितम्बर १९८१—महान् सामाजिक नेता स्वतन्त्रता, सेनानी, पंजाब केसरी के संस्थापक-सम्पादक लाला जगत्नारायण।

३. २५ अप्रैल १९८३—जालन्धर के डी० आई० जी० श्री अवतार सिंह अटवाल।

४. २२ फरवरी १९८४—जनप्रिय मासिक पत्रिका 'प्रीतलड़ी' के सम्पादक साम्यवादी विचारक श्री सुमीतसिंह शम्मी।

५. २८ मार्च १९८४—दिल्ली गुरुद्वारा प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष राष्ट्र-वादी सिख नेता श्री हरबंससिंह मनचंदा।

६. २ अप्रैल १९८४ भाजपा के पूर्व विधायक तथा अमृतसर जिला अध्यक्ष श्री हरबंसलाल खन्ना।

७. ३ अप्रैल १९८४ राज्यसभा के नामजद सदस्य, पंजाबी सम्मेलन के अध्यक्ष, कवि, शिक्षाशास्त्री, सुधारवादी डॉ० विश्वनाथ तिवारी।

और कितने नाम गिनायें। भारत के खेल सितारे पृथ्वीपाल सिंह, एशियाई खेलों के स्वर्ण-पदक विजेता केवलकृष्ण, अनेक हिन्दू मन्दिरों के पुजारी और व्यवस्थापक समितियों के अध्यक्ष।

एक लम्बी सूची है, जिस पर अविलम्ब विराम लगना चाहिए।

मैं हरिजन को छोड़ दूं तो मैं जगद्गुरु कैसे हुआ? वर्णाश्रम एक व्यवस्था थी, धर्म नहीं। मैं अधिकारपूर्ण वाणी से घोषित करता हूं कि हिन्दू समाज में कोई वर्ग, कोई जाति अस्पृश्य नहीं है।

—जगद्गुरु स्वामी विश्वेशतीर्थ जी महाराज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गांधी ने कहा था—

देश के विभाजन से पहले मेरे शरीर के दो टुकड़े होंगे

मैं अहिंसा का पुजारी होने के नाते प्रस्तावित विभाजन का बलपूर्वक विरोध नहीं कर सकता, यदि भारत के मुसलमान वास्तव में चाहें। परन्तु मैं भारत के विभाजन के कार्य में स्वेच्छा से भाग नहीं ले सकता। मैं उसका विरोध करने में प्रत्येक अहिंसात्मक उपाय का इस्तेमाल करूंगा। विभाजन एक मिथ्यावाद है। मेरी आत्मा इसके खिलाफ बगावत करने लगती है कि हिन्दुत्व और इस्लाम दो विरोधी संस्कृतियां और सिद्धांत हैं। मैं इस विचार के खिलाफ हूं कि लाखों भारतीयों ने, जो कल तक हिन्दू थे, आज सिर्फ इस्लाम ग्रहण कर लेने से अपनी राष्ट्रीयता को भी बदल दिया है।

(हरिजन, १३ अप्रैल १९४०)

एम्बिट कार्पोरेशन

एटलांटा बिल्डिग, बम्बई

के सौजन्य से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनेप ग्राम-नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कीजिए

सवसे पहले आप समिति के उद्देश्य और मांगें पढ़ डालिए। यदि आप उनसे सहमत हों तो कम से कम अपने १९ साथी और वनाइए। इस प्रकार २० सदस्य वनाकर उनके फार्म तथा उनके पूरे शुल्क का ड्राफ्ट "अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति" के नाम का वनाकर केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली को भेजिए। साथ ही स्वीकृति के लिए पत्र भी लिखें।

स्वीकृति प्राप्त होने पर आप में से जिन्हें संयोजक वनाया जाए—वे एक अस्थायी कोषाध्यक्ष व मंत्री नियुक्त कर लें तथा अपने यहां विधिवत् कार्यालय वना लैटर-हैड, रसीद बुक आदि छपवा लें। स्थापना के दो मास के भीतर आप एक कार्यकर्ता सम्मेलन बुलाएं और रात्रि को सार्वजनिक सभा हिन्दू रक्षा सम्मेलन के रूप में रखें।

आपका लक्ष्य अधिक से अधिक सदस्य वनाना हो। अपने सदस्यता शुल्क व दान से सम्मेलन कीजिए। साहित्य वांटिए, पोस्टर लगाइए और संगठन को सुदृढ़ वनाइए।

२० सदस्यों के वाद वने सदस्यों का चौथाई शुल्क आप केन्द्र को भेजेंगे। दान रूप में एकत्र सम्पूर्ण धन आप अपने क्षेत्र में व्यय कर सकेंगे, किन्तु आपको सारा हिसाव नियमानुसार रखना होगा।

केन्द्र कभी भी आपके आय-व्यय की जांच कर सकेगा और केन्द्र को यह भी अधिकार होगा कि वह अनियमितता प्रतीत होने पर आपकी समिति भंग कर नयी समिति गठित कर सके।

हिन्दू रक्षा समिति वस्तुतः राष्ट्र के गौरव, परम्पराओं, इतिहास और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए कृतसंकल्प सर्वस्व-समर्पित देशभक्तों का संगठन है। अतः सव इसी दिशा में सोचते हुए सभी कार्य सम्पन्न करें, ताकि सफलता मिल सके।

हम किसी भी संकट में सेवा के लिए सदा प्रस्तुत हैं।

(प्रो०) धर्मवीर, प्रधान मंत्री
अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सारा भारतवर्ष तुम्हारा

जब जब आई विपति देश पर, तुम सूली पर लटक गये हो।
वाह गुरु के वीर खालसे, बहकावे में भटक गये हो।।
कालू हिन्दू कुल में जन्मे, नानक अरु उनकी सन्तानें।
भले आदमी! तुम्हीं बताओ, सिख हम अलग किस तरह मानें।।
गुरु गोविन्द सिंह ने बेटे जीवित भीतों में चुनवाये।
तेगबहादुर गुरु ने हिन्दू धर्म हेतु निज प्राण गंवाये।।
रक्षा करें धर्म हिन्दू की इस हित था सिख पन्थ चलाया।
कर्त्तव्यों को त्याग, न अधिकारों को उनने कभी जताया।।
कीर्ति कमाई जो गुरुओं ने उसको तुम मत नीलाम करो।
अमृतसर के गुरुद्वारे की पावनता मत बदनाम करो।।
होती शक्ति अकाल वही है, जिसका काल नहीं होता है।
खालिस-असली-पावन जन का बांका बाल नहीं होता है।।
अत: खालसा राज करे तो हमको कुछ आपत्ति नहीं है।
गुरुओं की शिक्षा को दूषित करना उनकी भक्ति नहीं है।।
कहां ग्रन्थ में लिखा कि करना मारकाट, अधिकार जताना?
खण्ड-खण्ड भारत माता को करने का षड्यंत्र रचाना।।
बदल गया इकबाल कह गया चीन व पाकिस्तान हमारा।
जिसने पहले कहा कि जग से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा।।
मत उसकी बोली में बोलो, मत अपनी मां को दो गाली।
काली करतूतों से नाता तोड़ो खालिस बन्धु अकाली।।
वीर हकीकत की पुण्याई मत झुठला करके बिलखाओ।
ऊधमसिंह व भगतसिंह की बलि पर धब्बा नहीं लगाओ।।
जलियांवाला बाग जिसे तुमने भी लोहू से था सींचा।
मत झुलसाओ इसे कि यह है बलिदानों का सरस बगीचा।।
सीमा पार भेड़िये-भूखे-भक्षक, उनको नहीं पुकारो।
हिन्दू-सिख हैं भाई-भाई, निर्दोषों को मत संहारो।।
चण्डीगढ़ यदि मिल भी जाये, मांगोगे फिर पटना प्यारा।
और पुन: क्रम में आयेगा महाराष्ट्र नान्देड़ तुम्हारा।।
खालिस्तान नगण्य हो जिसमें हो सकता उत्कर्ष तुम्हारा।
तनिक दृष्टि फैलाकर देखो! सारा भारतवर्ष तुम्हारा।।

—डा० राजेन्द्र वर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिए

१.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद को	६० पैसे
२.	भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु:	५० पैसे
३.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम वनने देंगे ?	५० पैसे
४.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	५० पैसे
५.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	५ रु०
६.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	५० पैसे
७.	पोस्टर : दो प्रकार के	८० पैसे
८.	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	५० पैसे
९.	शुद्धि का मंत्र—कुंवर चांदकरण शारदा	८० पैसे
१०.	इस्लामिस्तान वनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	५० पैसे
११.	हिन्दू जागो !, देश वचाओ !	५० पैसे
१२.	इस्लाम—एक परिचय	५० पैसे
१३.	Bible in the Balance	६० पैसे
१४.	A Challenge to the Christian Faith	२५ पैसे
१५.	पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	५० पैसे
१६.	पादरियों को चुनौती	५० पैसे
१७.	वाइविल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी	५० पैसे
१८.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	५० पैसे
१९.	...और पादरी भाग गया	५० पैसे
२०.	Christianity Unmasked	१.०० पैसे
२१.	The Clarion Call	४० पैसे
२२.	जन-ज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	६ रु०
२३.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	५० पैसे
२४.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	५० पैसे
२५.	तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम वनने देंगे ?	६० पैसे
२६.	जन-ज्ञान का महान् हिन्दू विशेषांक	६)
२७.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का सन्देश	५० पैसे

१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और
५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन।
प्रत्येक आदेश के साथ १/४ धन अगाऊ भेजें।

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी नां।
पंज तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां॥
जगत भिखारी फिरत है सबको दाता राम।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहि काम॥
चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहि कोय॥
जो उपजियो सो विनस है परो काल के गाल।
नानक हर गुन गाय ले छांड़ सकल जंजाल॥
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार।
कह नानक थिर कछु नहिं सुपने जियुं संसार॥
झूठ बखान कहा करे जग सुपने जियुं जात।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान॥
विरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की।
लोभ ग्रसयो दसहु दिस धावत आस लगयो धन की॥
संग सखा सब तज गए कोऊ न निबाहियो साथ।
कह नानक एह विपत में टेक एक रघुनाथ॥

—श्री गुरु नानकदेव जी

जो हमको हरमेस उचरि है।
ते सब नरक कुंड महिं परि है॥

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चन्दू हलवाई कराचीवाला

प्रधान कार्यालय—१८५, वालकेश्वर मार्ग, तीन बत्ती, बम्बई-४००००६

१. जावेरी बाजार २. ग्रांट रोड ३. कोलाबा ४. दादरा टी० टी० ५. वरल नाका ६. सर्कल ७. ठाकुरद्वार ८. सर्वोदय स्टोर्स, चर्च गेट ९. घाटकोपर (पश्चिम) १०. लिंकिंग रोड, बांदरा ११. रेलवे स्टेशन के सामने, सांताक्रुज (पश्चिम)

कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रान्ट रोड; बम्बई-४००००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरु गोविन्दसिंह विरचित रामावतार

—डा० महीपसिंह

भारतीय जीवन में राम और कृष्ण के चरित्र ने जनमानस को सर्वाधिक आन्दोलित किया है। ये कथाएं किसी न किसी रूप में भारतीय जनता के विभिन्न वर्गों में स्थान पाती रही हैं और इनकी व्यापकता भारत की सीमाओं का अतिक्रमण करती रही हैं।

भारत में जन्मे वे सम्प्रदाय भी, जिन्होंने वेद-मार्गी परम्परा को स्वीकार नहीं किया और धार्मिक क्षेत्र में अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की घोषणा की, राम और कृष्ण के रूप में विकसित एक दीर्घ सांस्कृतिक परम्परा से अपने आपको नहीं तोड़ सके। इसीलिए जैन, बौद्ध और सिख सम्प्रदायों में राम और कृष्ण कथा अपने सांप्रदायिक वैशिष्ट्य के साथ उपलब्ध हैं।

गुरु गोविन्दसिंह जहां अपने पूर्व की नौ पीढ़ियों से चली आ रही एक धार्मिक परम्परा के उत्तराधिकारी थे, वहीं वे विदेशी शासन के विरुद्ध उभरते हुए एक जनान्दोलन के कर्णधार थे। समय की आवश्यकता ने उनके द्वितीय स्वरूप को अधिक महत्त्वपूर्ण बना दिया था। परिणामस्वरूप देश की जनता का मनोबल बढ़ाने और सदियों से छाई कायरता और अकर्मण्यता को दूर करने के लिए उन्होंने अपनी ऐतिहासिक-पौराणिक थाती को नये संदर्भ, नये अर्थ और नयी परिभाषा में प्रस्तुत किया।

गुरु गोविन्दसिंह ने विष्णु के चौबीस अवतारों, शिव और ब्रह्मा के अवतारों, चण्डी के द्वारा दैत्यों के संहार के प्रसंग की रचना ब्रजभाषा में की। इस संपूर्ण कार्य की पृष्ठभूमि में उनके मन में 'धर्म युद्ध' के भाव का चाव विद्यमान था। गुरु गोविन्दसिंह भी राम को विष्णु का अवतार मानते हैं—

मास त्रयोदशमी चढ़्यो तव संतन हेतु उधार।
रावण रिपु परगट भये जग आन रामअवतार।

राजा दशरथ भी आकाशवाणी में यही सुनते हैं कि उनके घर विष्णु अवतार ग्रहण करेंगे—

नव भई देव बानी बनाइ।
जिस करयो दूर दुःख राम राग॥
तब धाम होंहि सुपुत्र विसुन।
सब काज आज सिध होंहि जिसुन॥

× × ×

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राम के अवतार का उद्देश्य रामकथा की परम्परागत मान्यता के अनुरूप ही है। वास्तव में यह उद्देश्य ही रामावतार की रचना का मुख्य आधार है—

राम परम पवित्र हैं रघुवंश के अवतार।
दुस्त दूतन के संघारक संत प्रान आधार॥

इसलिए इस रचना में राम के वीर रूप को प्रतिष्ठित करने का प्रयास कवि द्वारा सर्वत्र रहा है। सीता के नारी-सुलभ सुन्दर रूप की चर्चा इस रचना में पर्याप्त है। परन्तु राम के सुन्दर रूप की चर्चा एक-आध स्थानों पर ही दृष्टिगत होती है। सीता स्वयंवर के पश्चात् परशुराम बड़े क्रोधित होते हैं। परन्तु जब उन्हें राम के यथार्थ रूप का ज्ञान होता है तो वे उन्हें अपनी भुजाओं में कसकर अपलक उनके सुन्दर रूप को देखने लगते हैं—

भेंट भुजा भर अंक भले भरि नैन दोऊ निरखे रघुराई।
गुंजत भृङ्ग कपोलन ऊपर नाग लवंग रहे लव लाई॥
कंज कुरंग कलानिधि केहरी कोकिल हेर हिये हहराई।
बाल लखें छवि खाट परें नहीं बाट चलें निरख अधिकाई॥

परन्तु कवियों को सन्तोष तब होता है जब वे बड़े मनोयोग से राम के वीर रूप की प्रतिष्ठा करते हैं। राम-रावण युद्ध के समय राम का क्रोध से भरकर रावण से युद्ध करना उस रूप की प्रतिष्ठा करता है।

यहां युद्ध-रत के दो-एक दृश्य प्रस्तुत करना समीचीन होगा—

रोब भरे रण भी रघुनाथ कमान लै बाण अनेक चलाए।
धीजि गजी गजराज थने रथराज बने करि रोष उड़ाए।
जे दुःख देह कटे सिय के हित ते रण आज प्रतच्छ दिखाए।
राजिव लोचन राम के मार घनो रण घाल घने घर घाए॥
श्री रघुनन्दन की भुज में जब और सरासन बाण उड़ाने।
भूमि अकास पतार चूहें चक पूर रहै नहि जात पछाने।
तोर सनाह सुबा हन के तन अहि करी नहि पार पराने।
बेद करोटन औटन कोट अटान मों जानकी बाण पछाने॥

इसीलिए जहां रामचरितमानस में प्रत्येक कांड के अन्त में तथा अनेक स्थानों पर रामचरित के श्रवण-पाठन के माहात्म्य परम्परा की परिपाटी का निर्वाह है, ग्रन्थ के अन्त में केवल एक बार किया गया है—

जो इह कथा सुनै अरु गावै।
दुःख पाप तिह निकट न आवै।
बिसनि भगति कीए फल होई।
आधि व्याधि छू सकै न कोई॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राम का सन्तपालक और दुष्टनाशक रूप कवि अपने युग में प्रतिष्ठित करना चाहता था। वह राम के उस रूप को समाज के सम्मुख प्रेरणा-स्रोत के रूप में प्रस्तुत करना चाहता था। इसलिए अपनी कथा योजना में कवि राम जन्म में राक्षसों को नष्ट करने वाले उद्देश्य को सदा प्रमुख रखता है। राम को वन में भेजकर राक्षसों को नष्ट कराने के लिए ब्रह्मा स्वयं मंथरा को अयोध्या भेजते हैं—

मंथरा इक माधवी ब्रह्मा पठी तिह काल।
बाज साज सर्वे चढ़ी सभ सुभ्र धउल उताल॥

वन में भरत से भेंट होने पर राम अपने विशिष्ट कार्य का उन्हें संकेत करना नहीं भूलते—

पान पियाय जगाय सुवीर ही।
फेरिक कह्यो हंस श्री रघुवीर ही॥
त्र्योदस बरख गए फिरि आवहिं।
जाहु हमें कछु काज किवै है॥२८६॥

इस उद्देश्य पूर्ति की सबसे विशिष्ट बात तो यह है कि सम्पूर्ण रामावतार में ८६४ छन्द हैं और इनमें ४०० से अधिक छन्दों में केवल युद्ध का ही वर्णन है। करुण, भक्ति, शृंगार तथा अन्य किसी प्रकारके वर्णन में कवि की दृष्टि अधिक नहीं ठहरती। उसकी रुचि युद्ध चित्रण में है और जहां कहीं भी सुयोग मिलता है, वह इसका पूरा लाभ उठाता है।

"सैकड़ों वर्षों तक लहरों पर लहरें प्रत्येक वस्तु को तोड़ती-फोड़ती हुई इस देश को आप्लावित करती रही हैं, लगातार चली हैं और "अल्लाहो अकबर' के गगन भेदी नारे लगे हैं, किन्तु वे बाढ़ें चली गयीं और राष्ट्रीय आदेशों में परिवर्तन न कर सकीं। हजार वर्षों के असंख्य कष्टों और संघर्षों में यह हिन्दू जाति मर क्यों न गई? यदि हमारे आचार-विचार इतने अधिक खराब हैं तो क्यों हम लोग अब तक पृथ्वी पर से मिट न गये? क्या भिन्न-भिन्न वैदेशिक विजेताओं ने हमें कुचल डालने में किसी बात की कमी रखी? तब क्यों न हिन्दू बहुत-से अन्य देशों की भांति समूल नष्ट हो गये? भारतीय राष्ट्र मर नहीं सकता। अमर है वह और उस वक्त तक अमर रहेगा जब तक कि यह विचारधारा पृष्ठ-भूमि के रूप में रहेगी, जब तक कि उसके लोग आध्यात्मिकता को नहीं छोड़ेंगे।"

—**स्वामी विवेकानन्द**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमें अभिमान है कि हम हिन्दू हैं

वह व्यक्ति हिन्दू है जो हिमगिरि के धवल शृंगों से महोदधि की उत्ताल तरंगों तक विस्तृत इस भूखण्ड को अपनी पितृभूमि के रूप में मान्यता देता है, जो रक्त सम्बन्ध की दृष्टि से उसी महान् जाति का वंशज है, जिसका प्रथम उद्भव वैदिक सप्तसिन्धुओं में हुआ था और जो निरन्तर अग्रगामी होती, अन्तर्भूत को पचाती तथा महनीय रूप प्रदान करती हुई हिंदू जाति के नाम से सुख्यात हुई है। जो उत्तराधिकार की दृष्टि से अपने आपको उसी जाति का स्वीकार करता है तथा इस जाति की उस संस्कृति को अपनी संस्कृति के रूप में मान्यता देता है जो संस्कृत भाषा में संचित है—जिसकी अभिव्यक्ति इस जाति के इतिहास, साहित्य, कला, धर्मशास्त्र, व्यवहारशास्त्र, रीति-नीति, विधि-संस्कार और पर्वों के माध्यम से हुई है। इसके साथ ही उस व्यक्ति के लिए यह भी अनिवार्य है कि वह उपर्युक्त बातों के साथ इस देश को अपनी पुण्यभूमि, अपने अवतारों, ऋषियों, महर्षियों की अवतारस्थली एवं इसके कण-कण को तीर्थस्थली समझता हो। हिन्दुत्व के लक्षण हैं—एक राष्ट्र, एक जाति तथा एक संस्कृति। इन सभी लक्षणों को संक्षेप में इस भांति प्रस्तुत किया जा सकता है कि वही व्यक्ति हिन्दू है जो सिन्धुस्थान (हिन्दुस्थान) को केवल पितृभूमि ही नहीं, अपितु पुण्यभूमि भी स्वीकार करता है। हिन्दुत्व के प्रथम दो लक्षणों राष्ट्र तथा जाति का समावेश पितृभूमि शब्द में हो जाता है और तृतीय लक्षण एक संस्कृति की अभिव्यक्ति "पुण्यभूमि" शब्द से होती है, क्योंकि संस्कृति में ही सब संस्कार समाविष्ट हैं और वही किसी भूमि को पुण्यभूमि का रूप प्रदान करती है। उपर्युक्त परिभाषा को और भी अधिक संक्षिप्त रूप में निम्नलिखित श्लोक में प्रस्तुत किया जा सकता है—

आसिन्धु सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः ॥

—वीर सावरकर

गुप्ता इन्वैस्टमैण्ट एण्ड कंस्ट्रक्शन
कम्पनी, बम्बई के सौजन्य से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म प्रचार और हिन्दू रक्षा अभियान यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

आर्य महिला सत्संग प्रेमपुरी (गाजियाबाद)—२०१ रुपये
श्री पृथ्वीराज लाहौरी (राजमई, असम)—२०१ रुपये

एस. पी. रामचन्द्र (हैदराबाद)—१५१ रुपये, धनजी माईवाल जी भाई (बम्बई), डा. चन्द्रभानु (साहरनपुर)—१५१ रुपये

१२५ रुपये देने वाले

बनवारी लाल जागड़ (चुरु) लक्ष्मी नरायण (चुरु) श्रीमति कमलावती आहलवालियां (दिल्ली) श्री हरश्याम (मोहाना)

१०१ रुपये देने वाले

बा. एल. अग्रवाल (इलाहाबाद), रामबचन श्रीवास्तव (बहराइच); डा. एम. संजीव राव (हैदराबाद), जी ओ. एम क्लिनिक (गाजियाबाद); मेजर रजनी चन्द जी (हनुमानगढ़ जंक्शन), मवाना आर्यसमाज मवाना; (मेरठ)

१०० रुपये देने वाले

शक्तिस्वरूप गुप्त (कलकत्ता), देवदत्त अरोड़ा (कानपुर), सत्यवती शर्मा (बरेली), खुशीराम शर्मा (जालंधर शहर); लक्ष्मीनारायण-रामेश्वर लाल (चुरु), श्रीमती कमलावती आहलवलिया (दिल्ली), श्री हरशाम मोहाना

डा. अमर (अकबापुर)— ७५ रुपये
अनिरुध मिश्र (गनबटिया खुर्द)—२७ रुपये
मन्नालाल शुक्ल (कानपुर)—७० रु०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

केदार नाथ आर्य रामकुमार (गोंडा), हिन्दू रक्षा समिति (ईसानगर खीरी)—६० रु०

सर्व श्री

५१ रुपये देने वाले

चन्दू हलवाई (बम्बई), आर. सी. अग्रवाल (पूना), रघुनाथ साह
(दुमका), ट्रेडर्स एजेन्सीज इंडिया (बम्बई), हरिवेश (मुरादाबाद), बी०
पी० अग्रवाल (बम्बई), के० एल० पोद्दार (बंगलौर), डा० वैशम्पायन
(कोटा), श्री रामलाल सोनी (जावला, नागौर), नथराम जैन (जावला,
नागौर)

सर्व श्री

१० रुपये देने वाले

रामनाथ प्रसाद (पलामू), समरु प्रसाद (पलामू), जयकिशन प्रसाद (पलामू)
ओम्प्रकाश (पटियाला), शान्ति भण्डारी (बीकानेर), हरदयाल गुप्ता (जम्मू-
तवी), पाचूराम (वाराणसी), १५५ कर्मचन्द (अम्बाला), जगेश्वर प्रसाद
(सहारनपुर), चन्द्रमणि (रन्धाणा), यज्ञपाल सिंह (मुरादाबाद), अश्विनी-
कुमार (गोराल नगर), प्रभाकर महादेव (कर्नाटक), शोभाराम गंगवार-
(बरेली), प्रताप सिंह राठौर (चौड़ा), वेदव्रत आर्य (लक्ष्मणपुर),
रामानन्द जी (भिवाड़ी), शरदेन्द्र जी (नई दिल्ली), रामानन्द (नई-
दिल्ली), नरेन्द्र कुमार (मेरठ), अम्बालाल त्रिवेदी (खेड़ा), गुमान सिंह
(महेन्द्रगढ़) वासुदेव सिंह (जौनपुर), नन्हूमल अग्रवाल (मुरादाबाद),
तोहाराम (दिल्ली), सत्यवारी (नैनीताल), शिवनाथ प्रसाद (जौनपुर),
यू.पी. कौशल (मेरठ), डा.पी.आर. छिब्बर (नई दिल्ली), रणधीर सिंह
(रोहतक), साहू राम चन्द्र गुप्ता (धामपुर), हजारी लाल (अशोक नगर),
भोपाल सिंह (अजमेर), ओ.पी. शर्मा (इंदौर), रामचरण महतो (मुंगेर),
ओम्प्रकाश (देहली) गणपति लाल (उज्जैन), खैरज सिंह (मथुरा), रघु-
राजसिंह (अलीगढ़), आर.सी. गुप्ता (जयपुर), मनोहर लाल (फीरोजपुर),
विद्यारतन (गाजियाबाद), ईश्वरदास (कानपुर), आर्यसमाज (मंदसौर),
किशन (कलकत्ता), युगल किशोर लाल (गोंडा), नाहर सिंह राठौर
(जावला), रामजीवन (पटना), रामचन्द्रन (पूनडो टैन्गर), गरीबदास
(भोपाल), श्यामा चरण (शाहजहाँपुर), श्रीमती सूरजमुखी (मुरादाबाद),
भोलाराम (नागौर), डा० साभल रसय्या (निजामाबाद), धनिक प्रसाद
(गिरिडीह), जुगलराम आर्य (रायपुर), वामनदास अग्रवाल (बिहार),
हरिवंश प्रसाद गुप्त (हरिद्वार), बबन प्रसाद (रायपुर), रामसिंह (मु. नगर),
जियालाल (फैजाबाद), ओम्प्रकाश (अकोला), जनार्दन सिंह (गोपालगंज),

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
नागनाथ (औरंगाबाद), ध्यान सिंह (अफजलगढ़), लीलावती (कांगड़ा), कान्ति लाल (मेहसाना), बशीलाल वर्मा (मण्डी), दीप नारायण (पूर्णिया), लाभसिंह (मण्डी), पारस नाथ आर्य (पलामू), मदन प्रसाद (पलामू), लालू साह (पलामू), वंशरोपण (पलामू), बनेश्वर प्रसाद (पलामू), सुरेश-प्रसाद (पलामू), सुरेश प्रसाद केशरी (पलामू), बन्धू जोरम (पलामू), प्रेम-सागर (पलामू) चन्द्रिकाप्रसाद (पलामू), अन्नू प्रसाद (पलामू), सन्त प्रसाद (पलामू), जगदीश प्रसाद (पलामू), निरंजन प्रसाद (पलामू), कृष्ण प्रसाद (पलामू), जगन्नाथ प्रसाद (पलामू), सूरज प्रसाद (पलामू), शिव प्रसाद (पलामू), जगदीश चन्द्र शास्त्री (पठियार), राजेश पंवार (घासोती),

जगदीश (जलगांव)—७ रुपये

५ रुपये देने वाले

नगेन्द्र (गिरीडीह), काशीनाथ (रोहतास), हरिहर प्रसाद (इलाहाबाद), भारत मित्र (जनकपुरी), श्रीमती विनोद शर्मा (अम्बोआ), राजेन्द्र प्रकाश शर्मा (अम्बोआ), श्रीमोसी रामजीलाल (अम्बोआ), रमेश चन्द (कलाध्या-पक (अम्बोआ), रामस्वरुप स्नातक (अम्बोआ), श्रीमती ऊषा शर्मा (अम्बोआ), हनुमान सिंह (मेहतारोड), मांगीलाल (मे. रोड़), दशरथ प्रसाद (मे. रोड), खीवराज (मे. रोड), दोलूजी (मे. रोड), गणपतराय (मे. रोड़), किशनराम (मे. रोड़), मंगलाराम चौधरी देवाराम गुर्जर (मे. रोड), भगवती प्रसाद मीना (मे. रोड़), अमरलाल (मे. रोड़), पारसमल (भटनागर मेनरोड) दशरथ सिंह घासीराम ओम्प्रकाश शर्मा (मे. रोड़), झूमरलाल भाटी (मे-रोड़), विष्णुदत्त शर्मा बनवारी लाल राजकिशोर सिंह जुगल किशोर (भटनागर), आर.पी. सिंह प्रवीणदत्त शिवप्रसाद चौबे बालनायक गौड जगदीश प्रसाद चोपड़ा मानकलाल वर्मा (मे. रोड़), लालसिंह यादव नाथू-लाल चारण उत्तम चन्द (ओझा), हरिकिशन चौधरी सरोज तिवारी (लख-नऊ), शिवकुमार (लखनऊ), वासुदेव शर्मा (भागलपुर), एस.एल. शर्मा (भोपाल), रामवृक्ष सिंह (नालन्दा), हरिचरण साहू (हजारीबाग), राम-दयाल राय (नासिघम), मंगाराम (शाजापुर), हेमन्त त्यागी (बिलासपुर), बालमुकुन्द (रायपुर), चन्द्रकान्त (अमरावती), प्रेमलता (मवाना), शीतला-प्रसाद (कानपुर), शंकर प्रसाद गुप्त (कानपुर), रामतरन रामनाथ नेम-चन्द रामबिलास बद्रीप्रसाद रामचन्द सत्यनारायण नहरलाल साहू (नाडियाड), बुद्धमल आर्य (पपरई), सन्तप्रसाद (रायबरेली), प्रेमप्रकाश गौड (दिल्ली), बाबूराम मथुरा प्रसाद (बदायूं), दुर्गा पुस्तकालय (कटिहार), भूषण कुल-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
श्रेष्ठ (आगरा), वैद्यनाथ मंडल (परपाती), श्रीबाल किशन (नई दिल्ली), जवाहरलाल (ग्वालियर), जगतराय भरद्वाज (बिलासपुर), पो० खन्डभार अम्बालाल (खवासा), चक्रधर आर्य (सिंहभूमि), कृष्ण नारायण रायजादा गानगर), केदारनाथ शर्मा (प्रथरगामा), श्रीपाल शर्मा (पथरगामा), महेन्द्र कुमार चौबे दीपनारायण भगत केशोप्रसाद भगत रामकुमार (केजरीवाल), मुकुन्द चौबे कपिल भगत हीरालाल आर्य डा० सत्यनारायण प्रसाद बद्रीनारायण प्रसाद भरतसिंह टूटी (सिंहभूमि), चकधेर गोप (सिंहभूमि), श्री मोहनलाल (मथुरा), नत्थूराम (राजस्थान), एल०पी० शर्मा (दिल्ली); विष्णु शंकर चौरसिया (पाली), श्री नारायण ओंकार (जलगांव), हरिप्रसाद आर्य (बस्ती), परमेश्वर शर्मा (पटना), भीमसेन (मैनपुरी), धर्मसिंह (सिकन्दराबाद), रामेश्वर दत्त शास्त्री (रोहतक), रामसनेही शुक्ला (दिल्ली), बलराजसिंह (झांसी), वैद्य गंगाशरण (नागौर), प्रकृति चन्दगुप्ता (पटना), लक्ष्मण भजवन्त (अमरावती), बद्रीप्रसाद ओम्प्रकाश (भरतापुर), हनुमान आर्य (भिवानी), किशन जनरल स्टोर्स (सिरोही), लक्ष्मी नारायण (नई दिल्ली), बिहारी लाल (नई दिल्ली), मोगीलाल (कोटा), बद्रीप्रसाद (कलकत्ता), आर्यसमाज (थाना), जसाराम बर्मा (जरयाड मंडी), नवाबसिंह (बदायू), सोनीनाथ (लखनऊ), रमेशचन्द्र-शर्मा (नंगलटाउन), एम०एल० शर्मा (जयपुर), धर्मसिंह (हरदोई), हिम्मतराय (अहमदाबाद), मंगल प्रसाद तिवारी (मिझौडा), मताप्रसाद तिवारी (मिझौडा), ओंकार प्रसाद (रामनगर), केदारनाथ शुक्ल (पहितियापुर), गपारसिंह (बी. ओ. बी) (रामनगर), डा० सेवालाल गुप्त (रामनगर), डा० रमेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी (रामनगर), डा० रामलखन वर्मा (रामनगर), डा० रामकेवल किशोरी लाल गुप्ता बंशीधर गुप्ता कालेन्द्रप्रसाद (मिर्जापुर मसेना), जगदम्बा प्रसाद प्रधान बेंचूराम गुप्ता (रामनगर), रामनाथ बरई (घुसवा देगावल), रामउजागर मौर्य (मिर्जापुर मसेना), डा० विधान चन्द्र त्रिपाठी (शाहजहांपुर औरांव), राधेश्याम आर्य (रामनगर-जेठहवां); सत्यकाम केशरदेवी आर्य (बिसाऊ); शंकरलाल सोनी (जावला, नागौर), मोहनलाल मोचेटा (जावला,नागौर), छगन लाल मुयार हरिरामकुमार, रामावतार सिंह, गणेशलाल राठी पुखराज जैन, रूपाराम माली, भवंरसिंह पवार, रूपनाथ टेलर, शकरलाल कारपेन्टर, श्रीरामेश्वरलाल शर्मा विजय शास्त्री, दामोदर टेलर, नदनलाल जोशी (जावला-नागौर), दामोदरजोशी, गोवर्धन टेलर, हनुमान् चौधरी, मेघसिंह, रमेश शर्मा, रामचन्द्र सिंह जाघड़ विजेन्द्रपाल सिंह, रंगलालयादव, कंवरसिंह यादव, बाबूलालकड़वासरा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोविन्दलाल वैष्णव सुआलाल, रामाराव, बन्नेसिंह, शिवचरण माथुर, श्रीमती सीता टेलर, मोहनलाल चौहान, हेमराज कोठारी, तुलहीराम जाट, ओम्प्रकाश लाहोरी, भंवरसिंह, सीताराम राठी, गोवर्धन शर्मा, शिवनारायण भुतड़ा, रूपचन्दभुतड़ा; किशन भुतड़ा, रतनलाल दायमा, राधाकृष्ण दायमा, रसनारायण भुतड़ा, मजरलाल बराला, पृथ्वी सिंह राठौड़, रामनारायण सेठ, बालूराम तिवाड़ी, शंकरलाल रेगर, मंगला राम जाट, जानकी लाल चित्रकार, श्री जानकीशरण (कानपुर),।

सभी का धन्यवाद ।

—राकेशरानी

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए

पवित्र धर्म-ग्रन्थ : परमात्मा की वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मंत्र-शब्दार्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित

लागत मूल्य ५०० रु०

किन्तु प्रचार के लिए

पुस्तकालय संस्करण : २७५ रु०

उपहार संस्करण लागत मूल्य १,००० रुपए

अभी केवल ७०० रुपए में लीजिये ।

आदेश के साथ ५० रु० अग्रिम भेजें । रेलवे स्टेशन लिखें ।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

दूरभाष : ५६२६३६-५६४७४१-८०१२११

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इराक-ईरान युद्ध बनाम मजहबी एकता

—अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

किसी समाचारपत्र पढ़ने वाले से पूछिये कि लड़ाई कहां हो रही है। वह तुरन्त जवाब देगा—मध्य अमेरिका, कम्पुचिया, अफगानिस्तान। सौ में से एक ही कदाचित् इराक-ईरान की तीन साल पूरे कर चौथे साल में चल रही लड़ाई का नाम लेगा। इस लड़ाई का आरम्भ सितम्बर, १९८० में हुआ। आक्रमण किया इराक ने ईरान पर। कारण था शत-अल खाड़ी पर अधिकार की आकांक्षा। यह खाड़ी तेल व्यापार का मुख्य निर्यात मार्ग है। पश्चिमी देश इसी राह खाड़ी क्षेत्र का तेल पाते हैं। इराक के तेल उद्योग को ठप्प करने का यही एक मार्ग है। यदि यह मार्ग बन्द कर दिया जाय तो इराक को अपना तेल तुर्की को देने के सिवाय और कोई देश ग्राहक नहीं रहेगा। इराक तुर्की के बीच तेल पाइप लाइन है। इराक ने अमरीकी धमकी की परवाह न कर शत-अल खाड़ी का द्वार हुर्मुज बन्द कर दिया है। सऊदी अरेबिया के तेल मंत्री नियाज को विश्वास है कि ईरान जल्द ही पाबन्दी एवं रोक उठा लेगा।

सामयिक दृष्टि से मास्को इस मार्ग पर प्रभुत्व पाने के लिए पीटर के समय से प्रयत्न कर रहा है। उसकी नजर में हिमयुक्त भूमध्य सागर पहुंचने के लिए छोटा एवं निर्बाध मार्ग एकमात्र यही है। अमरीका सोवियत रूस का मार्ग रोकने के लिए खाड़ी क्षेत्र को अपना प्रभाव क्षेत्र बनाना चाहता है। इस प्रकार इराक-ईरान की लड़ाई अन्तर्राष्ट्रीय विग्रह का एक महत्वपूर्ण भाग है। भावी विश्व संग्राम की एक प्रज्वलित ज्वाला है।

विद्वेष के बीज

फिर यह इराक-ईरान युद्ध इस्लाम् का आन्तरिक संग्राम भी है। बगदाद में एक समय खिलाफत थी। उमर खलीफा था। उसने ईरान को मुस्लिम बनाने के लिए ईरानियों पर भयंकर तथा अमानुषिक अत्याचार किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईरान उसको आज तक भूला नहीं है । ईरानी आज उसका प्रतिशोभ लेने को उत्सुक हैं।

विचित्र बात यह है कि दोनों देश निर्गुटराष्ट्र आन्दोलन के सदस्य हैं। दोनों शान्ति के उपासक हैं। इनकी नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी हैं। श्रीमती गांधी का कितना प्रभाव है, यह इराक-ईरान युद्ध बता रहा है।

ईरान के मुस्लमान शिया हैं। इराक के मुसलमानों में ५५ प्रतिशत शिया हैं। खोमैनी इनको उकसाता रहता है कि सुन्नी एवं कम्युनिस्ट राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन की जगह शिया राष्ट्रपति चुनो। सऊदी अरेबिया इराक को मदद कर रहा है। सीरिया ईरान का मित्र है, क्योंकि दोनों शिया हैं। इस प्रकार विश्व-इस्लाम बन्धुत्व का प्रतिक्षण अन्त हो रहा है।

एक हजार किलोमीटर लम्बा मोर्चा

इराक ने १००० कि० मी० लम्बे मोर्चे पर सितम्बर १९८० में हमला बोला था। इसलिए सन्धि की एक शर्त है—इराक आक्रामक है, अतः अर्थ-दण्ड भरे। हमला जगराव पर्वत से लेकर खाड़ी तक बोला गया था। इराकी सेना ४० कि० मी० ईरान के भीतर तक दाखिल हो गयी। इतना आगे बढ़ जाने पर बगदाद ने घोषणा की कि वह युद्ध विराम करने एवं सन्धि करने के लिए तैयार है, किन्तु ईरान लड़ाई को वरदान मान रहा था, क्योंकि खोमैनी मुस्लिम विश्व का नेता होने का स्वप्न देख रहा था। यह ईरान के विजयी होने पर ही सभव है। दूसरे, मौलवी वर्ग की लड़ाई चलते रहने से ही साधारण जनता का सहयोग एवं निष्ठा प्राप्त हो सकती थी अतः खोमैनी ने मांग की कि इराक अपनी सारी फौज हटाये। मार्च १९८२ में ईरान ने इराक के मध्य भाग पर चढ़ाई की। इराक को भारी हानि पहुची। सैकड़ों बन्दी बनाये गये। ईरानी आबादी इराक से तीन गुणा अधिक है, फलतः लड़ाई का रुख ईरान के पक्ष में हो गया। राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन ने अपनी हार छुपाने के लिए कहा कि संधि के इरादे से इराकी सेना पीछे हट गयी है। ईरान ने अपना विजित देश पुनः ले लिया है। इसके साथ ही बसरा पर जोरदार चढाई कर दी, पर ईरान का यह धावा विफल रहा। इसे भारी हानि उठानी पडी। इराक ने बहुत विस्तृत क्षेत्र में सुरंगें बिछा दीं, लेकिन पहल ईरान के ही हाथ रही।

लड़ाई लम्बी चलाने की रणनीति

सितम्बर १९८३ में लड़ाई की तीसरी वर्षगांठ मनाते हुए ईरान "हाई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इराक-ईरान युद्ध बनाम मजहबी एकता

—अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

किसी समाचारपत्र पढ़ने वाले से पूछिये कि लड़ाई कहां हो रही है। वह तुरन्त जवाब देगा—मध्य अमेरिका, कम्पुचिया, अफगानिस्तान। सौ में से एक ही कदाचित् इराक-ईरान की तीन साल पूरे कर चौथे साल में चल रही लड़ाई का नाम लेगा। इस लड़ाई का आरम्भ सितम्बर, १९८० में हुआ। आक्रमण किया इराक ने ईरान पर। कारण था शत-अल खाड़ी पर अधिकार की आकांक्षा। यह खाड़ी तेल व्यापार का मुख्य निर्यात मार्ग है। पश्चिमी देश इसी राह खाड़ी क्षेत्र का तेल पाते हैं। इराक के तेल उद्योग को ठप्प करने का यही एक मार्ग है। यदि यह मार्ग बन्द कर दिया जाय तो इराक को अपना तेल तुर्की को देने के सिवाय और कोई देश ग्राहक नहीं रहेगा। इराक तुर्की के बीच तेल पाइप लाइन है। इराक ने अमरीकी धमकी की परवाह न कर शत-अल खाड़ी का द्वार हुमुंज बन्द कर दिया है। सऊदी अरेबिया के तेल मंत्री नियाज को विश्वास है कि ईरान जल्द ही पाबन्दी एवं रोक उठा लेगा।

सामयिक दृष्टि से मास्को इस मार्ग पर प्रभुत्व पाने के लिए पीटर के समय से प्रयत्न कर रहा है। उसकी नजर में हिमयुक्त भूमध्य सागर पहुंचने के लिए छोटा एवं निर्बाध मार्ग एकमात्र यही है। अमरीका सोवियत रूस का मार्ग रोकने के लिए खाड़ी क्षेत्र को अपना प्रभाव क्षेत्र बनाना चाहता है। इस प्रकार इराक-ईरान की लड़ाई अन्तर्राष्ट्रीय विग्रह का एक महत्वपूर्ण भाग है। भावी विश्व संग्राम की एक प्रज्वलित ज्वाला है।

विद्वेष के बीज

फिर यह इराक-ईरान युद्ध इस्लाम् का आन्तरिक संग्राम भी है। बगदाद में एक समय खिलाफत थी। उमर खलीफा था। उसने ईरान को मुस्लिम बनाने के लिए ईरानियों पर भयंकर तथा अमानुषिक अत्याचार किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईरान उसको आज तक भूला नहीं है । ईरानी आज उसका प्रतिशोभ लेने को उत्सुक हैं।

विचित्र बात यह है कि दोनों देश निर्गुटराष्ट्र आन्दोलन के सदस्य हैं। दोनों शान्ति के उपासक हैं। इनकी नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी हैं। श्रीमती गांधी का कितना प्रभाव है, यह इराक-ईरान युद्ध बता रहा है।

ईरान के मुस्लमान शिया हैं। इराक के मुसलमानों में ५५ प्रतिशत शिया हैं। खोमैनी इनको उकसाता रहता है कि सुन्नी एव कम्युनिस्ट राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन की जगह शिया राष्ट्रपति चुनो। सऊदी अरेबिया इराक को मदद कर रहा है। सीरिया ईरान का मित्र है, क्योंकि दोनों शिया हैं। इस प्रकार विश्व-इस्लाम बन्धुत्व का प्रतिक्षण अन्त हो रहा है।

एक हजार किलोमीटर लम्बा मोर्चा

इराक ने १००० कि० मी० लम्बे मोर्चे पर सितम्बर १९८० में हमला बोला था। इसलिए सन्धि की एक शर्त है—इराक आक्रामक है, अतः अर्थ-दण्ड भरे। हमला जगराव पर्वत से लेकर खाड़ी तक बोला गया था। इराकी सेना ४० कि० मी० ईरान के भीतर तक दाखिल हो गयी। इतना आगे बढ़ जाने पर बगदाद ने घोषणा की कि वह युद्ध विराम करने एवं सन्धि करने के लिए तैयार है, किन्तु ईरान लड़ाई को वरदान मान रहा था, क्योंकि खोमैनी मुस्लिम विश्व का नेता होने का स्वप्न देख रहा था। यह ईरान के विजयी होने पर ही सभव है। दूसरे, मौलवी वर्ग की लड़ाई चलते रहने से ही साधारण जनता का सहयोग एवं निष्ठा प्राप्त हो सकती थी अतः खोमैनी ने मांग की कि इराक अपनी सारी फौज हटाये। मार्च १९८२ में ईरान ने इराक के मध्य भाग पर चढ़ाई की। इराक को भारी हानि पहुंची। सैकड़ों बन्दी बनाये गये। ईरानी आबादी इराक से तीन गुणा अधिक है, फलतः लड़ाई का रुख ईरान के पक्ष में हो गया। राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन ने अपनी हार छुपाने के लिए कहा कि संधि के इरादे से इराकी सेना पाछे हट गयी है। ईरान ने अपना विजित देश पुनः ले लिया है। इसके साथ ही बसरा पर जोरदार चढ़ाई कर दी, पर ईरान का यह धावा विफल रहा। इसे भारी हानि उठानी पडी। इराक ने बहुत विस्तृत क्षेत्र में सुरंगें बिछा दीं, लेकिन पहल ईरान के ही हाथ रही।

लड़ाई लम्बी चलाने की रणनीति

सितम्बर १९८३ में लड़ाई की तीसरी वर्षगांठ मनाते हुए ईरान "हाई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कमांड" ने लड़ाई अधिक से अधिक समय तक चलाने की नई रणनीति की घोषणा की। ईरान को यह रणनीति अपनाने में तीन लाभ हैं—१. ईरान की जनसंख्या इराक से तीन गुणा अधिक है। २. ईरान के पास सब प्रकार के प्राकृतिक साधनस्रोत हैं। ३. भौगोलिक स्थिति ईरान को इस योग्य बनाती है कि वह इरा.ी तेल निर्यात पर पूरी रोक लगा दे।

इराक अपने आयात को कायम रखने में कठिनाई अनुभव कर रहा है। पड़ोसी अरब देश यदि बित्तीय सहायता न करें तो इराक आत्मसमर्पण करने को बाध्य होगा। इनके बिपरीत ईरान की साख ऊंची है। उसने आयात पर से कंट्रोल हटा दिया है। सन्धि ईरान के लाभ में है, यह दिखलाने के लिए इराक ने पश्चिमी ईरान पर मिसाइली हमला बोला है। इसके साथ ही उसने ईरान के तल क्षेत्रों पर बम वर्षा की है। इससे तेल छिटक कर दूर तक खाड़ी क्षेत्र में फैल गया है। इसके कारण जलीय मछलियां एवं अन्य जन्तु मर गये हैं। समस्या अन्तर्राष्ट्रीय हो गई है।

फ्रांस ने इराक को मिराज लड़ाकू विमान और आकाश से समुद्र तक की मार करने वाले "एक्जोसेअ मिसाइल" समेत, जिसने फाकलैंड की लड़ाई में ब्रिटिश विमानवाही युद्धपोत डुबोया था, विमान दिए हैं। सोवियत रूस ने इराक को मिग-२३, मिग-२५ और मिग-२७ दिये हैं।

इससे इराक की हवाई शक्ति ईरान से बढ़ी-चढ़ी हो गई है। ईरान की पैदल सेना बलबान् है, पर सैनिक बुद्धि का अभाव है। अतः खोमैनी बचे जीवित जनरलों से सहयोग लेने को बाध्य हो गया है ओर उनको पुनः सेना में बहाल किया जा रहा है। वह शस्त्रों की कमी को इसराइल, दक्षिण कोरिया व अन्य व्यापारियों से खरीदकर पूरा कर रहा है। मिस्र रूस से मिले हथियार इराक को बेच रहा है और आशा करता है कि इसके कारण उसका बहिष्कार उठा लिया जाएगा। इजराइल प्रसन्न है कि विश्व इस्लाम विभक्त हो गया है। इधर भारत में इस्लाम को संरक्षण देकर विश्व इस्लाम को जीवनदान दिया जा रहा है। इराक-ईरान संग्राम के तीन वर्ष इस प्रकार समाप्त हुए।

तीन साल की लड़ाई में २,०५,००० मरे और ३,०५,००० से अधिक घायल हुए या बन्दी बनाये गये।

तेल का छिटक कर बहना जारी है। मजहब शान्ति नहीं बल्कि लड़ाई करा रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वीर सावरकर का विचार-दर्शन

—संकलनकर्त्ता : वेदप्रकाश अग्रवाल

(१) मित्रो ! हम संकल्प करते हैं कि राष्ट्रीय रणांगण में हम अपना जीवन बलिदान कर देंगे और जो लोग हमारे धर्म व मातृभूमि को नष्ट कर रहे हैं उनके रक्त से धरती रंग देंगे। हम सब शत्रुओं को यमलोक पहुंचा के ही मरेंगे।

(२) हिन्दू और हिन्दुत्व की विचारधारा को अबाधित रखने के लिये अपना जीवन अर्पण करो।

(३) व्यक्ति से राष्ट्रहित श्रेष्ठ है।

(४) जो नियम हिन्दू-हित को बाधा पहुंचायेगा वह राष्ट्रविरोधी है।

(५) राष्ट्रीय ध्वज में राष्ट्रीय इतिहास की परम्परा का प्रतिबिम्ब होना चाहिये।

(६) राजनीति का हिन्दूकरण, हिन्दुओं का सैनिकीकरण।

(७) तीन बार गायत्री मंत्र का जाप करके अपवित्र वस्तु को पवित्र बनाओ। छुआछूत मिटाओ।

(८) उठो ! हिन्दुत्व की विजय वैजयन्ती समग्र हिन्दुस्तान में फहराने हेतु प्रचण्ड शौर्य, त्याग एवं साहस का परिचय दो।

(९) अपना जीवन प्रसून राष्ट्र-धर्म की स्थापना के पवित्र यज्ञ में समर्पित करो।

(१०) धर्मान्तरण ही राष्ट्रान्तरण है।

(११) अणु बमों तथा हाइड्रोजन बमों का निर्माण करो।

(१२) सैनिक शिक्षा अनिवार्य करो।

(१३) अरब सागर का नाम सिन्धु सागर करो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(१४) संस्कृत निष्ठ हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा है। विशुद्ध हिन्दी अपनाओ।

(१५) हिन्दू राष्ट्र के महान् लक्ष्य की पूर्ति से ही हिन्दुस्तान की एकता और अखंडता का अभ्युदय संभव है।

(१६) कोई भी राष्ट्र बिना सैन्य शक्ति के अपना अस्तित्व स्थिर नहीं रख सकता।

(१७) हरिजन हिन्दू जाति के अटूट अंग हैं।

(१८) अहिन्दुओं का शुद्धिकरण करो।

(१९) शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे—हिन्दुओ, शस्त्रधारी बनो।

(२०) ईसाई मिशनरियों की राष्ट्र द्रोही गतिविधियों पर रोक लगाओ।

(२१) तप, बलिदान एवं त्याग से ही स्वातंत्र्य लक्ष्मी प्रसन्न होगी।

(२२) वर्गभेद की साम्प्रदायिक नीति समाप्त करो।

(२३) यदि हिन्दू हिन्दुस्तान में साम्प्रदायिक है तो फिर किस देश का राष्ट्रीय है?

(२४) हिन्दूसमाज के सभी वर्गों को आर्थिक पिछड़ेपन के आधार पर विकास के समान अवसर देने होंगे।

(२५) हिन्दू विरोधी कानूनों में परिवर्तन करो।

(२६) तभी और केवल तभी तुम हिन्दू कहलाने के अधिकारी हो जब इस नाम को सुनते ही तुम्हारी रगों में शक्ति की विद्युत् तरंग दौड़ जाये।

(२७) जब तक हिन्दू केवल हिन्दू के रूप में अपने आप को संगठित करने के महत्त्व की अनुभूति नहीं करेगा तब तक हिन्दूसमाज कभी भी किसी भी प्रकार की सफलता प्राप्त नहीं कर सकेगा।

(२८) अभी तो कुछ नहीं हुआ, अभी तो स्वतंत्रय लक्ष्मी की आराधना के लिये हमें अपने प्राणों की बलि चढ़ानी है। सर्वस्व समर्पित करना है।

(२९) संकुचित प्रान्तीयता की मांग के संबंध में——यदि राष्ट्र जिन्दा न रहेगा तो प्रान्त किस प्रकार जिन्दा रह सकेंगे।

(३०) हिन्दू का ढीला और हानिप्रद अपप्रयोग त्याग दो।

(३१) शब्दों का गड़बड़ घोटाला विचारों में भी गड़बड़ी पैदा कर देता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(३२) भौगोलिक स्वतंत्रता हिन्दू राष्ट्र की स्वतंत्रता नहीं हो सकती।

(३३) हम हिन्दू डंके की चोट पर कहते हैं कि केवल हिन्दुओं के हितार्थ ही नहीं, अपितु हिन्दू राष्ट्र के हित में भी हम राष्ट्रद्रोही भस्मासुरों को नष्ट कर देंगे।

(३४) एकता की आवाज मुसलमानों की ओर से उठने दो, सच्ची एकता तभी होगी।

(३५) हमारा स्वत्व जिसमें सुरक्षित रहे वही हमारा स्वराज्य है।

(३६) हिन्दुत्व के रक्षण का जो वचन दें और हिन्दुत्व की कसौटी पर कसे हुए हों ऐसे हिन्दू संगठनवादियों को ही अपना मत दो।

(३७) हिन्दुस्तान का हितकर्त्ता ही हमारा मित्र है।

(३८) प्रत्येक विद्यार्थी को मैं शपथपूर्वक कहता हूं कि वह शपथपूर्वक कहे कि इन्द्रपद मिले तो भी प्रथम अहिन्दू रूप जीवित रहने की अपेक्षा अन्तिम हिन्दू स्वरूप मरना ही मैं अधिक पसन्द करूंगा। मां-बाप यदि हिन्दुत्व भूल गये हैं तो भी आप हिन्दुत्व न त्याग दें।

(३९) यदि असम में मुसलमानों की संख्या बढ़ जाने दी तो भविष्य में देश के लिये भारी खतरा सिद्ध होगा। (१९४१)

(४०) कांग्रेसी व गांधी जी स्वयं मुसलमानों को खुश करने के लिये आश्वासनों की बलि चढ़ा रहे हैं। (१९४५)

(४१) हिन्दुओं को इन अत्याचारों का दृढ़ता से प्रतिकार करना चाहिये। 'अहिंसा' व 'सहिष्णुता' जैसी मूर्खतापूर्ण नीति को त्याग कर गुंडों को उन्हीं की भाषा में जब तक उत्तर न मिलेगा वे बाज न आयेंगे।

(४२) स्वतंत्रता प्राप्त हुई नहीं, स्वतंत्रता को बड़े-बड़े बलिदान देकर प्राप्त किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्त हुई कहना बिल्कुल गलत है।

(४३) प्रत्येक व्यक्ति केवल एक बात का चिन्तन करता रहे कि मैं यदि अकेला रहूँगा तब भी अपने अखंड हिन्दू राष्ट्र की पुनः स्थापना के लिये आखिर तक संघर्ष रत रहूँगा।

(४४) 'हम अणुबम नहीं बनायेंगे' की घोषणा मूर्खता व कायरपन की परिचायक है।

स्वातंत्र्यवीर सावरकर के जन्म शताब्दी वर्ष (२८ मई ८३ से २८ मई ८४) के अवसर पर उनके विचारों को अपने जीवन में अपनायें। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अस्तित्व का संकट

—प्रो० बलराज मधोक

महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण हुए एक शताब्दी बीत गई है। गत एक सौ वर्षों में उनके द्वारा दिये गये दिशा बोध और राष्ट्र के जीवन के सभी पहलुओं में परिवर्तन और सुधार लाने का उनके द्वारा चलाया गया अभियान अब सर्वमान्य बन चुका है। राष्ट्रीय चेतना, समाज सुधार, नारी शिक्षा, छुआछूत उन्मूलन, स्वदेशी, गोरक्षा, राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता दिलाना आदि जिन कार्यों की शुरुआत उन्होंने की थी, वे अब राष्ट्रव्यापी मान्यता प्राप्त कर चुके हैं। वास्तव में महर्षि दयानन्द ने ही आधुनिक भारत में समग्र क्रांति का सूत्रपात किया था। वे सही अर्थों में मन्त्रद्रष्टा दूरदर्शी राष्ट्रनायक थे।

उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने इन सौ वर्षों में उनके विचारों के प्रचार और उनके द्वारा शुरू किये गये राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के अभियान के हरावल दस्ते का काम किया है। आर्यसमाज और इसके कर्णधारों का इस बात का समाधान होना स्वाभाविक है कि आर्यसमाज के अनेक कार्यक्रमों एवं कृत्यों को अब सारा राष्ट्र स्वीकार कर चुका है। इसलिए स्वाभाविक रूप से आर्यसमाज के बन्धुओं और महर्षि से प्रेरणा लेने वाले लोगों के मन में यह प्रश्न उठता है कि अब वे क्या करें? अब आर्यसमाज किन कार्यों को प्राथमिकता दे?

इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए इस बात पर विचार करना होगा कि महर्षि ने जब आर्यसमाज की स्थापना की थी उन दिनों देश किन विकट परिस्थितियों में से गुजर रहा था और आज की स्थिति क्या है। किसी भी राष्ट्रनायक के बड़प्पन की सबसे बड़ी निशानी यह होती है कि वह अपने राष्ट्र और समाज की नब्ज को पहचानता हो और दूर की बात सोच सकता हो। जिस समय महर्षि दयानन्द ने अपना काम शुरू किया, उस समय अंग्रेज १८५७ के स्वतंत्रता युद्ध को दबाने में सफलता प्राप्त कर चुके थे और वे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सारे देश पर अपना सैनिक नियन्त्रण स्थापित करने के बाद अपना सांस्कृतिक प्रभाव फैलाने में जुट गये थे। १८५७ के युद्ध से अंग्रेजों ने यह भी समझ लिया था कि तुर्कों और मुगलों के साम्राज्य की तरह इसके भारतीय साम्राज्य को जब कभी चुनौती मिलेगी, हिंदुओं से ही मिलेगी। इसलिए उन्होंने हिंदुओं के विरुद्ध ऐंग्लो-मुस्लिम गठजोड़ की नीति का भी उसी समय श्रीगणेश कर दिया था।

दीर्घ काल की दासता के कारण हिन्दू समाज रूढ़िग्रस्त हो चुका था और अनेक कुरीतियां इसके सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक चेतना को घुन की तरह खा रही थीं। इस स्थिति का लाभ मुसलमान भी उठा रहे थे और ईसाई भी। मैकाले द्वारा चलाई गई अंग्रेजी शिक्षा पद्धति हिन्दू मानस पर ईसाई-अंग्रेजों की सामाजिक और सांस्कृतिक विजय का सफल माध्यम सिद्ध हो रही थी।

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रचेतना और राष्ट्रीय एकता के लिये हिन्दुओं के सामने हिन्दू संस्कृति और समाज रचना का विशुद्ध वैदिक रूप प्रस्तुत किया और ईसाइयत और इस्लाम की तुलना में इसकी श्रेष्ठता को तथ्यों और तर्कों के साथ प्रतिपादित किया। फलस्वरूप हिन्दुओं में व्याप्त अज्ञान-जन्य हीन भावना दूर होने लगी और हिन्दू मनीषियों ने इन विदेशी मजहबों के प्रति वैचारिक आधार पर आक्रामक रुख अपनाना शुरू किया। इस कारण देश में ईसाइयत और इस्लाम का बढ़ता हुआ प्रचार मन्द पड़ गया।

राष्ट्र में एकता की भावना का संचार करने के लिये उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने, गोरक्षा और दलितोद्धार के लिए अभियान चलाया। गुरुकुल शिक्षा पद्धति को पुनर्जीवित करके अंग्रेजी शिक्षा का विकल्प प्रस्तुत किया और नारी शिक्षा, विधवा विवाह एवं अन्तर्जातीय विवाह का अभियान चलाया। भारत में नारी को फिर वेदानुसार बराबरी का स्थान दिलाने का आन्दोलन इन्हीं कार्यक्रमों द्वारा शुरू हुआ।

महर्षि दयानन्द समाज की सर्वांगीण उन्नति चाहते थे। वे समाज और संस्कृति पर दण्डनीति अथवा राजनीति के गहरे और व्यापक प्रभाव को भली भांति समझते थे। "राजा कालस्य कारणम्" उनके लिये कोई सिद्धान्त नहीं बल्कि ऐसी वास्तविकता थी जिससे आंखें मूंद कर कोई समाज सबल नहीं हो सकता और न उसकी संस्कृति पनप सकती है। इसलिए महर्षि राजनीति को बहुत महत्त्व देते दे। अब यह बात सिद्ध हो चुकी है कि उन्होंने और उनके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरु स्वामी विरजानन्द जी ने १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में उन्होंने पूरा छठा समुल्लास राजनीति और राजधर्म विषय पर लिखा। वे भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलाने के काम को अपने मिशन का अभिन्न अंग मानते थे। उन्होंने अंग्रेज वाइसराय के मुंह पर कहा था कि मैं प्रतिदिन परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि भारत से अंग्रेजी राज्य समाप्त हो और वह एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में उभरे। सत्यार्थ-प्रकाश में उन्होंने अंग्रेजी राज्य स्थापित होने के बाद सबसे पहले स्वतन्त्रता लेने की बात कही थी। उनका यह घोष कि विदेशी राज्य चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो, स्व-राज्य का विकल्प नहीं हो सकता, अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध १८५७ के बाद स्वतन्त्रता संग्राम के लिए पहला आह्वान था। वे जानते थे कि स्वतन्त्रता शक्ति के बिना प्राप्त नहीं हो सकती, इसलिए उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष राजस्थान के नरेशों में राष्ट्रभावना जगाने में लगाये ताकि वे अपनी सैनिक शक्ति के साथ उपयुक्त समय पर देश की स्वतन्त्रता में आवश्यक योगदान देने के लिए तैयार रहें।

१९४७ में भारत खण्डित रूप में स्वतन्त्र हो गया। हिन्दी स्वतन्त्र भारत की राजभाषा घोषित हो चुकी है। नारी शिक्षा, छुआछूत उन्मूलन और स्वदेशी सरकारी नीति का अंग बन चुके है। परन्तु हिन्दू समाज के सामने अब नई चुनौतियां आई हैं। मुस्लिम समाज फिर विभाजनपूर्व का खेल खेलने लगा है और हिन्दुस्तान को अन्दर और बाहर से दुर्बल ही नहीं, वरन् पूर्णतया नष्ट करने के लिए प्रयत्नशील है। इनकी गतिविधियों के कारण हिन्दु-स्तान और इसकी आर्य-हिन्दू पहचान के लिए घोर संकट खड़ा हो गया है।

यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवित होते तो वे इन नई समस्याओं और आक्रमणों के साथ भी उसी प्रकार जूझते और उनका मुकाबला करने के लिए समाज को नई दिशा और मार्गदर्शन देते। उनके चिन्तन और चरित्र तथा उनके द्वारा किए गये काम की पृष्ठभूमि में इस बात की कल्पना करना कि यदि वे आज होते तो क्या करते, राष्ट्र को क्या दिशा देते और क्या प्राथमिकताएं तय करते, कठिन नहीं है।

आज भारत अथवा हिन्दुस्तान और आर्य-हिन्दू जाति के सामने सबसे बड़ा संकट अपने अस्तित्व का संकट है। महर्षि ने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का घोष और कार्यक्रम अपने अनुयायियों को दिया था। विश्व से पहले अपना देश आता है। यदि हम भारत में आर्यत्व अथवा हिन्दुत्व की रक्षा नहीं कर सकते तो सारे संसार में आर्यत्व का डंका बजाने की बात बेमानी हो जायेगी। शुरुआत अपने घर से ही की जाती है। आज स्थिति यह है कि महर्षि दयानन्द के समय के भारत का ३० प्रतिशत भाग तो हमारे हाथ से निकलकर इस्लामी पाकिस्तान और बंगलादेश बन चुका है। पाकिस्तान में आर्यत्व पर गर्व करने वाले हिन्दू अब नहीं बचे। इतिहास का सप्त सिन्धु और ब्रह्मावर्त अब ऐसा क्षेत्र बन चुका है, जहां वेदमंत्र बोलने की भी किसी को अनुमति नहीं। इस सारे क्षेत्र में फैले हुए हमारे तीर्थ स्थान, देवालय और आर्यसमाज मन्दिर अब असुरों और दस्युओं के अधिकार में है और उनमें आज क्या होता है, उसकी जानकारी तक हमारे पास नहीं। बंगला देश में भी ऐसी ही स्थिति बन चुकी है। वहाँ अभी ढेढ़ करोड़ के लगभग हिन्दू हैं, परन्तु वे अपने दिन गिन रहे हैं। अगले कुछ वर्षों में वहां से भी उनका नाम निशान मिट जायेगा। उन्हें बलात् मुसलमान बना लिया जाएगा या मार दिया जाएगा या शरणार्थी के रूप में खण्डित भारत में खदेड़ दिया जाएगा।

७० प्रतिशत भाग जो आज भारत के रूप में विद्यमान है, तेजी से विघटन की ओर बढ़ रहा है। मुसलमान खुलकर इसे भी दार उल-इस्लाम बनाने की बात कर रहे हैं। उनके पीछे पाकिस्तान और बंगलादेश के अतिरिक्त संसार के अन्य बयालीस इस्लामी देशों की शह भी है और उनका हर प्रकार का समर्थन भी। पिछड़े वर्ग के हिन्दुओं का धर्मपरिवर्तन करके बहु विवाह के कानून का लाभ उठाकर अधिक से अधिक सन्तति पैदा करके और पाकिस्तान व बंगलादेश से आये घुसपैठियों को शरण देकर वे मुस्लिम जनसंख्या तेजी से बढ़ा रहे हैं। गत सैंतीस वर्षों में उनकी जनसंख्या भारत में ढाई करोड़ से बढ़कर लगभग आठ करोड़ हो गई है। ईसाइयों की जनसंख्या भी तेजी से बढ़ रही है। फलस्वरूप हिन्दुओं की जनसंख्या तेजी से घट रही है। १९८१ की जनगणना के अनुसार भारत में मुसलमान ११ प्रतिशत और ईसाई लगभग ३ प्रतिशत हो गये हैं। हिन्दू समाज की दुर्बलता के कारण सिखों का वर्ग भी अपने आपको हिन्दू समाज से अलग मानने लगा है। जहां-जहां इन अहिन्दू तत्वों का बहुमत हो गया है उन क्षेत्रों में भारत से अलग होने के आन्दोलन चलने लगे हैं। इसलिए यदि महर्षि इस समय होते तो वे एक खण्डित भारत के हिन्दू चरित्र की रक्षा हेतु उसे अविलम्ब आर्य-हिन्दू राज्य घोषित कराने के लिए अभियान चलाते। हिन्दी, गोरक्षा,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समान सिविल कानून, विदेशी पन्थों में धर्मपरिवर्तन पर रोक इत्यादि काम भारत को हिन्दू राज्य घोषित किये बिना नहीं हो सकते। इसलिए उन पर अपनी शक्ति लगाने का कोई लाभ नहीं निकल रहा। वे शरीर पर फोड़े-फुंसियों के समान हैं। उनका मूल कारण भारत रूपी शरीर में हिन्दू खून का दूषित और दुर्बल होना है। उसका काम हिन्दू समाज को राजनैतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से सबल बनाना है। उसके लिए हिन्दुस्तान को हिन्दू राज्य घोषित करना अनिवार्य है। इसलिए इस समय महर्षि दयानन्द के अनुयायियों को इस काम को प्राथमिकता देनी होगी।

आज की परिस्थिति में महर्षि सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में सबसे अधिक ध्यान, जो लोग आर्यत्व और हिन्दुत्व के मार्ग से भटक कर मुसलमान या ईसाई हो गए हैं उनका भारतीयकरण अथवा शुद्धिकरण करके उन्हें पुनः हिन्दू समाज में वापस लाने को देते। इसलिए उनके अनुयायियों और आर्य-समाज के लिए आज शुद्धि का कार्य अति महत्वपूर्ण हो गया है। इस काम में अब आर्यसमाज को अन्य हिन्दुत्ववादी संगठनों का सहयोग भी मिल सकता है।

हिन्दू समाज में छुआछूत, ऊंच-नीच का भाव अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। जाति-बिरादरी के आधार पर आरक्षण की नीति ने इस कुरीति का राजनीतिकरण कर दिया है और कुछ राजनेताओं और दलों को इसे रखने में निहित स्वार्थ पैदा हो चुका है। इसलिए इस समस्या ने एक नया और विकृत रूप धारण कर लिया है। इसके लिए भी आर्यसमाज को नए सिरे से सोचने की आवश्यकता है। हिन्दू समाज की सामाजिक एकता के बिना सांस्कृतिक और राजनैतिक क्षेत्र में भी हिन्दू और हिन्दुस्तान पिछड़े रहेंगे।

शिक्षा के सरकारीकरण और धर्मनिरपेक्षता के नाम पर नैतिक और राष्ट्रीय शिक्षा को शिक्षा क्षेत्र से अलग कर देने के कारण शिक्षा का रूप ही बदल गया है। अब यह नवयुवकों के अराष्ट्रीय करण और उनके अनैतिकता की दिशा में बढ़ने का बड़ा माध्यम बन गई है। इसलिए शिक्षा-नीति में आमूल-चूल परिवर्तन लाना और पाठ्य पुस्तकों में नैतिकता और राष्ट्रीय भावना बनाए रखने और हिन्दुस्तान को शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिए आवश्यक गया है। आर्यसमाज को इस काम की ओर भी अधिक ध्यान देना चाहिए। इस मामले में आर्यसमाज द्वारा चलाई जाने वाली शिक्षा संस्थाओं को पहल करनी चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्कृत में रुचि पैदा की जाये

—रमेश चन्द्र

(पंजाब केसरी के स्वर्गीय सम्पादक श्री रमेशचन्द्र जी ने यह लेख अपनी हत्या से कुछ दिन पूर्व लिखा था।)

उत्तर भारत में प्रायः इस बात पर बेहद चिन्ता की अभिव्यक्ति की जाती है कि संस्कृत भाषा, जो कभी आधे संसार की भाषा थी, आज अपने ही देश भारत वर्ष में अजनबी होकर रह गई है। यद्यपि हमारा सम्पूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक पुरातन साहित्य संस्कृत भाषा में ही लिखा गया है। परन्तु दुर्भाग्यवश स्थिति यह है कि आज संस्कृत के इतने विरुद्ध हम हो गये हैं कि कोई लगाव ही इससे शेष नहीं रह गया है। सत्य तो यह है कि हम संस्कृत के महापण्डित को भी अंग्रेजी के एक साधारण से विद्वान् की तुलना में नगण्य मानते हैं और दासता की मनोवृत्ति के कारण आज भी यही कहते हैं कि कालिदास भारत के शैक्सपियर थे। यह नहीं कहते कि शैक्सपियर इंग्लैण्ड के कालिदास थे। हालांकि यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि कालिदास शैक्सपियर से बहुत पहले हुए थे। इससे बड़ी विडम्बना और क्या होगी कि आज का तथाकथित शिक्षित वर्ग अब संस्कृत को पुरोहितों की भाषा समझने लगा है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि १०वीं शताब्दी से पहले संस्कृत अपने पूरे उत्कर्ष पर थी और सामाजिक पत्रव्यवहार, बातचीत और कारोबारी कामों के लिए मूलतः संस्कृत का ही प्रयोग होता था, परन्तु जब एक के बाद एक विदेशी आक्रमण इस देश पर होने आरम्भ हुए तो संस्कृत सिकुड़-सिमट कर मुट्ठी-भर लोगों की भाषा रह गई। उसके बाद फिर एक समय ऐसा भी आया जब संस्कृत की गरिमा का महत्त्व इस देश के सामाजिक नेताओं की समझ में आया और गुरुकुलों तथा पाठशालाओं के माध्यम से संस्कृत की विलुप्तप्राय महत्ता पुनः प्रतिष्ठापित करने का प्रयत्न किया गया, परन्तु जो सफलता इस प्रयास में मिलनी चाहिए थी, वह मिल नहीं पाई क्योंकि एक ऐसी धारणा सदा ही लोगों को दी गई कि संस्कृत के व्याकरण बहुत कठिन है। अतः कुछ विद्वानों ने संस्कृत का व्याकरण को सरल करने का भी सुझाव दिया परन्तु दूसरे पक्ष ने इस सुझाव को इस आधार पर मानने से इन्कार कर दिया कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसा करने से भाषा की पवित्रता नष्ठ हो जायेगी। बहरहाल, आज स्थिति यह है कि जहां उत्तरभारत में संस्कृत अपने ही घर में बेगानी होती जा रही है, वहां लगभग सारे संसार में संस्कृत का प्रचार और प्रसार कार्य आज हो रहा है। रूस में संस्कृत के बड़े-बड़े विद्वान् आज मौजूद हैं। विश्वविद्यालय स्तर पर भी संस्कृत में शोध कार्य वहां होता है। पश्चिमी जर्मनी के लगभग हर विश्वविद्यालय में संस्कृत का विभाग कार्यरत है। और तो और पश्चिमी जर्मनी के रेडियो से संस्कृत में प्रसारण भी आरम्भ हो गया है। दुःख तो इस बात का है कि हमारे डी०ए०-वी० और सनातन धर्म शिक्षण संस्थान भी संस्कृत की शिक्षा को कोई महत्त्व आज नहीं दे रहे हालांकि आर्यसमाजियों के लिए तो वेदों का पढ़ना-पढ़ाना एक अनिवार्य बात बन गई है। जो आर्यसमाजी संस्कृत ही नहीं जानते, वे वेदों को कैसे पढ़ेंगे और कैसे पढ़ायेंगे; यह एक बहुत बड़ा प्रश्न-चिह्न है।

संतोष की बात यह है कि जहां उत्तर भारत में संस्कृत को आज इस प्रकार उपेक्षित किया जा रहा है वहां दक्षिण भारत में हिन्दी विरोधी भावनाओं के बावजूद संस्कृत के प्रचार और प्रसार का काफी उत्साह से काम हो रहा है। वहां कई पत्रिकायें भी संस्कृत में छपती हैं और मैसूर से एक दैनिक समाचार पत्र 'सुधाराम' भी संस्कृत में छपता है—इतना ही नहीं स्कूलों तथा कालेजों में भी स्नातकोत्तर स्तर पर संस्कृत वहां विभिन्न पाठ्यक्रमों में मौजूद है। वहां बहस अब इस मामले पर चल रही है कि संस्कृत को अधिक से अधिक सुरुचिपूर्ण और लोकप्रिय कैसे बनाया जाये। दक्षिण भारत के ही हिन्दूसेवा प्रतिष्ठान ने देश के विभिन्न भागों में ५० से अधिक दस दिन के संस्कृत शिक्षा के कोर्स लोगों को कराये हैं। लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ की प्रेरणा पर अनेक सांसदों को इस प्रतिष्ठान ने संस्कृत सिखाई और बहुत-से आई०ए०एस० अधिकारियों ने भी इससे लाभ उठाया। इन संस्कृत पाठ्यक्रमों की मांग इतनी बढ़ गई है कि प्रतिष्ठान के लिए उसे पूरा करना कठिन हो रहा है। इसके अतिरिक्त प्रतिष्ठान ने १२०० वाक्यों की एक ऐसी पुस्तक भी तैयार की है, जिसमें हिन्दी, इंगलिश, कन्नड़ और तमिल में उन वाक्यों का अनुवाद भी मौजूद है। इस पुस्तक का उद्देश्य जहां संस्कृत के प्रति आकर्षण पैदा करना है, वहां लोगों को संस्कृत बोलना सिखाना भी है। इतना ही नहीं, अब तो दक्षिण भारत के अंग्रेजी अखबार भी इस बात पर बल देने लगे हैं कि संस्कृत की गरिमा को पुनः स्थापित करने की दिशा में पूरी निष्ठा से कार्य किया जाये।

(शेष पृष्ठ ८६ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम स्वस्थ कैसे रहें ?

—वैद्य रामरतन पोपली

आज दुनिया-भर में राष्ट्रीय स्वास्थ्य स्तर के विकास को देश की प्रगति का महत्त्वपूर्ण कारण माना जाता है और इसके लिए अनेक उपाय किये जा रहे हैं, लेकिन खेद का विषय है कि भारत में, जहां हमारी संस्कृतिक विशिष्टता और स्वस्थ जीवन के लिए आयुर्वेद के श्रेष्ठ ज्ञान के कारण देश का स्वास्थ्य स्तर सर्वश्रेष्ठ रहा है, वहां उस ज्ञान-विज्ञान की उपेक्षा के कारण राष्ट्रीय स्वास्थ्य का द्रुत गति से ह्रास हो रहा है। विडम्बना यह है कि विदेशों से करोड़ों रुपयों की दवाओं का आयात किया जा रहा है, देश में निरन्तर अस्पतालों की बाढ़ आ रही है, चिकित्सक बढ़ रहे हैं किन्तु बीमारियां भी उसी गति से बढ़ती जा रही हैं।

इन सब उपायों के बावजूद राष्ट्रीय स्वास्थ्य में निरन्तर गिरावट का एक ही कारण है कि स्वास्थ्य के लिए उपलब्ध भारत के श्रेष्ठ ज्ञान की उपेक्षा की जा रही है और तदनुकूल जनप्रशिक्षण की सुविधाएं बढाने की बजाय अंधाधुंध रोगकारक अंग्रेजी दवाओं का प्रयोग बढ़ने को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इस संबंध में यह और भी दुःखद है कि पश्चिमी देशों में जिन औषधियों को जनस्वास्थ्य के लिए घातक जानकर प्रतिबंधित कर दिया गया है, विदेशी बहुराष्ट्रीय दवा कम्पनियां उन दवाओं को भी भारत में बेच-कर करोड़ों रुपये कमा रही हैं और हमारे देशवासियों को आकर्षक आवरणों में जहर खिलाया जा रहा है।

मानसिक परिष्कार का महत्त्व

भारतीय संस्कृति और आयुर्विज्ञान में मन के साथ शरीर के स्वास्थ्य के गहन संबंध को माना गया है। इसीलिये मानसिक वृत्तियों के परिष्कार को महत्त्व प्रदान किया गया है। इसके विपरीत मनोविकारों से रोगों का आक्रमण होता है। लेकिन आज स्थिति यह है कि इस पक्ष की पूर्णतः उपेक्षा की जा रही है, इसलिए विकृतमना अस्वस्थ लोगों के कारण देश में अपराधों की बाढ़ आ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रही है। मनुष्य की अपराधी प्रवृत्ति और अधिसंख्य रूप में इसके विस्तार का कारण भी मनोरोगों का बढ़ना ही है जिसका एकमात्र उपचार भारतीय संस्कृति और आयुर्विज्ञान के तत्त्वदर्शन में ही उपलब्ध है।

हमारे मनीषियों ने इस दृष्टि से दो जीवनधाराओं की ओर इंगित किया है—पहली आध्यात्मिक या संयमित जीवन वृत्ति और दूसरी आसुरी या भोगवादी वृत्ति। आध्यात्मिक या संयमित जीवन वृत्ति से मन का परिष्कार होता है और ऐसे स्वस्थ मन की वृत्तियों से ही रोगमुक्तता का मार्ग प्रशस्त होता है। इसके विपरीत आसुरी अथवा भोगवादी प्रवृत्ति से निरन्तर भोगों की कामना के कारण लोभ, मोह, चिन्ता आदि विविध प्रकार के विकार बढ़ते हैं। फिर इन्हीं के कारण ईर्ष्या, द्वेष और कामक्रोध की ओर अभिप्रेरित होकर विविध रोगों से आक्रांत हो जाता है।

जीवन दर्शन का प्रश्न

यद्यपि प्रश्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य का है लेकिन इसका निदान जीवन दर्शन में है। बात विचित्र दिखाई देती है किन्तु यथार्थ है। जैसा ऊपर कहा गया है, मन की वृत्तियों का शरीर-स्वास्थ्य से गहन संबंध है, इसलिए यह जानना भी आवश्यक है कि मानसिक स्वास्थ्य से जीवन दर्शन का गहन संबंध है। वैज्ञानिकों के अध्ययन से भी सिद्ध हो जाता है कि भारत की वर्तमान स्थिति में भी यहां की तुलना में पाश्चात्य देशों में मानसिक रोगियों की संख्या अधिक है और मानसिक कारणों से वे अधिक आत्महत्याएं करते हैं। यद्यपि यह भी सत्य है कि पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण के कारण मनोविकृति की वह रफ्तार अब यहां भी तेज हो रही है, किन्तु अभी तक भारत में अपेक्षाकृत मनोरोगों का आक्रमण कम होने का कारण यहां का जीवन दर्शन ही रहा है। भारतीय जीवन-दर्शन में भौतिकवाद और भोगवाद को ह्रास माना गया है—तप, त्याग तथा संयम द्वारा इन्द्रिय निग्रह को उत्कृष्ट माना गया है। यही कारण है कि हमारे महापुरुषों की अनन्य शृंखला में संयमी और त्यागी पुरुषों की विस्तृत नामावली दृष्टिगोचर होती है। राम और कृष्ण जैसे राजाओं से लेकर दयानन्द, विवेकानन्द और महात्मा गांधी जैसे संतपुरुष उसी संयम और त्याग की परिधि में आते हैं। भारतीय संस्कृति के इसी उत्कृष्ट जीवन-दर्शन की धारा में अवगाहन कर इस देश में लोकमान्य तिलक, सुभाष, पं० मदनमोहन मालवीय, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अनेक दिव्य पुरुष उत्पन्न हुए जिन्होंने अपनी असीम दिव्य शक्तियों से राष्ट्र को चमत्कृत करने वाले कार्य कर दिखाये। इसके विपरीत हमारे उत्कृष्ट जीवन-दर्शन के ह्रास और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भ्रष्ट पाश्चात्य जीवन-दर्शन के अनुकरण का ही यह परिणाम हुआ कि स्वतन्त्रता के पश्चात् राष्ट्रीय जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों में प्रभावी दिशापरक और तेजस्वी नेतृत्व का अभाव हो गया है और ,व्यक्तियों के साथ ही सारा राष्ट्र रुग्ण दिखाई देने लगा है।

स्वस्थ जीवन की गारन्टी

यह कैसी विडम्बना है कि जब विश्व के देशों में स्वास्थ्य एवं आयु दर बढ़ाने की होड़ चल रही है, हम स्वास्थ्य और आयु को भाग्य की देन मान कर वास्तविकता से पलायन कर रहे हैं। अनियमित जीवनचर्या, अस्वस्थ भोगवादी चिंतन और गलत आहार-विहार से अकाल मृत्यु को प्राप्त कर यह कहना कि इतनी ही आयु भाग्य में लिखी थी, भ्रामक और भारतीय संस्कृति के विपरीत चिंतन है।

वेदों में स्पष्ट रूप से "जीवेम शरदः शतम्" की घोषणा करते हुए स्वस्थ और कार्यक्षम रहते हुए सौ वर्ष तक जीने की घोषणा की गई है। उक्त कथन का यह स्पष्ट अर्थ है कि मनुष्य निश्चित रूप से वेद-विहित जीवनचर्या का पालन करते हुए सौ वर्ष तक कार्यक्षम रहते हुए जी सकता है और अल्पायु में मृत्यु होना भाग्य नहीं अपितु असंयमित जीवन का परिणाम है। परन्तु वस्तु स्थिति यह है कि हम उस सांस्कृतिक ज्ञान-धरोहर की उपेक्षा कर व्यसनों में फंस जाते हैं और फिर स्वास्थ्य खरीदने के लिए तथाकथित आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की शरण में भागते हैं। हम भूल जाते हैं कि महर्षि दयानन्द जैसे तत्त्वदर्शी ने आयुर्वेद को उपवेद मानकर आयुर्वेद के आदि ग्रन्थों को आर्ष ग्रन्थ मानते हुए इस विज्ञान से पूर्ण लाभ उठाने की संस्तुति की है।

उपाय क्या है ?

राष्ट्रीय जनस्वास्थ्य को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए रचनात्मक उपाय बड़ा सरल है। वह यह है कि हिन्दू धर्म के प्रचारक और कार्यकर्ता धर्म और ईश्वर की चर्चा के साथ भारतीय संस्कृति के व्यावहारिक पक्ष को जनता के सामने क्रियात्मक रूप में रखें और मनोविकारों को दूर कर संयमित और सारे जीवन को अपनाने की शिक्षा तथा आयुर्वेद-विहित स्वास्थ्य चर्या के बारे में जानकारी दें। यह खेद का विषय है कि भारतीय संस्कृति को मानने वाले भी भ्रमवश पाश्चात्य जीवन पद्धति एवं चिकित्सा पद्धति को वैज्ञानिक मानते हैं, जबकि यह स्पष्ट हो चुका है कि प्रत्येक नई शोध द्वारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजी औषधियों में से बहुसंख्य को हानिकारक घोषित करके प्रतिबंधित कर दिया जाता है। प्रश्न है कि इतने दिन जिन गलत औषधियों का मानव देह पर प्रयोग किया जाता वे वैज्ञानिक कसौटी पर खरी कैसे रहीं? इसके विपरीत आयुर्वेदोक्त स्वास्थ्य चर्या का पालन करने से प्रायः रोग आयेंगे ही नहीं। हमारे सांस्कृतिक वाङ्मय में सर्वत्र इस उत्कृष्ट जीवन-सन्देश की झलक मिलती है। गीता में इस संबंध में चार-सूत्री कार्यरत बताया गया है। वह है युक्ताहार, युक्त विहार, युक्त चेष्टा और युक्त स्वप्नबोध।

गीता के इस एकश्लोक का लाक्षणिक अर्थ ही दिया गया है अन्यथा विशद रूप में इस एक श्लोक में समस्त भारतीय जीवन दर्शन का तत्त्व सन्निहित है।

आहार पक्ष को ही लें तो हम देखेंगे कि विविध प्रकार के शीतल पेय, काफी, चाय जैसे गर्म व मादक पेय तथा धूम्रपान आदि विष हमारे लोकजीवन के अंग बन गए हैं। इन्होंने जन स्वास्थ्य को शक्ति विहीन बनाकर रोगों का घर बना दिया है। परिवार नियोजन के कृत्रिम साधनों द्वारा नई पीढ़ी को अनियंत्रित वासना के प्रवाह में बहने देकर तेजहीन बना दिया गया है। समय की मांग है कि हिन्दू विद्वान् शिव संकल्प लेकर युवा पीढ़ी को इस पतन से बचाएं और शतवर्षीय जीवन के वैदिक सन्देश को जन-जन तक पहुंचाएं। ☆

(पृष्ठ ८२ का शेष)

मैं समझता हूं कि देश की स्वाधीनता के बाद यदि संस्कृत को ही इस देश की राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया जाता तो दक्षिण भी उसका स्वागत ही करता और इस विरोध का सामना संस्कृत को नहीं करना पड़ता जो हिन्दी को करना पड़ रहा है।

बहरहाल, अब भी समय है कि संस्कृत के महत्त्व को समझा जाए और उसकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध हर स्तर पर किया जाए। इससे जहां हमें अपने पुराने सांस्कृतिक और धार्मिक कोष का ज्ञान होगा इससे वहां राष्ट्र को एक लड़ी में पिरोने में बड़ी सहायता मिलेगी। कुछ अर्सा पहले जिस तरह पाकिस्तान टैलीविजन से उर्दू सिखाई जाती रही है, उसी तरह भारतीय दूरदर्शन भी लोगों को संस्कृत सिखाने में सहायक हो सकता है। अगर हम संस्कृत के प्राचीन गौरव को बहाल करने में रूस तथा पश्चिमी जर्मनी जैसे देशों से कोई प्रेरणा नहीं लेना चाहते तो न सही, दक्षिण भारत का ही अनुसरण इस मामले में हमारे शिक्षा शास्त्रियों विशेषकर डी०ए०-वी० और सनातन धर्म शिक्षा संस्थानों के संचालकों को करना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू समाज को नष्ट करने की सुनियोजित योजना

—आचार्य मित्रजीवन

इस्लाम धर्म की स्थापना कैसे हुई इस पर मैं थोड़े-से विचार आपके समक्ष रखूंगा ! इस्लाम शब्द अरबी का है जिसका अर्थ होता है सम्पूर्ण समर्पण । हजरत मुहम्मद मुस्तफा ने आज से लगभग १४०० वर्ष पूर्व इस धर्म की स्थापना, इस विश्वास की स्थापना अरब की धरती पर की।

इस्लाम में सबसे पहला जो वजूद है वह अल्लाह का है यानी अल्लाह शब्द जो है वह संस्कृत का शब्द है । मोहमद यानि महमद शब्द भी संस्कृत में मिलता है । मुहम्मद शब्द में से उ को निकाल दें तो महमद हो जाता है तथा म को निकाल दें तो अहमद हो जाता है । इस्लाम में छः बातें हैं। पहली बात अल्लाह पर ईमान, उसके बाद मुहम्मद पर ईमान जो रसूल है, तीसरा साक्षी यानी शहादत, चौथा नमाज, रोजा जकात और हज ये छः बाते हैं। और जो इन छः बातों को मान लेता है उसे मुसलमान कहते हैं। एक बार हजरत मुहम्मद से पूछा गया कि मुसलमान होने का क्या अर्थ होता है ? मुहम्मद ने कहा कि मुसलमान तो शहद की मक्खी होता है । शहद की मक्खी फूल-फूल पर झूमती है, पराग लाती है, अपने पेट में हजम करती है और शहद बनाती है—अपने लिए नहीं दूसरों के लिए और जिस शाख पर बैठती है उसे कभी नुकसान नहीं पहुंचाती । मक्खी बिना पराग लिये कभी शहद नहीं बना सकती और जहर कभी बना नहीं सकती क्योंकि उसका स्वभाव है । मनुष्य ने उसको अनको बार सताया होगा पर उसने आज तक भी शहद बनाना नही छोड़ा । मेरे आज तक के जीवन में जितने भी दिन मैं इस्लाम की दुनिया में रहा आज तक एक भी मुसलमान ऐसा नही मिला जिसका जीवन मधु जैसा मीठा हो । हजरत मुहम्मद से लेकर आज तक मुझे एक भी मुसलमान ऐसा नहीं मिला जो मधु मक्खी की तरह मीठा हो, बुराई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को अपने पास न आने देता हो और वह दूसरों की भलाई के लिये जीता हो जैसे कि शहद की मक्खी। खुद अमन में रहता है और दूसरों को अमन में रहने देता हो। यह इस्लाम की बात है मुसलमान की परिभाषा। मुझे तो एक भी ऐसा मुसलमान मिला नहीं यदि आपको मिला हो तो कह नहीं सकता। मुहम्मद साहब आगे एक और बात कहते हैं कि मुसलमान तपाया हुआ सोना है। हम लोग इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि जब सोना आग में तपा दिया जाता है तो वह सोना नहीं रह जाता वह कुन्दन हो जाता है। कुन्दन उसी सोने को कहते हैं जो आग की भट्टी से गुजर चुका हो, जिसके अन्दर और बाहर मैल न रह गया हो। वह कुन्दन चाहे आप उसका आभूषण बना कर पहनें या कहीं घर में रखें उसकी चमक और दमक जा नहीं सकती। मैं ईमानदारी के साथ कहना चाहूंगा कि मुझे आज तक एक भी मुसलमान ऐसा नहीं मिला जो कुन्दन की तरह चमकता और दमकता हो।

महात्मा गान्धी से एक बार पूछा गया कि आप बहुत कुरान शरीफ पढ़ते है, इस्लाम को समझते हैं और कुरान आपको बहुत पसंद है, तो "आप मुसलमान क्यों नहीं बन जाते?" वे बोले "मैं कुरान जरूर पढ़ता हूं और कुरान को थोड़ा बहुत समझता भी हूं। लेकिन मैं अबूबकर और उमर जैसा मुसलमान हो नहीं सकता हूं और तुम्हारे जैसा मुसलमान मैं बनना नहीं चाहता हूं।" आज जो मुसलमान की परिभाषा मैंने आपके सामने रखी है वह एक बहुत ऊंचाई का मुसलमान है।

भारत में जो कुछ अत्याचार मुगल शासन काल में गुजरा है संसार में इससे भी कहीं अधिक मुस्लिम इतिहास में गुजरा है। मैं तो कुरान शरीफ की उस आयत को समझता हूं और मैं मानता हूं कि अल्लाह ताला ने जब आदम को बनाने की बात की तो फरिश्तों ने इसका बहिष्कार किया और कहा कि आप आदम को मत बनाइये और दलील यह दी कि जिस इन्सान को आप बनाने जा रहे हैं वह अपनी इस सुन्दर-सी सृष्टि को खून से भर देगा, रंग देगा। हम आपकी स्तुति करते हैं,प्रार्थना करते हैं। लेकिन अल्लाह ताला ने उन फरिश्तों की, देवताओं की बातों को अस्वीकार कर दिया। और हम यह देखते हैं कि बेटों में से एक ने अपने ही भाई की सबसे पहले खून कर दिया। आदम की पहली औलाद हत्यारी थी। तब से ही आदम की औलाद इन्सान को इन्सान के ही खून से रंगती चली आ रही है। शायद ही दुनिया का कोई हिस्सा हो जहाँ मनुष्य ने मनुष्य के खून से होली न खेली हो और अल्लाह के नाम पर जो कुछ इस जाति ने किया उसका साक्षी इतिहास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। उस मुसलमान की बात आज इस देश के साथ, धर्म के साथ बड़ी गहराई के साथ जुड़ गयी है।

आपको शायद यह मालूम न हो कि कुछ हदीसों में इस बात का उल्लेख है। भारत यानी जिसे वे हिन्द की धरती, इस्लाम की धरती है, मुसलमान की धरती है, कहते हैं। इसके लिये हदीस यह बताती है कि जब आदम ने गुनाह किया और गुनाह करने के बाद अल्लाह ताला ने उसे जमीन पर गिरा दिया तो आदम हिन्दुस्तान की सर जमीन पर गिरे और हव्वा जो उनकी पत्नी थी जिद्दा में गिरी और यहीं से आदम मक्का की तरफ रवाना हुए और हव्वा जिद्दा से मक्के की तरफ रवाना हुई और इस तरह वे मानते हैं कि मक्का में वह स्थान जो काबा है वह सारी मानवता के मिलने का संगम है क्योंकि वहां सम्पूर्ण मानव जाति के पिता आदम और उनकी पत्नी हव्वा पहली बार मिले थे। और उनका यह कहना है कि यह हिन्दुस्तान, यह भारत जिस पर हमारा बाप यानी हजरत आदम जिस पर पहली बार तशरीफ लेकर आये जो पहले इन्सानों की भी पहला बाप था और पहला नबी था उसकी यह धरती है। यहां कुफ्र नहीं रहना चाहिये, यहाँ काफिर नहीं रहना चाहिये। हम यहां देखते हैं कि यहां से काफिर और कुफ्र को मिटा देने के लिये संसार के सभी मुस्लिम देश इस बात के लिये सचेष्ट हैं कि भारत इस्लाम का सशक्त केन्द्र बने। भारत हिन्दू देश है। हिन्दू बहुसंख्यक देश है, कहीं हिन्दू मुसलमान और उसके वजूद को नष्ट न कर दे। अगर मुसलमान हिन्दुस्तान मे मिट गया तो उनका वह जो स्वप्न है जो हजरत मुहम्मद ने कहा था कि हिन्दुस्तान जो इस्लाम की धरती है वहाँ पर भगवा रंग और जो हिन्दू मजहब है वह पनपना नहीं चाहिये। और आज सब मुसलमान हिन्दुस्तान की तरफ आंख उठा कर देख रहे हैं, और आज वह इस्लामी करण की बात मुसलमान बनाये जाने की बात हो रही है, वह एक बहुत बड़ी योजना है, सुनियोजित योजना है, बहुत बड़ा षड्यन्त्र है। इस षड्यन्त्र को कारगर करने के लिये, इसे सफल बनाने के लिये उन अशक्त लोगों को, अशिक्षित लोगों को, पीड़ित लोगों को हथियार बनाया है जो हमारी नासमझी के कारण, हमारे अज्ञान के कारण अलग रहे। तो आज इस बात की जरूरत है कि हम हर प्रकार से एक हों और जो हमारे बिछुड़े अंग हैं अपने जीवन में मिलालें।

आज हमारे चारों ओर इस प्रकार की बात बन चुकी है कि धरती को माँ के रूप में नहीं पत्नी के रूप में भोगने को तैयार हैं कुछ लोग। हम इस पुण्य भूमि को इस धर्म भूमि को अपनी माँ मानते हैं। मुसलमान ऐसा नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानता। मुसलमान के लिए ऐसा मानने का कोई कारण भी नहीं है। वह नतमस्तक है तो अरब की धरती की ओर नतमस्तक है। हजरत मुहम्मद ने अपनी जिन्दगी में बहुत बड़ा काम किया। वह एक मनोवैज्ञानिक राजनैतिक पुरुष था; धार्मिक नहीं था। इस्लाम के झण्डे पर जो चंद्राकार निशान है वह चंद्रमा का नहीं बल्कि अरब की उस उपजाऊ जमीन का आकार है जहां से उन्हें उपज मिलती है। इस धरती के आकार को उन्होंने अपने अपने झण्डे का निशान माना है। दुनिया का मुसलमान चाहे वह कहीं का रहने वाला हो उस चन्द्रमाकार यानी अरब की उस धरती को अपनी धार्मिकता का चिह्न मानता है, प्रतीक मानता है। मुहम्मद साहब ने एक राष्ट्रवादी धर्म के रूप में यानी मुसलमान के रूप में पैदा कर दिया। मुहम्मद ने दुनिया के सभी मुसलमानों को नमाज के रूप में काबा शरीफ की ओर झुकने के लिये मजबूर कर दिया। मुसलमान चाहे वह अमेरिका का हो, चीन का हो या जापान का चाहे कहीं का भी हो जब वह नमाज़ पढ़ता है तो परमात्मा की ओर नहीं वह तो सर्वत्र है, वह काबा की ओर ही झुक कर नमाज पढ़ता है। खुदा की आड़ में देश की परस्तिश होती है—नेशन की इबादत होती है, मुसलमान कभी इस बात पर सोचता नहीं। काबा सेन्टर बन गया है संसार के समस्त मुसलमानों का। सुन्नत देकर हजरत मुहम्मद ने यह बात लागू कर दी कि जो मुसलमान होगा उसे हजरत मुहम्मद की तरह ही रहना होगा। जो कुछ उन्होंने किया जैसे वे जिये उसी के मुताबिक जीना होगा। इसका अर्थ क्या है? कि छटी शताब्दी का एक व्यक्ति २०वीं शताब्दी के लोगों को सुन्नत का चोला पहना कर मजबूर कर रहा है कि तुम छटी शताब्दी के लोगों की तरह रहो यानी विकास की प्रक्रिया और प्रगति का कोई स्थान नहीं। २०वीं शताब्दी का आदमी छटी शताब्दी के आदमी की तरह रहने को मजबूर है इस्लाम के रूप में। आज के बुद्धि जीवी को इस बात को सोचना है। मुसलमान को भी सोचना है।

जब कुरान इस बात को मानता है कि अल्लाह सर्वत्र है, भले ही वे उसे सर्वव्यापक नहीं मानते लेकिन उपस्थित तो मानते हैं। फिर एक ही तरफ, एक ही दिशा में एक ही केन्द्र की तरफ नमाज क्यों होती है? इसलिये कि प्रत्येक आदमी चाहे वह किसी भी निवास में रहता हो अगर वह मुसलमान है तो उसका माथा उसका सिर, उसका समूचा शरीर, तन और मन काबा की तरफ झुकेगा अर्थात अरब उस पर आधिपत्य करेगा। हम परमात्मा को मानने के लिये तैयार हैं। इस लाभ को भी मान लेते है। पर मैं यह बात

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं समझा कि इस्लाम यदि परमात्मा के प्रति समपर्ण है तो एक ही दिशा में इबादत क्यों की जाती है ? आज के विचारवान् मुसलमान को इस बात पर विचार करना है ।

कुरान शरीफ में कुछ ऐसी आयतें है जो आज संसार के मुसलमान को पुकारती है उनके अमन चैन के लिये । मैं यह कहता हूं कि इस्लाम जहां अहिंसा की तालीम देता है जब से यह चला आज तक उसकी सारी प्रवृत्तियां हिंसात्मक रही हैं लेकिन वहां हिंसात्मक प्रवृत्तियां लाने के बाद और उन पर अमल करने के बाद मैं कहता हूं कि कुरान पर और इस्लाम पर सही रूप से अमल नहीं किया गया क्योंकि कुरान लाइलाह इल इल्लाह के दीन की तालीम देता है...। वह कहता है कि दीन के क्षेत्र में जबरदस्ती नहीं । इस्लाम मानी हिंसा रहित । इसका अर्थ यह हैं कि हिंसा रहित अहिंसात्मक धर्म ही है । कुरान में एक आयत इस तरह की मिलती है—

वल्ला वुलाह······। कि अल्लाह ताला फसाद को इस धरती पर पसंद नहीं करता । लेकिन हजरत मुहम्मद से आज तक सम्पूर्ण मुस्लिम इतिहास में इस पर अमल नहीं हुआ । मुहम्मद साहब का हुक्म है कि जो लोग नमाज नहीं पढ़ते हैं, उनके घरों और झोंपड़ियों को जला दो । यह तो कुरान पर अमल नहीं हुआ; कुरान की आत्मा और उसकी रूह के खिलाफ बात हुई ।

तब इस बात की बड़ी सख्त जरूरत है कि हम लोग जो मानवतावादी हैं, जो मानवता को जीवन में श्रेष्ठतम वस्तु मानते हैं और मानवीय लोगों के साथ इस धरती पर जीवन जीना चाहते हैं; कम से कम एक जुट हों । वे चाहे किसी भी नाम के हों, किसी भी रूप के हों, किसी भी रंग के हों, किसी भी देश के हों, किसी भी जाति के हों, किसी भी धर्म के हों, कुछ भी उनकी आस्था हो, यदि वे मानवता प्रेमी हों तो मैं सोचता हूं कि कम से कम जैसे आर्यसमाज है जो श्रेष्ठतम मनुष्यों की एक विराट् संस्था है । इसमें नाम, रंग-रूप जाति का कोई सवाल ही नहीं हैं । यह बुद्धिजीवियों का, आम लोगों का मंच है । इस मंच से सम्बद्ध होकर शायद कुछ ऐसे लोग विचार कर सकें और अपनी आवाज को संसार में उठा सकें कि उन धर्मशास्त्रों पर, उन शिक्षाओं पर सारे संसार के लोग पूरी शक्ति से रोक लगवायें जो मानवीय दुनिया के विरुद्ध हैं; वह चाहे बाईबिल हो, कुरान हो या कोई और शास्त्र हो जो मनुष्य को काफिर कहता हो, हीलम कहता हो और म्लेच्छ कहता हो । मनुष्य संसार की सर्वोत्तम कृति है । मनुष्य को भारतीय संस्कृति

(शेष पृष्ठ १०३ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महिला जगत्

बच्चों को व्यावहारिकता की शिक्षा दीजिए

—विमला उपाध्याय

रवि इन्जीनियर हो गया है। दो हजार रुपए कमाता है। घर के काम-काज के लिए नौकर रख लिया है। हाल में ही शादी हुई है। घर में पति-पत्नी हैं, बस; फिर भी दिनरात चख-चख मची रहती है। उन्हें घर के काम-काज (मसलन सब्जी खरीदना, खाना बनाना, सलाद काटना-परोसना, घर की सजावट पर ध्यान देना आदि-आदि) में न कोई रुचि है और न उसकी जानकारी है। पता चला है कि रवि किसी सेठ का लड़का है, जो बराबर होस्टलों में रहा और पढ़कर इन्जीनियर बन गया, जबकि उसकी पत्नी सुस्मिता एक बड़े अधिकारी की बेटी है, जिसका ठाट-बाट देखते ही बनता है। वह कभी रसोई घर में घुस जाती, तो उसकी मम्मी चिल्लाकर कहती—"जल्दी भागो वहां तुम्हें क्या करना।" कोई मजाक में ही सहज भाव से कह बैठती, "इसे रसोई बनाना सीखना चाहिए। ससुराल वाले क्या कहेंगे?" वह छूटते ही उत्तर देती, "मैं ऐसा घर ही नहीं खोजूंगी जहां इसे रसोई में जाना भी पड़े।"

दूसरी ओर रमेश का पारिवारिक जीवन इसलिए अस्त-व्यस्त रहता है कि उसकी आय सीमित है पर खर्च असीम। उसके दो बच्चे है। किसी कमीज का बटन भी टूटे, तो बिना दर्जी के घर गए उपाय नहीं है। उसकी पत्नी रीना काफी 'स्मार्ट' और शिक्षिता है, पर सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, इस्त्री करने आदि की जानकारी नहीं है। गत वर्ष सब लोगों का बना बनाया स्वेटर खरीदने में ही उसके महीने भर का वेतन निकल गया। फिर पूरा महीना उधार पर चला। आर्थिक तंगी के कारण वह परेशान है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस प्रकार यह देखा जा रहा है कि अज्ञान, प्रमाद, आलस्य और सर्वोपरि झूठे अहंकार के कारण माता-पिता बच्चों को प्रारंभ से ही जीवन में प्रवेश की व्यावहारिक शिक्षा नहीं देते। मसलन, घरेलू कामों को उपेक्षा की नजर से देखा जाता है। बड़े अधिकारी, करोड़पति और बड़े बाबू की संतान ही क्यों, सर्व साधारण भी घरेलू कामों के पचड़े में नहीं पड़ते। इसका नतीजा यह होता है कि जीवन में प्रवेश करते ही कठिनाइयों का पहाड़ टूटने लगता है। सच पूछिए तो बच्चों की सारी शिक्षा-दीक्षा का एक ही उद्देश्य है—जिंदगी के मसलों से संघर्ष करने की शक्ति अर्जित करना—व्यावहारिकता का सही पाठ पढ़ना। कोई बच्चा कितना ही पढ़ ले, पर उसे एक दिन जिंदगी से नजर मिलानी ही पड़ेगी, तब किताबी ज्ञान कम काम देगा, व्यावहारिक ज्ञान की अधिक जरूरत पड़ेगी। इसलिए अभिभावकों का यह अनिवार्य कर्तव्य हो जाता है कि बच्चों को प्रारंभ से ही सैद्धांतिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा भी देते जाएं! आचार्य विनोबा भावे ने एक लेख लिखा है—"जीवन और शिक्षण" जिसमें इस बात पर बल दिया गया है कि शिक्षा जीवनोन्मुख (लाइफ ओरियंटिड) हो। जो कुछ स्कूलों में सिखाया जाए, उसे व्यावहारिकता की कसौटी पर परखा जाए। शिक्षा और जीवन का तालमेल हो—दोनों साथ-साथ चलें, परन्तु अभी व्यवस्था की विडंबना यह है कि किताबी बस्तों के बोझ से बच्चे दबते जा रहे हैं। कोमल मति के सुकुमार बच्चे, आंखों में उत्सुकता की छाया और उन पर बीस-बीस किताबों का बोझ। गृहकार्य (होम टास्क) करते-करते ही उनका दम निकलने लगता है! फिर वे घर के काम में क्या रुचि लें?

मुझे उस दिन बड़ा दुःख हुआ, जब कृषि विज्ञान में स्नातक छात्र (जो एक बड़े किसान का पुत्र है) धान की फसल नहीं पहचान पाया। गृह-विज्ञान पढ़ने वाली छात्रा अपनी रसोई की थोड़ी भी देखभाल नहीं कर पाती। इतना ही नहीं, कान्वेंट स्कूलों में लगातार आठ-दस वर्ष तक नैतिक विज्ञान (मॉरल साइंस) पढ़ने वाली छात्रा अपने भाई के प्रति न उदार हो पाती है और न माता-पिता के प्रति सहयोगात्मक रवैया अपना पाती है। पड़ोसी बच्चों से तू-तू, मैं-मैं तकरार की आए दिन नौबत आती रहती है। उनके पास दूसरों के लिए शिकायतों का अंबार लगा है, पर अपनी कर्तव्यनिष्ठा के प्रति जरा भी जागरूकता नहीं है। ऐसी हालत में नैतिक शिक्षा का क्या उद्देश्य हुआ?

व्यावहारिक शिक्षा पाए बिना उनका जीवन में प्रवेश हनुमान-कूद होगा,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिससे हाथ-पैर टूटने की संभावना है। इसलिए इस मसले पर दो तरह से सोचा जाए—बच्चों का पाठ्यक्रम ऐसा हो, जिसमें जीवन की रोजमर्रा की समस्याओं से निबटने का प्रावधान हो। इतना ही नहीं, इस बात पर बल दिया जाए कि वे इसे दैनिक जीवन में आजमा कर देखें। मसलन, गृहविज्ञान का वर्ग केवल स्कूलों में न हो, बच्चे घर में सलाद काट कर, रोटी बनवा कर, एक-दो सब्जियां बनाकर उसे मन में उतार लें। स्कूलों में बागबानी होती है, बच्चे अपनी क्लास का कमरा भी साफ करते हैं, वहां वे आज्ञा और कर्तव्य परायणता की मूर्ति बने रहते हैं। वे पिता के साथ घर की बागबानी में हिस्सा बंटाएं और माता के साथ घर की सफाई में जुट जाएं। सिलाई, कढ़ाई, बुनाई की परीक्षा के समय बाजार से खरीद कर या अपनी मां-बहनों से उन्हें बनवाकर उत्तीर्णांक प्राप्त किये जाते हैं और मौका पड़ने पर उन्हें दुःखद नियति से गुजरना पड़ता है। सिद्धान्त के प्रयोग और व्यवहार में पूरा सामंजस्य हो। इस ओर शिक्षाविदों और स्कूली पाठ्यक्रम निर्धारकों का ध्यान जाना चाहिए। घर में माताएं इस ओर ध्यान दें।

सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि बच्चा नागरिकता, त्याग, सहिष्णुता परदुःखकातरता और घरेलू काम-काज का सच्चा सबक माता के चुंबन और पिता के प्यार के मध्य सीखता है। माता-पिता को इस कर्तव्य से कौन विमुख कर सकता है? भले ही शिक्षाशास्त्री उनके पाठ्यक्रम पर ध्यान न दें, पर माता-पिता उन्हें जीवन की तैयारी तो करा ही सकते हैं। बच्चों में साहस, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता, कष्टसहिष्णुता के भाव भरने के लिए अभिभावकों को बहुत नाटक करना पड़ेगा। उस दिन बल्लू ने सब्जी खरीदने के चार रुपए एक निर्धन बालक को दे दिए, जो एक किताब के लिए रो रहा था, स्कूल जाने से डर रहा था। उसने खाली झोला रखकर सहमते हुए जब यह दास्तान सुनायी, तो उसके पिता ने उसे गोद में उठाकर शाबाशी दी। राजू ने मां की बीमारी में पिता को घर के काम-काज में काफी मदद की, मीना भी राजू की पीठ पर रही। स्वस्थ होने पर मां ने उन्हें वांछित खिलौने और कपड़े दिए। इससे उनका उत्साह बढ़ता गया।

युंग का कहना है कि बच्चों में सृजनशीलता काफी मात्रा में होती है। अब यह उनके प्रशिक्षण पर निर्भर करता है कि वे इसका उपयोग किस प्रकार करते हैं। जीवन की सच्ची प्रयोगशाला घर-परिवार है, सच्चे शिक्षक माता-पिता हैं। वे बच्चों को प्रारंभ से ही जीवन में जूझने और विजयी होने योग्य बना दें—इसका ध्यान उन्हें रखना है। इसमें माताओं की भूमिका अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण है। ☆

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

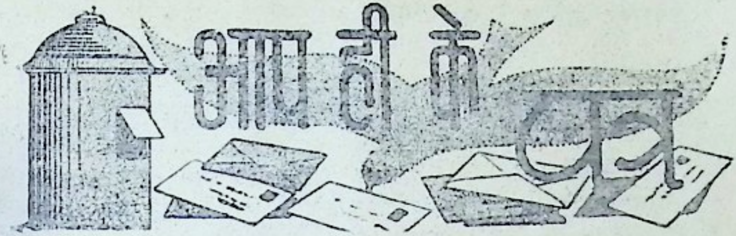

सत्य की विजय होगी

पूज्या माताजी,

एक वर्ष से "जनज्ञान" नियमित रूप से पढ़ रहा हूं। पढ़ने पर मन एवं आत्मा में देशभक्ति जागृत हो जाती है। महात्मा वेदभिक्षु जी के निधन का समाचार पढ़कर मन शोक सागर में डूब गया। वे एक आदर्श देशभक्त और महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे। महात्मा जी की पवित्र आत्मा को परमेश्वर शांति प्रदान करे।

फरवरी अंक में शासन द्वारा २७वां अभियोग लगने का समाचार पढ़कर बहुत आश्चर्य हुआ। जिस राष्ट्र में धर्मात्माओं पर अत्याचार होता है और जो सरकार बिना सत्य जाने धर्मात्माओं व देशभक्तों को दंड देती है, वह शीघ्र ही नष्ट हो जाती है। आश्चर्य की बात है कि राष्ट्रद्रोही, भिण्डरांवाला जो हथियार खरीदने का और उत्तेजनाजनक भाषण देने का अपराध कर रहे हैं, शासन उन्हें दण्ड नहीं देता और आप जैसी एक देशभक्त देवी पर अभियोग चलाता है। आप धैर्य रखिए? सत्य की विजय होगी देशद्रोहियों का नाश होगा। आपका सन्देश जग में दूर तक फैलेगा। राष्ट्रों के अज्ञान निद्रा से जागने में समय लगता है।

देवरचन्द्र आर्य

केरला (पाली)

आप कर्त्तव्यपरायण और साहसी हैं

पंडिता राकेशरानी जी,

आपका कार्य एवं साहस महान् है। आप अपने कार्य में कटिबद्ध रहिये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईश्वर अवश्य आपकी रक्षा करते रहेंगे और आर्य जन जो अब भी सहयोग दे रहे हैं, देते रहेंगे।

अब्दुल्लापुर, डा० कुरेडी खेड़ा
जि० सहारनपुर

डॉ० महावीर प्रसाद शर्मा

ईश्वर जरूर सफलता देगा

आदरणीय राकेशरानी जी,

मैं जनज्ञान (मासिक) का नियमित पाठक हूं। आपने हिंदू जाति की सेवा का प्रण करके भारत को हिन्दू राज्य घोषित कराने का जो बीड़ा उठाया है, इसके लिए हार्दिक धन्यवाद। लक्ष्य पर अटल रहने वाले को ईश्वर जरूर सफलता देगा। किसी भी संकट के समय आपका यह सेवक अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार है।

नान्द्रा (प० निमाड़)

सुरेन्द्रकुमार पटेल

आप झांसी की रानी के तुल्य हैं

सम्माननीया,

आपके "जनज्ञान" की ओजपूर्ण, वीरोचित, और हृदय को हिला देने वाली भाषा पढ़ता हूं तो यह सोचकर कि एक वीरांगना बहन हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए जुझारू संघर्ष कर रही है और हमारा शासन उन पर मुकद्मे पर मुकद्मे चला रहा है, मस्तिष्क के तार झंकृत होने लगते हैं। यह कैसी विडम्बना है कि आपको साम्प्रदायिक कहा जाता है। क्या देशभक्ति साम्प्रदायिकता है? क्या अन्य देशों में हिन्दू स्वतन्त्र हैं? क्या शासक यह सब नहीं जानते? ऊंची-ऊंची कुर्सियों पर बैठने वाले निरक्षर तो नहीं हैं। एक से एक विद्या और ज्ञान का गर्व करने वाले हैं।

आप संघर्ष करिए। आपकी सहायता के लिए हम हमेशा आपका साथ देंगे। अपनी बुंदेलखण्ड की वीरांगना की रानी लक्ष्मीबाई (झांसी) में आस्था रखते हुए हम हर एक बुन्देलखण्डी से अपेक्षा करते हैं कि वह इस कार्य में आपको जरूर सहायता दे। मेरी बहन! दुःखी मत होना। यद्यपि वेदभिक्षु जी के न रहने से आप पर वज्रापात हुआ है, तथापि प्रकृति का नियम समझकर धैर्य रखना। आपको शक्ति देने के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करता हूं।

पर्वत सिंह 'निरंजन'

जालौन

यह क्या हो रहा है ?

पूज्य बहन,

"जन-ज्ञान" का दिसम्बर अंक पढ़ा। ऐसा प्रतीत हुआ कि हिन्दू समाज के साथ बड़ा ही खिलवाड़ किया जा रहा है। आदरणीय बहन मैं आपके कदम से कदम मिलाकर हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए आगे कदम बढ़ाना चाहता हूँ।

श्यामबिहारी कटियार

अरौल

उन्होंने आश्रम व्यवस्था को साकार किया

पूज्या राकेश रानी जी,

"जन-ज्ञान" में महात्मा वेदभिक्षु जी के आकस्मिक देहावसान का समाचार पढ़कर हार्दिक दुःख हुआ। महात्मा जी के निधन से आर्य जगत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति की एक अपूरणीय क्षति हुई। वे अपने जीवन में सदैव दीन दुःखियों, अनाथों एवं असहायों के लिए सेवा एवं प्रचार कार्य में तत्पर रहते थे। महर्षि दयानन्द के मिशन को गति देने के लिए उनके द्वारा निर्मित वेदमन्दिर और दयानन्द संस्थान उनके स्थायी स्मारक हैं।

जीवन की साध्य बेला में उन्होंने वानप्रस्थ लेकर आश्रम व्यवस्था को साकार किया। आर्ष साहित्य के प्रचार प्रसार में उनका कार्य बहुत महत्त्व पूर्ण एवं सराहनीय है। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को सद्गति और शांति दे, और आपको यह असह्य दुःख सहने की क्षमता एवं समस्त आर्य जगत् को उनके अधूरे कार्य को पूरा करने की शक्ति दे।

सीताराम आर्य

हिसार

नेताओं को केवल वोट चाहिए

महोदय,

हमारे नेता आज कुछ वोटों के लिए अपना सब कुछ बेच सकते हैं। उनको न अपने धर्म की चिन्ता है और न देश की। उन्हें तो केवल वोट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
चाहिए। चाहे किसी भी तरह मिले। लेकिन उन्हें शायद यह नहीं मालूम कि देश में हिन्दू कितनी संख्या में हैं।

आज देश के शीर्ष नेता मस्जिद में इबादत के लिए जाने में अपनी शान समझते हैं। अभी हाल ही में बड़े नेताओं ने अजमेर उर्स पर चादरें चढ़ाईं। यह तुष्टीकरण की नीति नहीं तो क्या है? क्या कोई मुसलमान नेता कभी किसी मन्दिर में आज तक प्रसाद चढ़ाने गया है? मैंने तो ऐसा कभी नहीं सुना।

हेमसिंह

अजीत नगर (सीकरी)

हम सदा आपके साथ हैं

बहन राकेश रानी,

मुझे बहुत दुःख हुआ। इस प्रसार संसार से साहित्य के सूर्य तथा आपके जीवन साथी विदा हो गये हैं। परमात्मा की ऐसी ही मर्जी थी। बहन! आप अपने को अकेली न समझना। अब तो सारा बोझ आप पर ही आ पड़ा है। हम हर समय आपके साथ हैं। घबराने की जरूरत नहीं।

शम्भुमल मित्तल

तालड़ा (मुजफ्फरनगर)

हम आपको सहयोग देंगे

स्नेहमयी माँ,

मैं गत कई माह से हिन्दुत्व को जगाने वाली मासिक पत्रिका "जनज्ञान" का नियमित पाठक हूं। जनज्ञान पत्रिका पाते ही मैं प्रसन्न हो जाता हूं। लेकिन ग्लानि इस बात की है कि एक माँ विधर्मियों की चुनौती को साहस पूर्वक स्वीकार करते हुए उसका सामना कर रही है। और हम सभी युवा पुत्र जागते हुए भी सो रहे हैं और माँ के ऊपर हो रहे प्रहार को आंख बन्द किए देख रहे हैं।

पर अब हम सब जाग गये हैं और यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हिन्दुस्तान को हिन्दू गणराज्य बनाने में आपको तन, मन, और धन से सहयोग देंगे। कृपया पत्र द्वारा सदा हमारे मनोबल को बढ़ाते रहिए ताकि हम अपनी सही मंजिल पर पहुंच सकें।

राकेश कुमार गुप्त

अमसिन (फैजाबाद)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप इसी तरह अमृत पिलाती रहें

आदरणीय बहिन जी,

मैं जुलाई १९८३ से 'जनज्ञान' मासिक पढ़ रहा हूं। इसे पढ़ने से जो कुछ प्राप्त हुआ वह आज तक किसी भी पत्रिका से नहीं मिला आपका साहित्य पढ़कर मुर्दा भी जिन्दा हो जाएगा।

सरकार ने आप पर २८ मुकद्दमे चलाये हैं। यह आप जैसे देशभक्तों के लिए "वीर सिपाही पुरस्कार" है। इस बात ने मेरी क्रांति की ज्वाला में घी का कार्य किया है। मैंने सरकार से मुकद्दमे वापस लेने की अपील की है।

बहिन जी, आप इसी प्रकार धर्म का कार्य करती रहें। आप यह न समझें कि आप अकेली हैं। अखण्ड भारत के समर्थक समस्त हिन्दू तन-मन-धन से आपके साथ हैं। तथा हमेशा साथ रहेंगे।

मैंने "जनज्ञान" मासिक पत्रिका से गांव-गांव प्रचार किया है। समय है कि अभी भी हिन्दू जाग जायें। यदि नहीं सम्भले तो एक समय ऐसा आयेगा जैसे शकहूण आज ढूंढ़े भी नहीं मिलते, वैसे ही हिन्दुस्तानी और हिन्दू पुरातन एवं पूर्ण होते हुए भी, नष्ट हो जायेगा। यदि समय रहते नहीं चेते, निज धर्म कर्म और संस्कृति की रक्षा नहीं की, तो आगे सर्वनाश निश्चित है।

परासोली — लहरू लाल चौधरी

जन-ज्ञान में विज्ञापन दीजिये

'जनज्ञान मासिक' एक सामाजिक, धार्मिक व पारिवारिक पत्रिका है जिसकी लगभग बीस हजार प्रतियां प्रति माह बिकती है। देश विदेश के एक लाख से भी अधिक पाठक इसे पढ़ते है।

इस प्रकार यह पत्रिका आपके संस्थान तथा उसके उत्पादन के प्रचार प्रसार के लिए एक उपादेय माध्यम बन सकती है।

आप अपने संस्थान व उसके उत्पादन के विज्ञापन के लिए इस सशक्त माध्यम का उपयोग करें।

☐ ☐ ☐

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा हंसराज ने भारतीय अस्मिता को उजागर किया

हंसराज दिवस समारोह में श्रद्धांजलियां :

पंजाब की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त

नई दिल्ली, २२ अप्रेल। विदेशी दासता के कारण भारत अपनी जिस अस्मिता को भूलता जा रहा था, महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के माध्यम से उसी का स्मरण कराया था। शिक्षा के द्वारा अपने देश की जनता में उसी भारतीय अस्मिता की पुनः स्थापना डी०ए०वी० आन्दोलन का उद्देश्य था। महात्मा हंसराज उस आन्दोलन के जनक होने के नाते इस देश के निवासियों के लिए सदा स्मरणीय बने रहेंगें, इन शब्दों के साथ उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी ने तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में महात्मा हंसराज के जन्म दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इससे पूर्व डी०ए०वी० कालेज कमेटी के अध्यक्ष प्रो० वेद व्यास ने डी०-ए०वी० आन्दोलन की वर्तमान स्थिति और भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला। आगामी वर्ष डी०ए०वी० शताब्दी के उपलक्ष्य में भावी योजनाओं की पूर्ति के लिए ५ करोड़ रुपए की निधि स्थापित करने की घोषणा की गई। इस निमित्त विभिन्न संस्थाओं की ओर से ५ लाख रुपए की थैली प्रो० वेद व्यास को भेंट की गई।

सोवियत संघ में भारत के भूतपूर्व राजदूत और पुराने डी०ए०वी० छात्र श्री इन्द्र कुमार गुजराल ने पंजाब में आर्यसमाज और उसकी शिक्षा संस्थाओं के रोल की विस्तार से चर्चा करते हुए इस समय उग्रवादियों द्वारा उन सब के लिए आसन्न संकट की चर्चा की और सुझाव दिया कि इस प्रश्न पर देश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि समस्त बुद्धिजीवियों को, जिनमें सिख बुद्धिजीवी भी शामिल हैं, गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

मुख्य अतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि डी०ए०वी० संस्थाओं के पढ़े हुए छात्रों ने जीवन के जिस भी क्षेत्र में पदार्पण किया, वहीं अपनी योग्यता, ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठा का कीर्तिमान स्थापित किया। उन्होंने पंजाब में निरपराध स्त्री-पुरुषों की हत्याएं करने वाले उग्रवादियों को चेतावनीदी कि यदि वे अपने नृशंस हिंसात्मक कार्यों से बाज नहीं आए तो वह दिन दूर नहीं जब सारे भारत में उसकी जवाबी प्रतिक्रिया प्रारम्भ हो जायेगी। उन्होंने भारत सरकार से आग्रह किया कि अब और अधिक शिथिलता से काम नहीं चलेगा।

इस अवसर पर डी०ए०वी० कालेज, चण्डीगढ़ के प्रिंसिपल श्री कृष्ण सिंह जी आर्य, हंसराज मॉडल स्कूल पंजाबी बाग के प्रिंसिपल श्री तिलकराज गुप्त, डी०ए०वी० संस्थाओं में नैतिक शिक्षा परामर्शदाता प्रो० रत्न सिंह और आर्य जाति" के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने भी अपने विचार प्रकट किए। प्रोफेसर सारस्वत मोहन "मनीषी" ने अपने ओजस्वी स्वर में कविता पाठ किया। ★

□ □ □ □ □ □ □ □

यवन-ईसाई आक्रमण के विरुद्ध साहित्य प्रकाशन और

वेद-भाष्य प्रकाशन के लिए

अधिक नहीं तो कम से कम १५१ रु. अवश्य भेजें।

—राकेशरानी

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

□ □ □ □ □ □ □ □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदर्श मित्रता

—प्रेमचन्द्र शास्त्री

एक निर्धन ब्राह्मण सुदामा श्री कृष्ण का बचपन का मित्र था। बड़े हो जाने पर सुदामा का विवाह भी हो चुका था किन्तु वह पहले के समान ही निर्धन था। उसके शरीर पर वस्त्र नहीं, पैरों में जूता नहीं और भरपेट खाने को अन्न नहीं।

एक दिन सुदामा की स्त्री ने उनसे कहा कि—पति देव। तुम अपने मित्र श्री कृष्ण की बचपन की बहुत कथाएं सुनाया करते हो और उन्हें अपना मित्र बताते हो। वह राजा है तुम उनके पास जाओ तो सही, सम्भव है वह इस समय हमारी कुछ सहायता कर दें और हमारे निर्धनता के कष्ट दूर हो जाएं। सुदामा बोला—प्रिये। हमने आज तक किसी की सहायता नहीं की है, फिर हमारी सहायता कोई क्यों करेगा? अपनी स्त्री के बहुत समझाने-बुझाने पर सुदामा श्री कृष्ण जी से मिलने के लिए द्वारकापुरी को चल दिया।

सुदामा के चलते समय सुदामा की स्त्री ने एक फटे-पुराने कपड़े की पोटली में थोड़े से कच्चे चावल बाँध दिए। सुदामा ने वह पोटली बगल में दबा ली और फटे कपड़ों में नंगे पैर चलते-चलते द्वारकापुरी पहुँच गया।

जिस समय सुदामा राजमहल के द्वार पर पहुंचा तब उसने द्वारपाल से श्री कृष्ण जी का पता पूछा और अपना नाम सुदामा बताया। द्वारपाल ने अन्दर जाकर श्री कृष्ण जी से कहा

शीश पगा न झगा तन में,
प्रभु! जानै को आय बसौ केहि धाम।
धोती लटी-सी फटी दुपटी,
अरू पैर उपानह और न सामा॥
द्वार खड़े द्विज दुर्बल एक,
रह्यो तकि सो वसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयाल को धाम,
बतावत आपन नाम सुदामा॥

सुदामा का नाम सुनते ही श्री-कृष्ण जी भाग कर आए और बड़े प्रेम से उनसे गले मिले। श्री कृष्ण जी का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हृदय हर्ष से विभोर हो गया वे गद्-गद हुए और उनका शरीर पुलकित हो उठा। अपने साथ लेजाकर सुदामा को गद्दी पर बैठाया और श्री कृष्ण जी ने उनके चरण स्वयं अपने हाथों से धोये और उनको स्नानादि कराने के अनन्तर स्वच्छ वस्त्र धारण कराये। उनका बहुत आदर-सत्कार किया। इससे पूर्व श्री कृष्ण जी ने सुदामा से पूछा—भाभी ने हमारे लिए क्या भेजा है? सुदामा बोला—हम निर्धनों के पास क्या है, जो आप जैसे राजाओं के लिए ला सकें। ऐसा कहते कहते शर्म के कारण सुदामा चावलों की पोटली को छिपाने लगा। किन्तु श्री-कृष्ण जी समझ गये थे कि इस पोटली में अवश्य कुछ है और शर्म के कारण यह नहीं दे रहा। दोनों में छीना-झपटी होने लगी। पोटली का कपड़ा बहुत पुराना था, वह फट गया और चावल भूमि पर बिखर गए। श्री कृष्ण जी ने उन्हें चुग-चुग कर बड़े प्रेम से कच्चे ही खाना आरम्भ कर दिया।

बहुत दिनों के बाद मिलने के कारण श्री कृष्णचन्द्र जी ने कई दिन तक सुदामा को अपने महलों में ठहराया। उनसे बाल्यकाल की सब बातें करके वही पुरानी मित्रता उन्हें याद हो आई श्री कृष्ण जी ने सुदामा की बहुत सहायता की। अन्न और वस्त्र तथा धन दिया। उनके मकान भी अच्छे और पक्के बनवा दिए। सुदामा को अब किसी प्रकार की कमी न रही। श्री कृष्णचन्द्र जी ने इस बात की चिन्ता न की कि अब वे राजा हैं और सुदामा एक बहुत निर्धन ब्राह्मण। उन्होंने अपनी बाल्यकाल की मित्रता नहीं भुलाई। सच्ची मित्रता इसी को कहते हैं।

★

(पृष्ठ ६१ का शेष)

में अमृतपुत्र कहा गया है। यह अमृत का पुत्र है। जो इस कल्पना और भावना के विरुद्ध बातें हैं, मनुष्य की गरिमा को कम करने वाली बातें हैं, उन पर हमें एकजुट होकर रोक लगवाने की चेष्टा करनी चाहिये। मैं समझता हूं कि इसके लिए हमारी जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है, वह कम से कम मानवीय मूल्यों की सुरक्षा के लिए—मानवता के लिए कुछ काम अवश्य करेगी।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य कैसा होगा ?: सम्पादकीय पर एक प्रतिक्रिया

——रामबली शर्मा 'वेदार्थी'

आपका सम्पादकीय लेख "हिन्दू राज्य कैसा होगा" जुलाई १९८३ की जनज्ञान पत्रिका में पढ़ा। जिस देश की न एक भाषा है, न एक मत है, न एक धर्म है तथा न ही एक तरह की पूजा या प्रार्थना पद्धति है, उस देश का कल्याण ईश्वर ही कर सकता है—मनुष्य की शक्ति के परे हैं। जब हमारे देश के उच्च कोटि के नेता भी स्वार्थपरता में अपनी अलग-अलग पार्टियां बनाये हुए हैं तो कैसे सम्भव है कि हम "रामराज्य की कल्पना करें! हमारे देश की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का तो एक ही उद्देश्य है कि हमारे परिवार से देश की बागडोर कहीं किसी दूसरे के हाथ में न चली जाये। वे सिर्फ इसीलिए जिन्दा हैं कि अपने रहते हुये श्री राजीव गांधी को देश का प्रधानमन्त्री बनवायें जिससे हमारे बाप दादों की विरासत किसी दूसरों के हाथ में न पहुंच जाये।

आज देश की परिस्थिति को देखते हुए आवश्यकता है कि जैसे स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए अंग्रेजों के विरोध में बगावत की गयी थी वैसे ही आज देश बगावत मांगता है।

हाल में ही ईसाई धर्म का प्रचार विश्ववाणी रेडियो स्टेशन नई दिल्ली बी से सुबह ४.३० से ५.३० बजे के मध्य (हिन्दी प्रसारण) शुरू हुआ है। वह ईसा एवं बाईबिल के भरपूर गुणगान करता है। हमारे देश में डंका पीटकर ईसाई धर्म का प्रचार एवं प्रसार आकाशवाणी से किया जाये और हम अपने वैदिक धर्म की बात भी नहीं कह सकते। कितना बड़ा अत्याचार है। हमारे देश का दूरदर्शन केन्द्र तो सिर्फ प्रधानमन्त्री के गुणगान तथा फीचर फिल्मों के लिए है। शेष न तो शिक्षा के बारे में, न इतिहास के बारे में, न धर्म के बारे में और न ही किसी विशेष जानकारी के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इनके पास विदेशों जैसी कोई कार्य प्रणाली नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि देश में एक ही वैदिक धर्म हो जो सत्य सनातन प्राचीन धर्म है, एक ही भाषा (हिन्दी) तथा एक ही शिक्षा प्रणाली होनी चाहिए, जिससे सभी भारतवासी एक जुट होकर राष्ट्र को सम्पन्न बना सकें। साथ ही साथ जाति वाद को भी समाप्त किया जाये क्योंकि देश के विकास में सबसे ज्यादा बाधक तत्व उपजातियों का अजायबघर है, जिसके कारण आज देश में पार्टी विभाजन है, भाषा विभाजन है, शिक्षा विभाजन है। देश के सभी राज्यों में शिक्षा की प्रणाली एक ही होनी चाहिए ताकि देश में एकता कायम हो सके यहां पर शिक्षा की दोहरी नीति है। केन्द्रीय विद्यालयों में पाठ्यक्रम अंग्रेजी। माध्यम से है और राज्यों के प्राइमरी स्कूलों का पाठ्य क्रम बहुत ही घटिया किस्म का तथा हिन्दी माध्यम से है। अंग्रेजी पढ़ा लिखा व्यक्ति जनरल मैनेजर बनता है तथा हिन्दी पढ़ा लिखा व्यक्ति साधारण क्लर्क अथवा सामान्य स्तर की नौकरी पाने का ही हकदार रहता है। जब तक सारे मुल्क की शिक्षा व्यवस्था एक न होगी तब तक अलगाव वाली नीति समाप्त न होगी। इस नीति के रहते देश एकता के सूत्र में नहीं पिरोया जा सकता है।

वर्तमान परिवेश में एक नयी दिशा या चेतना शक्ति की परम आवश्यकता है। आज देश की स्थिति बिल्कुल रावण राज्य से मिलती जुलती है। वह तो एक ही रावण था जिसने सीता का अपहरण किया था, लेकिन आज इस वर्तमान सरकार के शासन में अनेकों रावण घूम रहे हैं और अनेक सीताएं प्रतिदिन अपहरण का शिकार हो रही हैं। इन घृणित कार्यों में हमारे देश के शासन विभाग के उच्च अधिकारियों तथा उच्च स्तरीय नेताओं का हाथ रहता है। क्या इन्दिरा जी को नहीं मालूम कि हमारे देश में व्याप्त भ्रष्टाचार किसके द्वारा फैला हुआ है।

हमारा कहना है कि हम एक जुट होकर इस सरकार के खिलाफ चुनाव लड़ें तथा एक सुन्दर एवं ईमानदार सरकार की स्थापना करें। आपसे अनुरोध है कि आप भी प्रयास करें कि वैदिक धर्म का प्रचार आकाशवाणी से कराया जा सके। इसके लिए उपयुक्त समय सुबह ५ से ८ बजे के बीच का है। इसी बीच सभी व्यक्ति धार्मिक चर्चाएं सुनने को आतुर रहते हैं। जब हमारे सिख भाई अमृतसर रेडियो स्टेशन से गुरवाणी का प्रसारण करवा सकते हैं तो क्या इन्दिरा जी वैदिक धर्म के प्रसार के लिए अनुमति नहीं दे सकतीं। इसके लिए आल इण्डिया रेडियो स्टेशन ही उपयुक्त है, जिससे सारे

शेष पृष्ठ १०६ पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भविष्यद्द्रष्टा वीर सावरकर

—शिवकुमार गोयल

सच्चा नेता वही कहलाने का अधिकारी है जो इतिहास का गहन अध्ययन-मनन करने के बाद आने वाली परिस्थितियों का पहले से ही विवेचन कर सके, आने वाले खतरों को चेतावनी देकर अपने राष्ट्र तथा समाज को सचेत कर सके। यह देश का दुर्भाग्य रहा है कि हमारे नेता अदूरदर्शी कल्पना लोक में विचरण करने वाले तथा घोर अव्यवहारिक रहे हैं। स्वातन्त्र्य वीर सावरकर अवश्य एकमात्र ऐसे नेता थे जिनकी चेतावनियां तथा भविष्यवाणियां सौ फीसदी सत्य निकलीं तथा नेहरू जी जैसे नेता को उनकी दूरदर्शिता का कायल होने को मजबूर होना पड़ा।

सावरकर एक क्रांतिकारी के साथ-साथ इतिहासकार तथा चिन्तक भी थे तथा इतिहासकार स्वभावतः दूरदर्शी होता ही है।

अंडमान की अनुभूति

अण्डमान में अमानवीय यातनाएं सहन करने के दौरान उन्होंने अण्डमान जेल के बन्दियों की मनःस्थिति तथा जेल में ईसाई तथा मुसलमान तथा जेल कर्मचारियों द्वारा हिन्दुओं के धर्मपरिवर्तन का घटनाओं की निकट से अनुभूति की थी। उन्होंने वहां देखा कि एक षड्यन्त्र के अन्तर्गत किस प्रकार हिन्दू समाज को अल्प संख्या में करने के लिए ईसाईकरण तथा इस्लामीकरण की प्रक्रिया चलाई जा रही है। अण्डमान की काल कोठरी में श्री आशुतोष लाहिड़ीं, पण्डित परमानन्द झांसीवाल तथा भाई हृदय रामसिंह आदि क्रांतिकारी उनके साथ थे। सावरकर जी ने सभी क्रांतिकारियों को इस षड्यन्त्र से अवगत कराया तथा हरिजन बन्दियों के दुख दर्द में भागी बनकर उनमें आत्म विश्वास पैदा किया कि वे भी हिन्दू समाज के अटूट अंग है।

पठान मुसलमान वार्डर हिन्दू बन्दियों का उत्पीड़न कर उन्हें 'इस्लाम' स्वीकार करने को मजबूर करते थे। एक दिन एक बन्दी ने उन्हें बताया कि पठानों ने जौनपुर निवासी मुल्लु अहीर नामक युवक को फुसलाकर इस्लाम स्वीकार करने के लिए तैयार कर लिया है। सावरकर जी इस घटना को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनदेखा नहीं कर सके तथा उन्होंने कुछ सिख बन्दियों को इकट्ठा कर उन्हें महान् गुरुओं के हिन्दूधर्म की रक्षार्थ किये बलिदानों की घटनायें याद दिलाई तथा धर्मपरिवर्तन की घटनाओं को रोकने की प्रेरणा दी।

धर्मपरिवर्तन का विरोध

बर्मा विद्रोह का नेता मौलाना मुस्तफा भी उन दिनों अण्डमान की कोठरी में सजा काट रहा था। वह अत्यन्त संकीर्ण तथा मजहबी व्यक्ति था। उसने जेल में ही अन्य शरारती पठानों को प्रेरित कर हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र रचा था। मुल्लु अहीर के धर्म परिवर्तन में भी उसी का हाथ था।

मौलाना की उपस्थिति में जेल के प्रांगण (लॉन) में मुल्लु के धर्म परिवर्तन की तैयारी शुरू हो गई। जेल के अंग्रेज अधिकारी का भी इस कुकृत्य में सहयोग था। मुल्लु को कलमा पढ़ाये जाने की तैयारी शुरू हो रही थी। कि सावरकर जी अपने क्रांतिकारी साथियों तथा सिख बन्दियों के दल को साथ लेकर वहां जा पहुंचे। उन्होंने गरजकर कहा—"हमारे होते हुए हमारे बन्धुओं के धर्म का अपहरण नहीं किया जा सकता।" देखते ही देखते सिख मुल्लु को बीच में से उठाकर ले गये। मौलाना मुस्तफा का पूरा षड्यन्त्र असफल हो गया।

सावरकर जी ने देश, धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिये "आक्रामक" रुख अपनाने में भी नहीं हिचकिचाने की प्रेरणा दी। उन्होंने सन् १९१७ में अण्डमान की काल कोठरी में हिन्दू बन्दियों के बीच कहा था—"यदि हमने ऊंच-नीच की भावना को नहीं छोड़ा, कथित शूद्रों (हरिजनों) को समाज में बराबर का दर्जा नहीं दिया तो उनके ईसाईकरण तथा "इस्लामीकरण" को कोई रोक नहीं पायेगा तथा आगे जाकर हिन्दुस्तान के टुकड़े हो जाने का खतरा पैदा हो जायेगा।

सावरकर जी की ३० वर्ष पूर्व की गई भविष्यवाणी १९४७ में भारत विभाजन के रूप में सत्य होकर सामने आई तथा "पाकिस्तान" की स्थापना हुई।

अण्डमान के बाद सावरकर जी को रत्नागिरी में लाकर नजरबन्द किया गया तो उन्होंने सबसे पहले वहां हरिजनोद्धार का कार्य अपनाया। "शुद्धि" को राष्ट्रीय कार्यक्रम घोषित कर हिन्दू संगठनों को इसे तेजी से जारी करने का आह्वान किया था उन्होंने १९२२ में रत्नागिरी में चेतावनी दी थी कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश के सीमावर्ती व उत्तर पूर्व क्षेत्र में विदेशी ईसाई मिशनरियों की गति-विधियों को नहीं रोका गया तो उस क्षेत्र में अलगाव की मांग उठने लगेगी। सावरकर जी ने इतिहास का अध्ययन करने के बाद समाज व देश को सूत्र दिया था। "धर्मान्तर यानि राष्ट्रान्तर"

अर्थात् धर्मपरिवर्तन के साथ-साथ ये विदेशी मिशनरी हरिजनों व वन-वासियों की राष्ट्र के प्रति निष्ठा में भी परिवर्तन करते हैं। उन्होंने कहा था "रामदास को डेविड बनाते समय ही उसे भारत की जगह ब्रिटेन या अमेरिका के प्रति निष्ठावान होने को तैयार किया गया है। यदि इन मिशनरियों के धर्मपरिवर्तन के कार्य को अनदेखा किया गया। तो कुछ ही वर्षों में उस पूरे क्षेत्र में विद्रोह की भावना भड़कने लगी।

सावरकर जी की यह भविष्यवाणी आगे चलकर नागालैंड की मांग के रूप में सामने आई। ईसाई बनाये गये लोगों ने ही वहां अलग देश की मांग उठाई थी। पूरे असम क्षेत्र में अलगाववादी प्रवृत्तियां जोर पकड़ने लगी थीं।

असम की चेतावनी

सन् १९४१ में मुस्लिम लीग की योजनानुसार असम को मुस्लिम लीग क्षेत्र बनाने के षड्यन्त्र के अन्तर्गत जब बाहर से वे आकर मुसलमान असम में बसने लगे तो सावरकर जी ने हिन्दू महासभा के अध्यक्ष के रूप में चेता-वनी दी थी—"यदि असम में मुसलमानों की संख्या बढ़ जाने दी तो भविष्य में यह देश के लिए भारी खतरा व चुनौती सिद्ध होगा। बंगाली मुसलमान असमी हिन्दुओं को भगाकर नये असम का गठन करने का षड्यन्त्र रचेंगे।"

उस समय नेहरू जी ने वीर सावरकर के कथन पर टिप्पणी करते हुए कहा था—"असम में खाली जगह पड़ी है। बंगाली मुसलमान वहां आकर बस रहे हैं। प्रकृति नहीं चाहती कि कहीं रिक्त जगह पड़ी रहे।" सावरकर जी ने नेहरू जी की टिप्पणी का करारा सा जवाब देते हुए कहा था—इसका भीषण परिणाम हम व आप नहीं, हमारी सन्तान भोगेगी। तब आपको मेरा कथन याद आयेगा।" कुछ ही वर्ष बाद देश के विभाजन के दौरान जब असम के कुछ भागों को मुस्लिम बहुल बताकर पाकिस्तान में मिलाये जाने की मांग उठी तो नेहरू जी आदि को भी वीर सावरकर की दूरदर्शिता का लोहा मानना पड़ा था।

अब तो असम में घुसपैठिये भेजकर उसे सुनियोजित ढंग से मुस्लिम बहुल बनाने के प्रयास चल रहे हैं जिसके विरोध में सम्पूर्ण असम अशान्त है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सैनिकीकरण के उद्घोषक

सावरकर जी देश के सैनिकीकरण के प्रबल समर्थक थे। १९४० में उन्हीं की प्रेरणा से नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने गुप्त रूप से भारत से विदेश जाकर आजाद हिन्द सेना का गठन किया था। सावरकर जी ने उस समय भी भारतीयों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में सेना में भर्ती होने की अपील की तो अनेक कांग्रेसी नेताओं ने उनका विरोध किया था किन्तु नेताजी सुभाष- ने २५ जून १९४४ को सिंगापुर स्थित आजाद हिन्द रेडियो से अपना भाषण करते हुए कहा था—

"भ्रमित राजनीतिक विचारों और दूरदर्शिता के कारण कांग्रेस के लगभग सभी नेता भारतीय सैना के सिपाहियों को "भाड़े का टट्टू" कहकर बदनाम कर रहे थे, उस समय सबसे पहले वीर सावरकर ने निर्भीकता के साथ भारतीय युवकों को सेना में भर्ती होने का आह्वान किया था। उनकी प्रेरणा से भारतीय सेना में भर्ती हुए युवक ही आगे चलकर हमारी आजाद हिन्द सेना के सिपाही बने।"

सावरकर जी की सैनिकीकरण की नीति हमने १९३२ में चीन के हाथों बुरी तरह पराजित होने के बाद अपनाई थी। इसी का परिणाम था कि पाकिस्तानी हमलों के मुकाबले में भारत ने हर बार विजय प्राप्त की।

सावरकर जी हिन्दुत्व के परम उपासक थे। उनका स्पष्ट मत था कि भारत तथा उसकी संस्कृति की रक्षा का दायित्व हिन्दुओं पर ही है। इसलिये वे हिन्दू संगठन के प्रेरक रहे। अब जबकि देश में पृथकतावादी तत्त्व सिर उठा रहे हैं, हिन्दुओं को अल्पमत में करने के लिए विदेशी धन के बल पर धर्मपरिवर्तन के कुचक्र चला रहे हैं, ऐसे समय में उस महापुरुष की भविष्य- वाणियां सत्य सिद्ध होती दिखाई दे रही हैं। अब देश के प्रमुख नेता भी हिंदू संगठन के महत्व को समझने लगे हैं।

पृष्ठ १०५ का शेष

विश्व में वैदिक धर्म का प्रसार हो सके। फिल्मों द्वारा भी वैदिक धर्म का प्रचार होना चाहिए। "महर्षि दयानन्द और भारत" पर फिल्म तैयार करने का प्रयास किया जाये, जिससे प्रत्येक धार्मिक भाई जाने कि दयानन्द जी ने भारत के लिए क्या किया था। वे भारत को क्या बनाना चाहते थे। उनके विचार में भारत कैसा होना चाहिए था? आज का युग विज्ञापन का है। उसी दृष्टिकोण को लेकर हम अपना भी कदम बढ़ायें।

कन्या प्रा० पा० महरहा, कल्याणपुर, फतेहपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सावधान ! अब मुस्लिम मिशनरी धावा बोलने वाले हैं !

—विनोदचन्द्र पांडेय

दुनिया में अपने मजहब के प्रचार-प्रसार तथा अन्य धर्मावलंबियों को अपने मजहब में दीक्षित करने के उद्देश्य से अब तक ईसाई धर्म गुरु अपने धर्म-प्रचारकों (पादरियों आदि) को मिशनरियों के आवरण में विभिन्न देशों में भेजते रहे हैं। सम्बन्ध देश की गरीबी, धार्मिक सामाजिक कुरीतियों सांस्कृतिक पिछड़ेपन एवं लम्बी गौरवशाली ऐतिहासिक परम्पराओं का अभाव आदि का लाभ उठाकर ये ईसाई मिशनरी समाज सेवा, शिक्षा व चिकित्सा आदि सेवा कार्यों की आड़ में धर्मान्तरण का कार्य एक लम्बे समय से करते रहे हैं। अपना देश भी इनके इन हथकण्डों का एक शताब्दी से अधिक समय से शिकार होता रहा है।

अब तक इस तरह के कथित सेवा कार्यों को अपने मजहब के हित में करने में ईसाई मिशनरी अकेले ही थे। किन्तु अब उनका यह 'एकाधिकार' समाप्त होने जा रहा है।

नई रणनीति :

तलवार की नोंक राज्य सत्ता के भय व आतंक तथा धन के प्रलोभन के बल पर अन्य धर्मावलम्बियों को मुसलमान बनाने में विश्वास रखने वाला मुस्लिम समाज व उसके नेता भी अब धर्मान्तरण के उद्देश्य से कथित सेवा के क्षेत्रों में उतरने लगे हैं। उनकी इस रणनीति परिवर्तन की जड़ में ईसाईयों की सफल कार्य पद्धति रही लगती है। वे भी अब सेवा के क्षेत्रों में घुसकर तथा अपने प्रशिक्षित मिशनरियों को उन देशों में भेजकर, जहां मुसलमान अल्पसंख्यक हैं। अपने मजहब के प्रचार-प्रसार के लिए रणनीति तैयार कर रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुस्लिम मिशनरियों का प्रशिक्षण प्रारम्भ

जैसा कि स्वाभाविक ही हैं इन कथित सेवा कार्यों/प्रकल्पों, मुसलमान धर्म-प्रचारकों (मिशनरियों), तथा धर्मान्तिरण पर होने वाले खर्च को साउदी अरब तथा अन्य मुस्लिम देश वहन करेंगे, किन्तु इनका प्रशिक्षण दुनिया के विभिन्न केन्द्रों में हुआ करेगा। एशिया व प्रशान्त महासागर के मध्य बसे देशों में कार्य करने के लिये मुस्लिम मिशनरियों के पहले जत्थे का ६ सप्ताह लम्बा प्रशिक्षण वर्ग अप्रैल माह के अन्त में मलयेशिया की राजधानी कुआलालामपुर में प्रारम्भ हो गया है। इसका आयोजन दक्षिण पूर्व एशिया एवं प्रशान्त क्षेत्र के इस्लामिक मिशनरी कौन्सिल ने किया है और इसमें इस क्षेत्र के उन देशों के ६० मुस्लिम युवक प्रशिक्षण ले रहे हैं जहाँ मुसलमान अल्पसंख्यक है। इन प्रशिक्षार्थियों को उनके मूल देश से चयन कर यहां लाया गया है। इस प्रशिक्षण शिविर का स्थल का स्थल मलयेशिया की यूनिवर्सिटी आफटेकनालाजी है।

इस संगठन के महासचिव श्री हुसैन मुहम्मद उस्मान (जो मलयेशिया के हैं) के अनुसार इन प्रशिक्षार्थी मुस्लिम मिशनरियों को इस तरह प्रशिक्षित किया जा रहा है कि वे अपने-अपने देशों में इस्लाम की बेहतर सेवा कर सकें। साथ ही यह प्रशिक्षण इन मुस्लिम मिशनरियों को अपने देशों के मुस्लिम संगठनों को इस्लाम के प्रचार-प्रसार में सहयोग करने तथा उनकी मिशनरी व कल्याणकारी गतिविधियों को संचालित करने में उपयोगी होगा।

महासचिव के अनुसार मुस्लिम मिशनरियों की संख्या बढ़ाने के लिए इस तरह के दो सप्ताह लम्बे स्थानीय व क्षेत्रीय प्रशिक्षण शिविर भी इस वर्ष विभिन्न देशों में आयोजित किये जायेंगे। इस वर्ष के अन्त में फिजी (जो कि हिन्दू बहुल देश है) में एक क्षेत्रीय शिविर आयोजित किया जायेगा जिसमें फिजी सहित अन्य आस-पास के राष्ट्रों के १०० मुस्लिम प्रशिक्षार्थी धर्म प्रचारक प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।

शरीफ छलावे का षड्यंत्र

ऊपर से देखने में यह सम्पूर्ण आयोजन एक साधारण सी घटना जान पड़ता है। किन्तु जिस प्रकार ईसाई व मुसलमान धर्म गुरुओं में सारे संसार में अपने-अपने मजहब का झंडा गाड़ने की होड़ लगी हुई है; उसको देखते हुए मलएशिया के एक पाक्षिक पत्र (जिसे इस देश के राजदूतावासों के माध्यम से सारे संसार में प्रसारित किया जाता है) में हाल ही में प्रकाशित उपरोक्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
आशय का समाचार चिन्ता का कारण बन गया है।

अपने देश में ईसाई मिशनरियों की वर्षों पुरानी घुसपैठ व हाल के वर्षों में पेट्रोडालर के बल पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाकर अपने ही देश में अल्पसंख्यक बनाने के षड्यंत्र अब किसी से छिपे नहीं हैं। असम व पूर्वांचल की समस्या भी इन्हीं षडयंत्रों की परिणति है। अब मुसलमान धर्मगुरु पेट्रो-डालर के साथ-साथ सेवाकार्यों की आड़ में इन प्रशिक्षित मिशनरियों के साथ एक नये आवरण में धर्मान्तरण का अभियान तेजी से चलायेंगे।

हिन्दू समाज सचेत

इस खतरे के प्रति यदि हिन्दू समाज अभी से सचेत नहीं हुआ तो बाद में पछताने व असहाय की तरह हाथ मलने के अलावा और कुछ शेष नहीं बचेगा। तलवार की नोक व राज्य सत्ता के भय का तो हिन्दू समाज ने सैकड़ो वर्षों तक बलिदान देकर मुकाबला किया और सामूहिक रूप से मुसल-मान बनना स्वीकार नहीं किया। किन्तु अब यह खतरा शरीफ बनकर—सेवा कार्यों का चोगा पहनकर सामने आ रहा है। शराफत के चोगे से धोखा खाने की सम्भावना अधिक रहती है। कहीं हम धोखे के शिकार न हो जायें ?

फल कौन-सा मीठा ?

—योगेश 'नवीन'

आम है मीठा या अंगूर,
चीकू है मीठा या अमरुद,
सेब है मीठा या अनार,
केला है मीठा या अनन्नास
बताओ क्या
सबसे मीठा ?
कोई कहे
आम है मीठा

कोई कहे
अंगूर
दादा बोले
मेहनत का फल
सबसे मीठा
इसके आगे
दूजा फल फीका।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माघ अंक से आगे

हत्यारों का इतिहास

किया बुज़ुर्ग उम्मीद और उसके पुत्र मुहम्मद का शासनकाल

किया बुज़ुर्ग उम्मीद, जो हसन का जनरल और प्रचारक रह चुका था, आध्यात्मिक सत्ता में उसका उत्तराधिकारी बना और हूबहू संघ के संस्थापक के रक्तरंजित चरणचिह्नों पर चला। हसन की सत्ता की बुनियादें छुरों और किलेबन्दियों में रखी गई थीं और उसके उत्तराधिकारी भी उसी आधार पर आश्रित थे—शत्रु के सर्वाधिक प्रतिष्ठित नेताओं का या तो पतन हो गया अथवा वे पतनोन्मुख होकर लड़खड़ाने लगे। नये किलों पर कब्ज़ा किया गया अथवा उनका निर्माण किया गया। इस प्रकार मेमुन्दियों का किला खड़ा किया गया, जिसके खंडहरों ने परिणामतः परमाधिकारी की मृत्यु और संघ के दमन का मार्ग प्रशस्त किया। अब्दुलमलिक को इसका देहदार अथवा सेनापति नियुक्त किया गया। ये सावधानियां अधिक आवश्यक थीं, क्योंकि सुलतान संदजार ने, जिसे बहुत पहले ही संघ का गुप्त रक्षक मान लिया गया था, अब खुलमखुल्ला अपने आपको उसका शत्रु घोषित कर दिया। उसी वर्ष शाबान के महीने में अताबेग शरगर ने सेना के साथ रुदबार प्रान्त को रौंद डाला। परमाधिकारी ने उसके विरुद्ध जो सेना भेजी थी, उसने शत्रु को भगा दिया और बड़ी मात्रा में लूटमार का सामान हस्तगत किया। अगले वर्ष युद्ध ने और भी अधिक क्रूर रूप धारण कर लिया, जब सन्दजार के आदेश से बहुसंख्य बातनी मौत के घाट उतार दिए गए। जब महमूद अपने भतीजे सन्दजार के स्थान पर तख्त का उत्तराधिकारी बना, तब भी स्थिति में कोई परिवर्तन न आया। इस सम्राट् ने हशीशिनों का मुकाबला धोखेबाजी और हत्या के उन्हीं के हथियारों से करने का फैसला किया। एक अच्छे मिशन पर जोर देने वाले व्यक्ति के लिए यह फैसला अनुटयुक्त था। कुछ समय तक किया बुज़ुर्ग उम्मीद के साथ युद्धरत रहने बाद सुलतान ने अपने महान् बाज़-प्रशिक्षक के माध्यम से प्रार्थना की कि परमाधिकारी की ओर से अलामुत किसी व्यक्ति को शांति सन्धि करने के लिए भेजा जाना चाहिए। खोजा मुहम्मद नसीही शेरिस्तानी को भेजा गया। उसे इस सम्मान के योग्य समझा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गया कि कि वह सुल्तान का हाथ चूमे। सुलतान ने शांति के सम्बन्ध में उससे कुछ शब्द कहे। सुलतान से विदाई ले चुकने पर जनता ने खोजा और उनके रफीक की नृशंसतापूर्ण हत्या कर दी।

महमूद ने इसके लिए क्षमायाचना हेतु एक दूत अलामुत भेजा। उसने दृढ़तापूर्वक कहा कि इस काम में उसका कोई हाथ नहीं। किया बुजुर्ग उम्मीद ने दूत को उत्तर दिया कि "तुम वापस सुलतान के पास जाओ और मेरी ओर से उसे कहो कि मुहम्मद नसीही ने तुम्हारे कपटपूर्ण आश्वासनों पर विश्वास किया और तुम्हारे दरबार में आया। यदि तुम्हारा कथन सत्य है, तो हत्यारों को न्याय के हवाले कर दो। यदि तुम ऐसा न करोगे, तो प्रतिशोध के लिए तैयार रहो। जब महमूद ने इस ओर ध्यान न दिया, तो हशीशिनों का एक दल कास्विन के दरवाजों पर आ पहुंचा, जहां उन्होंने ४०० व्यक्तियों को मार डाला और वे ३००० भेड़ें, २०० घोड़े व ऊंट एवं २०० बैल तथा गधे ले गए। नगरवासी उनके पीछे गए, लेकिन उनके सरदारों में से एक की मृत्यु के कारण उनके लक्ष्य में बाधा आ गई।

अगले वर्ष थोड़ी अवधि के लिए ही सही, सुलतान ने संघ की सम्पूर्ण प्रभुता के केन्द्र अलामुत पर भी कब्जा कर लिया और इसके तुरन्त बाद लमसीर के किले के एक विरुद्ध एक हजार व्यक्ति भेजे गए, जो यह सुनते ही संघ के रफीक उन पर हमला करने वाले हैं, तुरन्त एक बार भी वार किए बिना भाग खड़े हुए। महमूद के देहान्त के तुरन्त बाद संघ के रफीकों ने दूसरी बार कास्विन की सीमाओं में प्रवेश किया। वे दो सौ घोड़ों को भगा ले गए और एक सौ तुर्कमानों व बीस नागरिकों की हत्या के बाद लौट गये। अधिक सम्भावना यही है कि महमूद का देहान्त भी हशीशिनों के षड्यन्त्रों के फलस्वरूप ही हुआ था, यद्यपि इस प्रकार का आरोप किसी ने नहीं लगाया। इसके बाद अलामुत की सेनाओं ने अली के एक वशंज अबू हाशिम पर चढ़ाई कर दी। अबू हाशिम ने जिलान में इमाम का गौरव अनुचित ढंग से हथिया लिया था और घोषणापत्रों द्वारा जनता का आह्वान किया था कि वह उसे जायज मालिक माने। किया बुजुर्ग उम्मीद ने उसे पत्र लिखा, जिसमें उसे सलाह दी कि वह अपनी महत्त्वकांक्षी योजनाओं से बाज आए। जवाब में अबू हाशिम ने इस्मायलियों की अपवित्र जनश्रुति की निन्दा की। इस्माईलियों ने इस्माईलियों ने आबू हाशिम पर युद्ध थोप दिया, उसे बन्दी बना लिया और युद्ध परिषद् के फैसले के अनुसार उसे खूंटे से बांध दिया।

महमूद का देहान्त हो जाने पर जब मसूद सेल्जुकियों की गद्दीपर बैठा, तब खुरासान की सीमाओं और ओक्सस के मुहाने के मध्यवर्ती देश खोवारस्म का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

युवराज इत्सीस उसके पास आया—उसे यह बताने के लिए उसने इस्माईलियों को नेस्तनाबूद करने का फैसला कर लिया है। यद्यपि खुरासान का विशाल प्रान्त खोवारस्म और कोहिस्तान के मध्य में है, जहां इस्माईली शिकार के पक्षियों की तरह चट्टानों में छिपकर पड़े रहे, तथापि खोवारस्म का शासक ऐसे खतरनाक पड़ोसियों से डरता था, जो कि ठीक ही था, क्योंकि उनकी कटारें सुदूरवर्ती शत्रुओं तक भी पहुंच जाती थीं। मसूद ने इत्सीस के सूत्रों और इरादों पर अमल करते हुए उसे वह जागीर भेंट कर दी, जो बरंकिश के पास थी। (बरंकिश बाज पालने के लिए मशहूर था।) बरंकिश ने चिढ़कर किया बुजुर्ग उम्मीद के पास शरण ली और अपने बीवी-बच्चों को ढरकोस किले में भेज दिया, जो इस्माईलियों के कब्जे में था। यद्यपि इस व्यक्ति ने जो अब तक उनका घोषित शत्रु हो चुका था, न केवल खुले युद्ध में उन पर आक्रमण किया था—अपितु आक्रमण भी किया था। धूर्तता और धोखेबाजी के अपने हथियारों से तथापि परमाधिकारी ने इस बात को नीतिसम्मत माना कि उस व्यक्ति के प्रति आतिथ्य सत्कार के कर्त्तव्यों का पालन किया जाए, जो अब उसके संरक्षण में आ गया है। यही अधिक वांछनीय समझा गया कि संघ का एक नया मित्र पैदा किया जाए, क्योंकि खोवारस्म शाह जिसने अब तक मैत्रीपूर्ण बरताव के चिह्न प्रकट किये थे, एकदम अपने आपको शत्रु घोषित कर दिया था। खोवारस्म शाह ने परमाधिकारी को निम्नलिखित सन्देश भेजा—"बरंकिश और उसका गिरोह अब तक तुम्हारे घोषित शत्रु थे। दूसरी ओर मेरे मन में आपके लिए सच्चा अनुराग था। अब जब सुलतान ने अपनी जागीर मुझे दे दी है, उसने तुमसे शरण मांगी है। यदि तुम उसे मेरे हवाले कर दोगे, तो मैत्री और अधिक बढ़ जायेगी। किया बुजूर्ग उम्मीदीद ने उत्तर दिया—"खोवारस्मशाह सच कहता है, लेकिन हम अपने शरणागत को शत्रु के हवाले कभी नहीं करेंगे।" यहीं से खोवारस्म शाह और किया बुजुर्ग उम्मीद में दुरूह शत्रुता का प्रारम्भ हुआ।

यह स्वाभाविक था कि एक समय जो सम्राट् प्रचारकों के ज्ञापनों और इस्माईली सम्प्रदाय के सिद्धांतों के आकर्षणों से अन्धे हो गये थे, शुरू में तो शीघ्रता से एक-दूसरे से गले मिलते, लेकिन बाद में एक-दूसरे से अलग हो जाते—इस भय से कि उनका पारस्परिक आलिंगन एक प्रकार का फांसी का फंदा सिद्ध होगा, जिसके नीचे कातिल छुरे छिपे होंगे। इस प्रकार सुलतान सन्दजार और खोवारस्म के शाह इत्सीस, जिन दोनों को शुरू में मित्र और संघ का पक्षधर माना जाता था, उनके शत्रु हो गये। हमने देखा है कि अलप्पो में रिजवान के शासन काल में उन्होंने अत्यन्त शक्तिशाली प्रभाव का आनन्द लूटा, लेकिन जब रिजवान के पुत्र का शासन आया, तब उनका तलवार से मूलोच्छेद कर दिया गया है। दमिश्क में भी उनका यही हाल हुआ—उसी दश्मिक में, जहां बूसी के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
शासन-काल में उन्हें मजदेगन के साद के पुत्रवजीर ताहिर के रूप में उन्हें एक शक्तिशाली रक्षक मिला था। फारसी हशीशिन अस्त्रबाद का बहराम, जिसने अपने अभियान अपने चाचा की हत्या से प्रारम्भ किये थे, वजीरपर हवी हो गया, जिसने उसे बनियास का किला सौंप दिया, ठीक वैसे ही जैसे रिजवान ने अधिक अन्तर्देशीय दुर्ग हसन साबा के भतीजे सर्मिनको सोंपा था।

प्राचीन काल में बनियास का नाम बलानिया था। बलानिया से आशय उस पुराने शहर से था, जो छोटी खाड़ी में स्थित था। यह नाम सन्११६२ ईसवी (हिजरी सन्४५४) में नवनिर्मित किले को दिया गया। यह समुद्र से एक फरलांग अथवा चार हजार पग दूर थी—एक ऐसे उपजाऊ और सुसिंचित मैदान में, जहां प्राचीन काल में हजारहा भैंसों को चरागाह मिलती थी। इस घाटी को वादी उल जिन (भूतों की घाटी) कहहर पुकारा जाता था। यह एक ऐसा स्थान था, जिसका नाम ही इसे हशीशिनों की वस्ती वनने के योग्य बनाता था। इस स्थल से वे आस-पास के किलों और शहरों के मालिक बने और बनियास सीरिया में उनकी सत्ता का केन्द्र बना। वना ही नहीं, तव तक वना रहा, जब तक बारह वर्ष बाद उन्होंने इसे मसीयत के हवाले न कर दिया।

बहराम चिरकाल तक अलप्पो और दमिश्क में संघ के इरादों को पूरा करने में लगा रहा। वहां के सम्राट् इलगासी और तुग्तगीन उन्हें प्रचारक के रूप में मान्यता देते थे और उनका पक्ष लेते थे। जब उन्होंने बनियास पर कब्जा करके सीरिया में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली, तब हशीशिनों की शक्ति और धृष्टता पराकाष्ठा तक पहुंच गई। वे सब ओर से संगठन के नए केन्द्र की ओर बढ़े और उनके मुकाबले में सम्राटों ने एक, दूसरे की रक्षा न की। विधिवेत्ता और धर्म-तत्त्वज्ञ, विशेषत: सर्वत्र सताये जाने वाले सुन्नी, उनके और सम्राटों के विरोध के डर से एकदम खामोश हो गए। बहराम का पतन उनके प्रतिशोध के कारण न हुआ, अपितु तैम घाटी के निवासियों के कारण तैम घाटी बालबेक जिले से संलग्न थी और उसमें नौसेरी, ड्रूज और मेजियन रहते थे। उनके वीर नेता दोहक ने भाई और जन्दल के पुत्र बराक की मौत का बदला लेने के लिए उसे जिन्दा जला दिया। जन्दल को हत्या हशीशिनों ने की थी। बहराम के आदेश पर उसने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने देश की घाटी के योद्धाओं को संगठित किया। उसे दमिश्क और आस-पास के क्षेत्रों से भी सहायता मिली। बहराम अपने इस्माईलियों का सरदार बनकर उन्हें अरक्षित स्थिति में पाकर उनपर अचानक हमला करना चाहता था, लेकिन वह उनके हाथों में जा पड़ा और तुरन्त ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। उसका सिर और उसके हाथ मिस्र लाए गए, जहां खलीफा ने लाने वाले को एक मूल्यवान् पोशाक दी और काहिरा व फोस्ताब में उनका जलूस निकाला। इस्माईली भाग निकले। तैम की घाटी से भागकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बनियास गए, जहां अभियान से पूर्व बहराम ने कमान फारस के इस्माईल को सौंप दी थी। वजीर मज्देगनी ने उससे मैत्री संधि करली, वैसे ही जैसे उसके पूर्व अधिकारी से की थी। इस्माईल ने अपनी कठपुतलियों में से एक अबुलवफा को दमिश्क भेजा। अबुलवफा का शब्दार्थ तो है निष्ठा का जनक, लेकिन वस्तुतः यह व्यक्ति धोखाधड़ी का नमूना था। अपने षड्यन्त्रों से वह न केवल दाईल कबीर (इस्माईलियों का पूर्वज) पद पाने में सफल रहा, अपितु हाकिम (जिले के मुख्य (न्यायाधीश) का पद भी।

काहिरा में ईसाई संघ के परमाधिकारी (दायलदोत) की गरिमा के साथ मुख्य न्यायाधीश (काजी अलकजात) की गरिमा को भी मिला दिया गय था। क्योंकि संघ का लक्ष्य सत्ता हथियाना था और क्योंकि इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कुछ भी उठा न रखा गया था, अबुलवफा ने धोखे के सहारे विजय और जालसाजी के सहारे बड़प्पन हासिल करने की कोशिश की। उसे अपने महत्त्वाकांक्षापूर्ण इरादों की पूर्ति के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हस्तक जहादी प्रतीत हुए, सीरिया में जिनकी शक्ति लगातार बढ़ रही थी। मुहम्मदी मत के शत्रु होने के नाते वे इस मत के सर्वाधिक खतरनाक विरोधियों के मित्र थे। जहादियों के तूफान के फलस्वरूप मुहम्मदी मत की दीवारें बाहर से हिल गयी थीं और अन्दर से ये दीवारें हशीशिनों के नास्तिकता के सिद्धान्तों से जर्जर हो गयी थीं। खतरा पैदा हो गया कि ये दीवारें शीघ्र ही गिरेंगी — निश्चित रूप से गिरेंगी। जहादियों ने नास्तिकों के साथ मिलकर प्रतिज्ञा की कि वे इन खंडहरों पर शीघ्र ही सलीब और खंजर गाड़ देंगे। अबुलवफा ने यरूशलम के शाह के साथ एक सन्धि की, जिसके अधीन उसने एक विशेष शुक्रवार के दिन दमिश्क शहर को उसके हवाले करने का वचन दिया। योजना यह थी कि जब अमीर नुसी और दरबार व सेना में उसके प्रभावशाली लोग मस्जिद में इबादत के लिए जमा हों, षड्यन्त्रकारी चारों ओर के रास्ते अन्दर से बन्द कर दें और शहर के दरवाजे ईसाइयों के लिए खोल दिये जायें। इस सेवा के बदले शाह ने तायर शहर उसके कब्जे में देने का वचन दिया।

प्रतीत होता है कि टैम्पलरों का प्रथम परमाधिकारी ह्यूगो डी पेयन्स यरूशलम के शाह बाल्डविन द्वितीय से यह अनुरोध करने वाला मुख्य एजेंट था कि सलीब और खंजर का यह विचित्र मिलाप हो। यह संघ अपनी स्थापना के दस वर्ष तक धुंधलके में रहा। ईसाइयत के तीन आम सिद्धान्तों निर्धनता, पवित्रता और आज्ञाकारिता को निभाने के वचन पूर्ण करने के अतिरिक्त चौथे सिद्धान्त तीर्थयात्रियों की रक्षा का भी पालन करता रहा, लेकिन दस वर्ष तक वह एक प्राइवेट सोसायटी के रूप में ही काम करता रहा। उसके पास न तो कानून थे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और न शाही पोशाक।

सेंट बर्नार्ड द्वारा बनाई गई और पोप आनरिस प्रथम द्वारा पुष्ट की गई नियमसंहिता द्वारा यह संघ एक भव्य और शक्तिशाली क्षात्रधर्मी संघ बन गया, जो पवित्र मकबरे और तीर्थयात्रियों की रक्षा करने लगा। मिरास के कथनानुसार इसके सदस्यों में सरदार, श्रीमान् और धर्मसंघी शामिल थे, जो इस्माईलियों के रफीकों, फदावियों और लसीकों के समकक्ष थे। इन्हें पूर्वज, परमपूर्वज और परमाधिकारी भी कहा जा सकता है। पर्वत पर दिए गए उपदेश की भाषा में इन्हें दाई, दाई अलकबीर और शेख भी कहा जा सकता है। जसे रफीक सफेद वस्त्र पहनते थे और उन पर लाल रंग का राजचिह्न लगाते थे, इसी प्रकार सरदार सफेद ताज पहनते थे, जिन पर लाल सलीब चिह्नित होता था। जैसे एशिया में हशीशिनों के किले खड़े हुए, वैसे ही यूरोप में टैम्पलरों के अस्पताल खड़े हुए।

इसी वर्ष परमाधिकारी ह्यगो यरूशलम आया। उसके साथ सरदारों और तीर्थयात्रियों का विशाल परिकथा, जिन्होंने उसके कहने पर पवित्र मकबरे की रक्षा के लिए सलीब और शस्त्रास्त्र धारण किए। तुरन्त फैसला किया गया कि दमिश्क पर घेरा डाल दिया जाये। भयानक तुग्तगीन के देहान्त के बाद, जो कुछ ही दिन पूर्व हुआ था, उसका पुत्र ताजुलमुल्क उसका उत्तराधिकारी बना। उसके नाम पर वजीर ताहिर-बिन-साद ने सर्वोच्च सत्ता का उपभोग किया। उसकी मार्फत इस्माईलियों के मुखियाओं ने सत्ता भोगी — पहले योद्धा बहराम ने और उसके बाद न्यायाधीश अबुलवफा ने। अबुलवफा के साथ हुए समझौते में ही तायर के बदले दमिश्क का विश्वासघाती आत्मसमर्पण हुआ।

ताजुलमुल्क बुरी को समय पर ही इस्माईलियों के इरादों का पता चल गया। फलस्वरूप उसने साद के पुत्र अपने वजीर की हत्या करवा दी और उसके बाद संघ के जितने भी लोग शहर में थे, उन सब के कत्ले आम का हुक्म दे दिया। छह हजार व्यक्ति तलवार से मौत के घाट उतार दिए गए। इस प्रकार खंजर के शिकार हुए लोगों का बदला ले लिया गया। यह मृत्युदण्ड न था अपितु अन्धाधुंध नरसंहार था। इसी बीच एक विशाल ईसाई सेना, जिसे इस बात का विश्वास था कि शहर के आत्मसमर्पण का वचन दिया जा चुका है, दमिश्क जाने वाली सड़क पर मर्ज सफर तक बढ़ गई। उसमें पश्चिम के अनेक तीर्थयात्रियों के अतिरिक्त यरूशलम के सम्राट् और सामन्त भी थे। उनके साथ उनके साथी ऐंटियोक के राजकुमार बर्नार्ड, पाण्टियस, त्रिपोली के काउंट और एडेसा के जोसलीन थे। इनके साथ अनेक सरदार और श्रीमान् भी थे। ब्यूरिस के सिपाही विलियम की कमान में एक हजार सरदारों की यह सेना गांवों को लूटने और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भोज्य सामग्री जमा करने गए थे। लेकिन जैसा तीर्थयात्रियों की सेना के साथ आमतौर पर होता है, वे बिना व्यवस्था और अनुशासन के आगे बढ़ रहे थे। परिणाम यह हुआ कि दमिश्क के कुछ वीर योद्धाओं के छोटे-से दल ने आक्रमण करके उसे करीब-करीब पूरी तरह नष्ट कर दिया। शेष ने ज्यों ही सुना कि उनके भाइयों की अपमानजनक पराजय हुई है, उन्होंने तुरन्त हथियार उठा लिये और तुरन्त ही दमिश्कवासियों आक्रमण कर दिया। उनका उद्देश्य का ईसाई सेना पर लगे धब्बे को अपने खून से धोना। तब भयानक अन्धकार छा गया। बीच-बीच में बिजली की रोशनी चमकती थी और तूफान की चीख-चिल्लाहट सुनाई देती थी। बिजली की कड़क के बीच स्वर्ग के जल प्रपातों ने वर्षा की और सड़कों को जलमग्न कर दिया। तभी अकस्मात् मानो ऋतुओं का क्रम बदल गया—मानो गरमी और सर्दी एक साथ पूरी तीव्रता से आ गई हों। वर्षा और बाढ़ का स्थान हिमपात और ओला वृष्टि ने ले लिया। वातावरण में तेजी से आये ये परिवर्तन और मौसम में एक अति से दूसरी अति तक का आकस्मिक हेर-फेर उन देशों में दुर्लभ नहीं, लेकिन अनुभवहीन घुमन्तू प्रकृति के इस असाधारण दृश्य से इससे चकित प्रस्तुत पुस्तक के लेखक ने अपनी यात्राओं में एक से अधिक बार मार्मरिस के दर्रे में इस बात को अनुभव किया है—अत्यन्त पवित्र रूप में—वैसे ही जैसे ब्रिटिश नाविक बेड़े और कब्जा करने वाली मिस्री सेना ने। रात ढलते ही घने बादलों के कारण अन्धकार हो गया। बादलों और चट्टानों से निकली वर्षा की बौछारों ने हथियारों और तम्बुओं को बहा दिया। तूफान की चीख-चिल्लाहट और बिजली के शोर ने मुसीबत में पड़े जहाजों के भोंपुओं की आवाज को डुबो दिया—जो अपने लंगरों से जा रहे थे। रात भर चलने वाले और प्रातःकाल तक मद्धिम पड़ जाने वाले तूफान के समाप्त होने पर नवोदित उषःकाल में पता चला कि तूफान के कारण मस्तूलों के टुकड़े-टुकड़े हो गए हैं और बिजली गिरने से चट्टानें चकनाचूर हो गयी हैं और बर्फ की बड़ी मात्रा से ढकी गई हैं।

गॉलों की सेना को भी, जिसने प्राचीन काल में ब्रेनस के नेतृत्व में डेलफी के मन्दिर को लूटा था, इसी प्रकार के मौसमों के संघर्ष व परिवर्तन एवं समानरूप से उग्र तूफान का सामना करना पड़ा था। और जैसा तब हुआ था, इन प्राकृतिक दृश्यों को गॉलों की धर्म विरोधी धारण के दैवी दण्ड का प्रतीक समझा गया था। इसी प्रकार जहादियों द्वारा उन्हें उनके गुनाहों व बाद में हशीशिनों के साथ उनके मेल पर बहिश्त के गुस्से का निशान समझा गया था, जिसकी पुष्टि खून और जालसाजी से हो सकती थी। पवित्रता और अपवित्रता के इस राक्षसी मेल से उन्हें केवल यही लाभ हुआ कि बनियास के किले पर उनका कब्जा हो गया, जिसे सेनापति इस्माईल ने इस भय से कि कहीं उसका भी वही हाल न हो, जो दमिश्क

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के उसके भाइयों का हुआ, उसी वर्ष सरदार रेनियर डी ब्रूस के हवाले कर दिया, जिस वर्ष अलामुत के किले ने सुलतान महमूद के समक्ष आत्म समर्पण किया था। इस प्रकार एक ही समय फारस और सीरिया में संघ के दो किलों का पतन हुआ और उसके पूर्ण उन्मूलन का खतरा पैदा हो गया।

इस सबके बावजूद साहस की दृढ़ भावना घटनाओं की अशोभनीयता पर हावी हो गई। अलामुत और बनियास दोनों किले अपने भूतपूर्व काबिजों के पास वापस आ गए। बनियास पर इस्माईल ने तीन वर्ष बाद दुबारा कब्जा कर लिया, जबकि रेनियर डी ब्रूस और उसकी सेना ने जोपा और यरूशलम के सम्राट् के समक्ष आत्मसमर्पण किया। जो बन्दी बनाकर ले जाये गये, उनमें रेनियर को अपनी प्रिय पत्नी से हाथ धोना पड़ा, जिसे उसने इस्माईल के साथ एक सन्धि में प्रेमपूर्वक प्राप्त किया था, लेकिन बाद में यह पता चलने पर छोड़ दिया था कि उसने न तो काफिरों के बीच अपनी वफादारी कायम रखी और न नापाक लोगों में अपनी इज्जत संभाले रखी। उसने अपना गुनाह कबूल कर लिया और वह यरूशलम के एक मठ में चली गई, जहां भक्त स्त्रियां रहती थीं।

इस्माईलियों के इरादों को तलवार के जोर पर जितनी कम सफलता मिलती थी, खंजर के जोर पर वे उतने ही अधिक सफल और दृढ़निश्चयी होते थे। संघ के लिए वक्त कितना भी खतरनाक क्यों न रहा हो, उसके शक्तिशाली शत्रुओं के लिए वक्त कुछ कम खराब न था। किया बुजुर्ग उम्मीद के परमाधिकारी रहते जो अनेक महान् और प्रतिष्ठित व्यक्ति उसके फदावियों के खंजर के शिकार हुए थे, उन्होंने उसके शासन काल के इतिहास को रक्तरंजित बनाया और पहले की तरह प्राचीन इतिहास लेखकों के प्रचलन के अनुकूल ऐसा होता है कि शासक के शासनकाल के अन्त में महान् राजनेताओं, जनरलों और साहित्यकारों की एक सूची मिलती है, जिन्होंने या तो अपने जीवनों से इस शासनकाल को सुशोभित किया अथवा अपनी मृत्यु से क्षुब्ध किया। इसी प्रकार हशीशिनों के जो सब कौमों के उन प्रतिष्ठित लोगों की ऐतिहासिक गणना मिलती है, इतिहास में इस्माईलियों के शिकार होकर हत्यारों की खुशी और दुनिया की गमी के कारण बने। किया बुजुर्ग उम्मीद के परमाधिकारी रहते इस प्रकार का प्रथम व्यक्ति कासिमुद्दौलत अक्सोंकर बोर्शी था। यह मोसल का बहादुर शाहजादा था। जहादी और हशीशिन दोनों इससे समान रूप से डरते थे। दोनों इसे अपने सर्वाधिक भयानक शत्रुओं में गिनते थे। मारा मसरीन में कासिमुद्दौलत की बुजुर्ग उम्मीद के साथ आखिरी लड़ाई के बाद के प्रथम रविवार को जब वह लौटा, तब आठ हशीशिनों ने उस पर हमला किया। हमलावरों ने दरवेश का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेश धारण कर रखा था। हमला तब हुआ, जब कासिमुद्दौलत मोसल की मस्जिद में अपनी गद्दी पर बैठ रहा था। उसने ढाल और अपनी सहज वीरता के बल पर अपनी रक्षा की। उसने तीन शत्रुओं को अपने पैरों तले दबोच लिया, लेकिन पूर्व इसके कि उसके रक्षक उसकी सहायता के लिए पहुंचें, उस पर घातक प्रहार किया गया, जिसके फलस्वरूप उसकी उसी दिन मृत्यु हो गई। शेप हशीशिन जनता की प्रतिशोध भावना का शिकार हो गए। केवल इरास के समीपवर्ती पर्वतों में स्थित कटारनाश गांव का एक युवक बच पाया, जिसकी माता ने जब कासिमुद्दौलत की मृत्यु का समाचार सुना, तो इस चेष्टा के परिणाम पर अपना हर्ष प्रकट करने के लिए उसने अच्छे वस्त्र पहने और अपने आपको सजाया-संवारा, लेकिन जब कासिमुद्दौलत अकेला लौटा, तब उसने अत्यन्त शोक के साथ अपने बाल काट डाले, अपना मुंह काला कर लिया—यह सोचकर कि हत्यारों की सम्मानजनक मृत्यु उसके पुत्र को भी क्यों प्राप्त न हुई। हशीशिनों को अपनी प्रतिष्ठा का इतना अधिक ध्यान था और आप उन्हें इतना कठोर समझ सकते हैं।

सुलतान सन्दजार के वजीर मुईनुद्दीन की भी एक हशीशिन द्वारा हत्या कर दी गई, जिसे उसके शत्रु दर्कसीना ने भाड़े पर खरीदा था। दर्कसीना मुहम्मद का वजीर था और इस्माईलियों का मित्र था। अपने लक्ष्य को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए यह गुंडा भंगी बनकर उसकी नौकरी करने लगा। एक दिन वजीर अपने घोड़ों के निरीक्षण के लिए अस्तबल में गया, तो यह बनावटी भंगी निर्वसन होकर उसके सामने आ गया, ताकि इस बात का सन्देह ही न रहे कि उसके पास छिपाकर रखे गए हथियार हों, यद्यपि उसने अपना खंजर घोड़े के अयाल में छिपा रखा था, जिसकी लगाम उसके हाथ में थी। घोड़ा पिछले पैरों के बल पर खड़ा हो गया और उसे पुचकार कर चुप करने के बहाने उसने अपना खंजर झपट लिया और वजीर को घोंप दिया।

यदि मुसल का शहजादा बूर्शी केवल इसलिए इस्माईलियों के शिकार होने वाले लोगों की सूची में था, क्योंकि उनकी सत्ता का प्रतिद्वन्द्वी था और उनके बड़प्पन के रास्ते में रुकावट था, तो हमें आश्चर्य न होना चाहिए कि हम दमिश्क के शहजादे बूसी का नाम इस सूची में पाते हैं, जिसके आदेश पर वजीर मज्देगनी और है, छह हजार हशीशिनों की हत्या की गई थी। जरा-सा भी बहाना इस बात के लिए काफी था कि शहजादों का खून कटारियों से बह जाये—विशेष कर तब जब उनका स्वार्थ बदले की मांग करे, जैसा प्रस्तुत मामलों में से पश्चादवर्ती मामले में हुआ। किसी दुनियादार की इतनी शक्ति न थी कि बच निकले, क्योंकि वे वर्षों से समय, स्थान और अवसर की प्रतीक्षा में थे। तुग्तगीन के पुत्र बूर्शी पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नरसंहार के बाद दूसरे वर्ष में बदला लेने वालों ने आक्रमण किया। उसे दो घाव लगे, जिनमें से एक वो तुरन्त ठीक हो गया, लेकिन दूसरा अगले वर्ष घातक सिद्ध हुआ।

ऐसा लगता है कि हशीशिनों का प्रतिशोध पिता से पुत्र पर आता था। बुसी का पुत्र और तुग्तगीन का पौत्र शम्स-उल-मुल्क षड्यन्त्र के शिकार हो गए। उनके अतिरिक्त संघ के छुरों के शिकार होने वाले अन्य लोग थे पूर्व और पश्चिम के न्यायाधीश अबू सईद हरवी, कास्विन का मुफ्ती हसन-बिन-अबुलकासिम, इस्फहान का रईस सईद दौलत शाह और तब्रीस का रईस। ये अनेक राज्याधिकारियों और न्यायविदों में सर्वाधिक प्रतिष्ठित थे, जो ढेरों के हिसाब से कालकवलित हुए और जिनका नाम भी कोई न जान पाया। कत्ल किए गए लोगों में से सर्वोत्कृष्ट लोगों का उल्लेख करना हशीशिनों के इतिहास लेखकों का शोकपूर्ण और कष्टदायक कर्त्तव्य है।

अभी तक वे वजीरों और अमीरों पर ही हमले करते रहे थे। जो खलीफा की सत्ता और स्वयं तख्त के अधीनस्थ हस्तक थे, जिसे वे ध्वस्त करना चाहते थे, वे सत्तासीनों के रक्त से अनभिषिक्त ही रहे। लेकिन अब वह समय आ गया था, जब संघ ने उनके सिद्धान्त को उन खलीफाओं के खून से सील बन्द करने का फैसला किया, जिनके लिए यह इतना विध्वंसकारी था। यह भी फैसला किया गया कि पैगम्बर के उत्तराधिकारियों को न केवल उनकी मजहबी सत्ता से वंचित कर दिया जाए, अपितु उन्हें उनके जीवन से भी वंचित कर दिया जाए। खलीफा अपने बारे में कहते थे कि वे पृथ्वी पर भगवान् की छाया हैं। लेकिन वस्तुतः वे केवल भौतिक सत्ता की छाया थे और जब भी वे अपनी बात जोर देकर कहते थे, हशीशिनों का छुरा उन्हें अर्श से फर्श पर ले आता था।

हमने देखा कि इस्माईलियों का गुप्त सिद्धान्त अपना मूल काहिरा की शाखा से बताता था। उस समय हशीशिनों के संघ की बुनियाद रखे जाने से बहुत पहले की बात है। फातिमियों के संरक्षण में यह गुप्त सिद्धान्त फूला-फला। फातिमी हशीशिनों के प्रतिद्वन्द्वी थे और तख्त के लिए उनके प्रतियोगी थे। उचित प्रतिशोध के रूप में स्वयं फातिमियों के अधर्म और अनैतिकता के इस संरक्षण का बदला लिया गया—उसी हत्यारे संघ द्वारा, जो उसी से निकला था। मिस्री खलीफा अमीर बिया कामिल्ला अबूअली मंसूर का, जो फातिमी वंश में दसवां था, अपने शासन के उनतीसवें वर्ष में हशीशिन के छुरे से देहान्त हो गया। (फातिमी वंश के संस्थापक उबैदुल्ला ने गुप्त सिद्धान्त की शाखा को अपनी दरबारी नीति का एक अंग बना लिया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह बात स्पष्ट नहीं कि आया उसकी मृत्यु संघ की नीति के कारण हुई अथवा शक्तिशाली वजीर अफजल के परिवार के निजी प्रतिशोध के कारण। जिस उत्साह से इस अमीर ने लड़ाई लड़ी, उससे लगता है कि वह ईसाइयों के लिए भी समान रूप से खतरनाक था। राज्य में अपनी व्यापक शक्ति के कारण वह खलीफा के लिए तो खतरनाक था ही। दो हशीशिनों ने उसकी हत्या कर दी। उस समय उन हत्यारे हशीशिनों के बारे में यह बात पक्की न थी कि वे अपने वरिष्ठों के हस्तक थे (जिनकी जिहादियों से सांठ-गांठ थी) अथवा वे खलीफा के भाड़े के आदमी थे। परिस्थितियों से दूसरी बात सम्भव है, क्योंकि उसकी हत्या के तुरन्त बाद अफजल के पुत्र अबूअली को जेल में डाल दिया गया और खलीफा की हत्या के बाद मुक्त किए जाने पर उसे उसके पिता की प्रतिष्ठा मिल गई। लेकिन क्योंकि अबूअली स्वयं कुछ समय बाद छुरे का शिकार हो गया, ऐसा लगता है कि ये दोनों हत्याएं गुप्त प्रोत्साहकों की गहरी नीति का परिणाम थीं। इस समय से मिस्र अव्यवस्था और गड़बड़ का क्षेत्र हो गया और वहां काहिरा और बगदाद के खलीफों के तख्तों के पक्षधरों के बीच हिंसात्मक मुठभेड़ें होने लगीं। मुस्तअरशदबिल्ला-अबू-मंसूर फजल, जो अब्बासी खलीफों में नवां था, सत्रह वर्ष तक खलीफा बना रहा, यद्यपि उसका तख्त लगातार डगमगाता रहा। इसके बाद सेल्जुकी सुलतानों ने, जिन्होंने बगदाद की खिलाफत के रक्षक होने के बहाने सारी मजहबी सत्ता हथिया रखी थी, कम से कम अब्बासी खलीफा के लिए इस्लामवाद के दो उच्चतम विशेषाधिकार छोड़ रखे थे—खजाना और शुक्रवार के दिन मिम्बर से इबादत करने के विशेषाधिकार। यदि वे किसी सिक्के पर मुहर लगाते थे, तो वह खलीफा के नाम पर होती थी। इसी प्रकार वे उसके लिए मस्जिदों में साप्ताहिक प्रार्थनाएं किया करते थे। शुक्रवार के दिन की जाने वाली इन प्रार्थनाओं के लिए खातिबों की नियुक्ति मसूद के नाम से होने लगी। पहली बार ऐसा हुआ। न चाहकर भी मुस्तअरशद को यह चोट सहन करनी पड़ी, क्योंकि वह इतना शक्तिशाली न था कि इस पर अपना रोष प्रकट कर सके, लेकिन कुछ वर्ष [illegible] जब कुछ असन्तुष्ट सरदार अपने सैनिकों के साथ मसूद को छोड़कर मुस्त[illegible] जा मिले, तब उन्होंने मुस्तअरशद को इस बात के लिए राजी कर लि[illegible]लतान को अपने अधीन करना सरल होगा। फलस्वरूप मसूद मुस्तअर[illegible]विरुद्ध मैदान में आ गया। प्रथम मुठभेड़ में ही खलीफा के सैनिकों के बड़े भाग ने उसका साथ छोड़ दिया और मसूद ने उसे बन्दी बना लिया। वह उसे मरागा ले गया। वह अपने भतीजे दाऊद के विरुद्ध अभियान पर वहां जा रहा था।

एक सन्धि की गई, जिसके अन्तर्गत खलीफा ने वचन दिया कि वह अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपको बगदाद की दीवारों के अन्दर सीमित रखेगा और सुलतान को वार्षिक कर देगा। इस गठबन्धन ने इस्माईलियों की आशाओं को धोखा दिया, जिन्हें आशा थी कि सुलतान और खलीफा के बीच यह युद्ध खलीफा के लिए विनाशकारी होगा। फलस्वरूप परमाधिकारी ने फैसला किया कि जो कार्य प्रारम्भ किया है, उसे पूर्ण किया जाये और यद्यपि खलीफा तलवार से बच निकला है, छुरे से न बचने दिया जाये। मरागा से दो फरसांग दूर शिविर में जब मसूद अनुपस्थित था (वह संदजार के राजदूतों से मिलने गया हुआ था) हशीशिनों ने खलीफा और उसके साथी परिजनों को मौत के घाट उतार दिया। अपने इस कुकृत्य से सन्तुष्ट न होकर उन्होंने अत्यन्त भयानक ढंग से शव के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। उनके नाक और कान काट डाले। मतलब यह कि उनके साथ वैसा ही सलूक किया, जैसा वे खलीफा की हत्या करने वाले राजद्रोही के साथ करते। उन्होंने शव का निरादर किया।

किया बुजुर्ग उम्मीद के पुत्र मुहम्मद का शासनकाल

जब किया बुजुर्ग उम्मीद के रक्तरंजित शासनकाल को चौदह वर्ष और तीन दिन बीत गए, तब उसने अपने पुत्र मुहम्मद को संघ के परमाधिकारी के रूप में अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया—या तो इसलिए कि उसे इस पद के लिए कोई अन्य योग्य व्यक्ति न मिला—या इसलिए कि सम्प्रभुता को अपने परिवार में आनुवंशिक बनाने की उसकी स्वाभाविक इच्छा ने उसे इस बात के लिए प्रेरित किया कि वह संघ के बुनियादी सिद्धान्तों की भावना से हट जाये—उस रूप में जिस रूप में ये सिद्धान्त हसन साबा द्वारा निर्धारित किए गए थे। कुछ भी हो, उनकी नजर सत्ता पर थी, जो रिश्तेदारी का विचार किए बिना पदारूढ़ परमाधिकारी की नामजदगी पर निर्भर करनी चाहिए थी, संघ के पतन के समय तक बुजुर्ग उम्मीद के परिवार में वंशागत रूप में चली आई। पहले पहल उसकी मृत्यु से इस्माईलियों के शत्रुओं को बहुत प्रसन्नता हुई। लेकिन जब उन्होंने देखा कि उसके पुत्र ने अपनी अविराम महत्त्वाकांक्षा का रथ अपने पिता की पगडण्डी पर डाल दिया है, तब सारे एशिया में निराशा छा गई। उसके पिता ने राजहत्या से इतिश्री की थी, उसने राजहत्या से प्रारम्भ किया और पूर्व इसके कि इस्लाम के अनुयायियों को इस सन्त्रास से संभलने का मौका मिले, जिससे वे खलीफा मोस्त अरशद की हत्या से अभिभूत हो गये थे, वे उसके उत्तराधिकारी रशीद के हश्र की जानकारी प्राप्त करके अत्यन्त भयभीत हो गए। संघ को आशा थी कि मोस्त अरशद की भयानक मौत के फलस्वरूप वे खिलाफत में अफरातफरी पैदा कर देंगे, जिसके फलस्वरूप इसका पतन हो जायेगा। लेकिन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
आशा फलीभूत न हुई और खाली राजगद्दी पर बैठने के तुरन्त बाद ही और पूर्व इसके कि वह इस पर बैठे और अपने पिता के हत्यारों से बदला लेने पर विचार करे, नए परमाधिकारी ने फैसला कर लिया कि उसके पिता ने जहां समाप्त किया था, वह वहां से प्रारम्भ करेगा और एक के बाद दूसरी हत्या करेगा, एक के बाद दूसरा अपराध करेगा और राजद्रोह में राजहत्या को भी शामिल कर लेगा।

खलीफा रमजान से इस्फहान चला गया, जहां उसने बीमारी के आक्रमण से आरोग्य लाभ करना प्रारम्भ ही किया था। खुरासान निवासी चार हशीशिनों ने जो उसके परिवार में सम्मिलित हो गए थे, उसके तम्बू में छिपकर प्रविष्ट होने का अवसर खोजा और उसे कटारी घोंप दी। जहां वह गिरा था, उसे वहीं दफना दिया गया और उसने इस्माईलियों के विरुद्ध अभियान की खातिर बगदाद से जो सैनिक जमा किए थे, वे तितर-बितर हो गए। जब इस सफल नृशंसता और असफल अभियान का समाचार परमाधिकारी के निवास स्थान अलामुत पहुंचा, तुरन्त सार्वजनिक समारोह किए गए और खुशियां मनाई गयीं। सात दिन और सात रातें किले की बुर्ज से नगाड़ों और तुरहियों की आवाजें आती रहीं, जिससे आसपास के किलों को अपराध की खुशी और हत्या की सफलता की सूचना मिलती रही। यहां हम मीरखंद का एक मुहावरा इस्तेमाल करते हुए कहेंगे कि जो घटनाएं हुईं, उनका प्रमाण उतना ही चुभने वाला था, जितना खंजर। फलस्वरूप उनके दावे संशय की पहुंच से बाहर हो गए और उन्होंने उनके विरोधियों पर कब्र की खामोशी तारी कर दी।

एक आतंक ने, जिसका आधार पक्का था, अब बांस के वंश के खलीफों को ग्रस लिया। इस घटना के बाद उन्होंने जनता में अपनी शक्ल दिखानी बन्द कर दी। सैनिकों के रूप में रफीक और फिदानी सारे एशिया में फैल गए और उन्होंने पृथ्वी का मुंह काला कर दिया। जिन किलों पर उनका अधिकार था, उन पर अधिकार बना रहा। उन्हें मजबूत बनाया गया। नए किले बनाए गए या खरीदे गए। इस प्रकार उन्होंने सीरिया में कदमोस, कहाफ और मसीयत पर अधिकार कर लिया। इनमें ये प्रथम दो इब्न इमून ने उन्हें बेचे थे। तीसरा किला उन्होंने शीजर के सरदारों के सेनापति से छीन लिया। इसे उन्होंने सीरियाई सत्ता का केन्द्र बना दिया, जहां इसके चिन्ह अब भी मिलते हैं। जबकि संघ इस प्रकार स्वार्थ सिद्धि में लगा था और किलों पर अधिकार करके न छुरे का इस्तेमाल करके अपने शत्रुओं को आतंकित कर रहा था, जिस बुनियादी सिद्धान्त ने दीक्षितों के गुप्त सिद्धान्त को जनता के सार्वजनिक सिद्धान्तों से इस पूर्णता से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
अलग कर दिया था, उसका अक्षरशः पालन किया गया। मुहम्मदी मत के आदेशों का जितनी कड़ाई से पालन किया गया, वरिष्ठ लोग अपने आपको विश्वास और नैतिकता के मामले में उतना ही बेपरवाह रखने लगे। जनता ने केवल उनकी भयानक शक्ति का प्रभाव देखा—उसकी संचालिका शक्ति अथवा उसके हस्तकों को न देखा। कटारियों के विभिन्न शिकारों में उन्होंने संघ और मजहब के शत्रुओं को देखा और यह माना कि बहिश्त में बैठे हुए खुदा ने गुप्त ट्रिब्यूनल के बाजुओं से यह सब करवाया। परमाधिकारी, उसके मठाध्यक्षों और दूतों ने अपने नाम से सम्प्रभुता का प्रचार न किया, न ही अपने संघ के नाम से। उन्होंने यह प्रचार अदृश्य इमाम के नाम से किया। अपने आपको वे उसका सन्देश वाहक बताते थे और उसके बारे में कहते थे कि किसी भावी समय वह विजेता की शक्ति के साथ पृथ्वी के आधिपत्य पर अपना अधिकार जताने आयेगा। उनका सिद्धान्त गहनतम रहस्य के पर्दे में छिपा था और प्रकटतः इसके समर्थक केवल इस्लामवाद के धार्मिक अनुष्ठानों के कट्टर पालक-मात्र ही थे। इसका प्रमाण उस उत्तर से मिलता है, जो सुलतान सन्दजार के दूत को दिया गया, जिसे इस्माईली सिद्धांतों के बारे में सरकारी सूचनाएं जमा करने के लिए राई से भेजा गया था। उसके वरिष्ठ अधिकारियों ने उससे कहा कि "हमारा सिद्धान्त निम्नलिखित है—हमारा परमात्मा की एकता में विश्वास है। हम केवल उसी को सच्ची बुद्धिमत्ता समझते हैं, जो पैगम्बर के शब्दों और आदेशों के अनुकूल हो। हम उनका पालन करते हैं, क्योंकि वे कुरान में दिए गए हैं। सृष्टि की रचना और अन्तिम दिन, पुरस्कार और दंड, निर्णय और पुनरुत्थान के बारे में पैगम्बर ने हमें जो शिक्षा दी है, हमारा उस पर विश्वास है। इस पर विश्वास करना आवश्यक है और किसी को इजाजत नहीं कि वह परमात्मा के आदेशों पर अपना निर्णय दे अथवा उसमें एक अक्षर का भी परिवर्तन करे। ये हमारे सम्प्रदाय के बुनियादी नियम हैं। और यदि सुलतान उन्हें सही नहीं मानता तो वह अपने किसी धर्माचार्य को इस विषय पर शास्त्रार्थ करने के लिए भेज दो।"

किया मुहम्मद के शासनकाल में, जो २५ वर्ष तक चला, उसके पिता किया बुजुर्गउम्मीद के शासनकाल में, जो १४ वर्ष तक चला और संस्थापक हसनसाबा के शासनकाल में, जो ३५ वर्ष तक चला, इस भावना से इस्लामवाद के बाह्य अनुष्ठानों का कड़ाई से पालन किया गया। लेकिन किया मुहम्मद में न तो अपने पूर्वाधिकारियों जैसी बुद्धि थी और न ही उन जैसा अनुभव था और शीघ्र ही लगने लगा कि किया बुजुर्ग उम्मीद ने अपने उत्तराधिकारी के चुनाव में आन्तरिक प्रतिभा का ध्यान रखने की बजाय रिश्तेदारी के बन्धनों का ध्यान रखकर कितनी गलती की। क्योंकि किया मुहम्मद में ज्ञान और सामर्थ्य की कमी थी,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
इसलिए लोग उसका बहुत कम सम्मान करते थे। लोगों ने अपने प्रेम का प्रवाह किया मुहम्मद से हटाकर उसके पुत्र हसन की ओर मोड़ दिया। हसन के बारे में समझा जाता था कि उसकी महान् उपलब्धियां हैं। उसने अनजान लोगों की अच्छी राय का फायदा भी उठाया—संघ के आम हित के लिए नहीं, अपितु उसकी संस्थाओं के विरुद्ध—अपनी निजी महत्त्वाकांक्षाओं की लक्ष्यपूर्ति के लिए वह गुप्त सिद्धान्त के सब रहस्यों में दीक्षित था, उसने दर्शन और इतिहास का गहरा अध्ययन कर रखा था, एक लोकप्रिय शिक्षक और व्याख्याता के रूप में वह अगली पंक्तियों में था और विदेशों में फैलाए जा रहे इस विचार को पसन्द करता था कि हसन-बिन-साबा ने उसे इमाम बनाने का वचन दिया था। संघ के साथी दिन-प्रतिदिन उसका अधिकाधिक सम्मान करने लगे और उसके आदेशों के पालन में तेजी लाने के मामले में एक दूसरे से होड़ लेने लगे।

जब किया मुहम्मद को अपने पुत्र के आचरण का पता चला और जनता के रुख का भान हुआ, तब उसने लोगों को जमा किया और अपने पुत्र की कार्रवाइयों की निन्दा करते हुए उसने कहा कि "हसन मेरा पुत्र है और मैं इमाम नहीं, अपितु उसके पूर्ववर्त्तियों में से एक हूं। जिसकी भी धारणा इसके विपरीत है, वह काफिर है।" उसके पुत्र के २५० अनुयायी मौत के घाट उतार दिए गए। अपने पिता के क्रोध से डरकर हसन ने स्वयं ही प्रबुद्ध लोगों की निन्दा करनी प्रारम्भ कर दी और निबन्ध लिखे, जिसमें उसने पक्षधरों की सम्मतियों की निन्दा की और अपने पिता की सम्मतियां जोरदार ढंग से पेश कीं। इस प्रकार अपने पाखंड से वह अपनी रक्षा करने और अपने पिता के दिमाग से सब संशय दूर करने में सफल हो गया। लेकिन क्योंकि उसे छिपकर शराब पीने की आदत थी और वह ऐसे काम भी कर डालता था, जिनके करने की मनाही थी, उसके अनुयायियों ने इन कामों में एक ऐसे व्यक्ति के लक्ष्य के नये संकेत देखे, जिसका आगमन सब निषेधात्मक आदेशों को रद्द करना था।

इस समय तक उत्तराधिकार के क्रम में परिवर्तन के फलस्वरूप सब एशियाई साम्राज्यों में क्रांति हो चुकी थी और अपने पूर्वाधिकारियों के खंडहरों पर नए राजवंश खड़े हो चुके थे। क्योंकि ईस्माइलियों का संघ सब शासकों के विरुद्ध था। और उनमें से अधिकतर उससे शत्रुता बरतते थे और क्योंकि वे सब सरकारों में हत्या और राजद्रोह का विषैला और घातक प्रभाव अनुप्राणित करते थे, उनके इतिहास का समसामयिक प्रभुताशाली राजवंशों से घनिष्ठ सम्बन्ध है और यहां एशिया के उन शासक परिवारों पर एक दृष्टि डालना अप्रासंगिक न होगा। खुराशान की सीमाओं से लेकर सीरिया के पहाड़ों तक, मजदोरमस से लेबनान तक, कैस्पियन सागर से भूमध्य सागर तक हशीशिनों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के साम्राज्य की विस्तृत शाखाएं फैली हुई थीं। उनका केन्द्र अलामुत (इराक़) में पहाड़ी किले में बैठा परमाधिकारी था।

हम एशिया के इन विस्तृत क्षत्रों पर उस-उस काल के राजनैतिक विभाजनों के अनुसार सरसरी निगाह डालेंगे। स्वाभाविक भोगोलिक क्रम से पूर्व पश्चिम की ओर बढ़ते हुए हमारी प्रगति खुरासान से प्रारम्भ होगी और सीरिया में समाप्त होगी।

खुरासान की चर्चा सबसे पहले करने का कारण न केवल इसकी भौगोलिक स्थिति और कुहिस्तान (संघ का पूर्वी परमाधिकारी कार्यालय) से इसकी अति-निकटता है, अपितु यह भी है कि यहां सुल्तान सन्दजार की सत्ता हावी थी, जिसके अधिराज्य की स्थापना उसी युग में हुई थी, जिसमें हसनसाबा के अधि-राज्य की और जिसका शासनकाल प्रथम तीन परमाधिकारियों के साथ बढ़ा था और उसके देहान्त के साथ ही समाप्त हुआ था—तृतीय परमाधिकारी किया मुहम्मद के शासनकाल के साथ।

सेल्जुकी वंश और पूर्व के सबसे बड़े सम्राटों में से एक मौजद्दीन अबुल हरेस संदजार को अपने पिता सुलतान मलिक शाह के देहान्त के बाद खुरासान के वाइसराय का पद प्राप्त हुआ। जैसा हम देख चुके हैं, सुलतान बलिकशाह का देहान्त हसनसाबा द्वारा अलामुत पर कब्जे के तुरन्त बाद हुआ। उसने बीस वर्ष तक इस प्रान्त पर अपने भाइयों बर्कियारोके और मुहम्मद के नाम पर शासन किया। जो सेल्जुक परिवार के मुखियों के नाते इराक में शासन करते रहे।

अपने भाई मुहम्मद के देहान्त पर हिजरी सन् की छठी शताब्दी के प्रथम वर्ष में सन्दजार ने उसके राज्यों पर अधिकार कर लिया। उसने अपने भतीजे महमूद के विरुद्ध जो अपने पैतृक अधिकारों पर दावा जता रहा था, युद्ध की घोषणा कर दी, उसे पराजित किया और अन्त तक कमालुद्दीन अली की दूर-दर्शिता के फलस्वरूप शान्ति सन्धि हुई, तो उसने जागीर के रूप में अपना पैतृक साम्राज्य निम्नलिखित चार शर्तों पर उसे दे दिया। प्रथम—शुक्रवार के दिन मस्जिदों में सार्वजनिक इबादत के अवसर पर सुल्तान सन्दजार का नाम महमूद से पहले लिया जाना चाहिए। (इबादत ओर खजाना इस्लाम के प्रथम-शाही विशेषाधिकार हैं।) द्वितीय—महमूद के सभागार में केवल तीन पर्दे होंगे।) सुल्तान सन्दजार के सभागार में चार पर्दे होते थे और खलीफा के सभा-गार में सात, जिन्हें उठाने के लिए हाजेब (प्रधान कंचुकी) का पद होता था। तृतीय—महल में उसके आगमन अथवा वहां से प्रस्थान के अवसर पर तुरही नहीं बजाई जानी चाहिए।

(शेष अगले अंक में)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

23 आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से बनाया हुआ
दाँतों के लिए

नुदिन प्रयोग करने से जीवनभर दांतों की प्रत्येक बीमारी
छुटकारा । दांत दर्द, मसूड़े फूलना, गरम ठंडा पानी
ना, मुख-दुर्गन्ध और पायरिया जैसी बीमारियों का एक
त्र इलाज ।

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स

महाशियां दी हट्टी (प्रा.) लि.

इण्ड. ... ीति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 539609,534093
ेमिस्ट व प्रोविज़न स्टोर्स से खरीदें ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
वेद मन्दिर पो० आ० अलीपुर दिल्ली-३६

तान (म

पंडिता राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi